सं०१९६१

राजस्थानी गंगा

अवतरण

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान
वीकानेर

पदाधिकारी — १९८४-८५

पीठाधिपति	—	श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी
पीठाध्यक्ष	—	डा० गिरिजाशंकर शर्मा
पीठ-स्थविर	—	डा० मनोहर शर्मा
पीठ-मंत्री	—	श्री दीनदयाल ओझा
व्यवस्था-मंत्री	—	श्री वैजनाथ पारीक
सहायक व्यवस्थामंत्री	—	श्री पूनमचंद स्वामी

संयोजक

(१) मुखपत्रिका अेवं समन्वय विभाग	—	डा० सत्यनारायण स्वामी
(२) लोकसाहित्य विभाग	—	डा० लक्ष्मी कमल
(३) प्रचार विभाग	—	कप्तान मोतीसिंह
(४) विज्ञान विभाग	—	प्रो० पंकज गोस्वामी
(५) प्रकाशन विभाग	—	श्री सनत्कुमार स्वामी
(६) साहित्य अेवं इतिहास विभाग	—	रिक्त
(७) कोष अेवं व्याकरण विभाग	—	रिक्त

संपादक-मंडळ

डा० गिरिजाशंकर शर्मा — डा० पुरुषोत्तमदास स्वामी
डा० नरेंद्र भानावत — डा० मनोहर शर्मा
डा० सत्यनारायण स्वामी

परामर्श-मंडळ

डा० रघुवीरसिंह, सीतामऊ — श्री चंद्रदान चारण, वीकानेर
राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, जयपुर — डा० नेमनारायण जोशी, उदयपुर
श्री रावत सारस्वत, जयपुर — श्री हजारीमल बांठिया, कानपुर
डा० नागरमल सहल, जोधपुर — डा० जयचंद्र शर्मा, वीकानेर
पं० अक्षयचंद्र शर्मा, कलकत्ता

राजस्थानी गंगा

अवतरण

प्रधान संपादक

नरेंद्र भानावत, अेम० अे०, पी-अेच० डी०

संपादक

सत्यनारायण स्वामी, अेम० अे०, पी-अेच० डी०

प्रबंध संपादक

पुरुषोत्तमदास स्वामी, अेम० अेस-सी०, अेम० अेस०

प्रकाशक

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान

बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक
सनत्कुमार स्वामी
राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान,
वसुधा, अमरसिंहपुरा, २४ गजनेर रोड,
वीकानेर (राजस्थान), ३३४००१

जनवरी, १९८५ ई०

वरस रो मोल २५.०० रु०
अवतरण प्रति रो मोल ७.०० रु०

आवरण-सज्जा
प्रा० पंकज गोस्वामी

मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स
सुगन निवास,
वीकानेर

उप-राष्ट्रपति, भारत
नई देहली
VICE-PRESIDENT
INDIA
NEW DELHI

December 22, 1984

I am glad to learn that the Second Annual Meeting of the Rajasthani Jnan Pith Sansthan, Bikaner will be held on the 2nd January, 1985. I send my best wishes on this occasion.

Sd/- R. Venkataraman

लालगढ़ पेलेस
वीकानेर

संख्या ४८५६ दिनांक १-१-१९८५

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, वीकानेर स्वर्गीय श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रो इक्यासीवो जन्म-दिन समारोह मना रैयो हैं, जाणर घणी खुसी हुयी। राजस्थानी भाषा नैं साहित्य रैं संस्थान सारू स्वामीजी वड़ो भारी योगदान दियो हो। मैं आशा करूं हूं कैं उणांरैं वतायोड़ैं मारग पर संस्थान चालर सांगोपांग उन्नति करैला। आपरैं समारोह री सफळता री कामना करूं हूं, औंर म्हारैं जोग सेवा करण नैं सदा त्यार रैसूं।

ह० करणीसिंह
(डा० करणीसिंह)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना	रचयिता	पृष्ठ संख्या
१.	मां मंदाकिनी	महाकवि स्व० पृथ्वीराज राठौड़	१
२.	गौरी ! थे हो विश्व विराट	श्री दामोदरप्रसाद शर्मा	२
३.	राजस्थानी में ब, व अर व़ रो प्रयोग	स्व० श्री नरोत्तमदास स्वामी	३
४.	धरती अर भाषा	श्री कन्हैयालाल सेठिया	११
५.	नेव़र रो रसियो वावळो	स्व० श्री सूर्यकरण पारीक	१२
६.	रूप री देवी	डा० मनोहर शर्मा	१३
७.	राम-रसायण	स्व० ठा० रामसिंह	१७
८.	जोसीजी म्हाराज	डा० नेमनारायण जोशी	१९
९.	दस दूहा	डा० महेंद्र भानावत	३६
१०.	नौकरी	स्व० श्री नाथूराम खड़गावत	३७
११.	मायड़ भाषा	डा० उदयवीर शर्मा	४०
१२.	'वरसगांठ'-लेखक री वरसगांठ	श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी	४१
१३.	मैं माटी रो दीप	श्री दीनदयाल ओझा	४४
१४.	राजस्थानी री उन्नति किण विध !	डा० नागरमल सहल	४५
१५.	तीन कविताव़ां	श्री सांव़र दइया	४८
१६.	लोकशब्दां रो सांस्कृतिक अध्ययन	श्री राव़त सारस्वत	४९
१७.	राजस्थान में धरणा देव़ण री परंपरा	डा० गिरिजाशंकर शर्मा	५५
१८.	पेपर-वे़ट	डा० नरेंद्र भानावत	६०
१९.	राग लूहर	डा० जयचंद्र शर्मा	६१
२०.	हवा अर उणरी उपयोगिता	श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी	६५
२१.	अँ कुणरा, आंरो कुण ह्वुयसी !	श्री सूर्यशंकर पारीक	७१
२२.	पोथी-विमोचन	श्री अन्नाराम 'सुदामा'	७३
२३.	बीं टैम : अबै	डा० मदन केव़ळिया	७६
२४.	ऊनी गलीचां रो निर्यात-सम्राट् बीकानेर	श्री किशनचंद बोथरा	७७
२५.	वतन रै वासतै	डा० व्रजनारायण पुरोहित	८२
२६.	गोकरण	श्री ओंकारश्री	८३
२७.	जमना	ठा० बुलाकीसिंह मोहिल	८५
२८.	जीणमाता रो गीत : अेक परिचय	डा० लक्ष्मी कमल	८९
२९.	पुस्तक-समीक्षा	—	९९
३०.	राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान समाचार	पीठमंत्री	१०३
३१.	संपादकीय	—	१०५

चित्र १. संस्थान रै प्रथम अधिवे़शन में उपस्थित केई महानुभाव़ — सामनै

२. राजस्थानी री प्रख्यात त्रिमूर्ति — प्रथम पृष्ठ रै सामनै

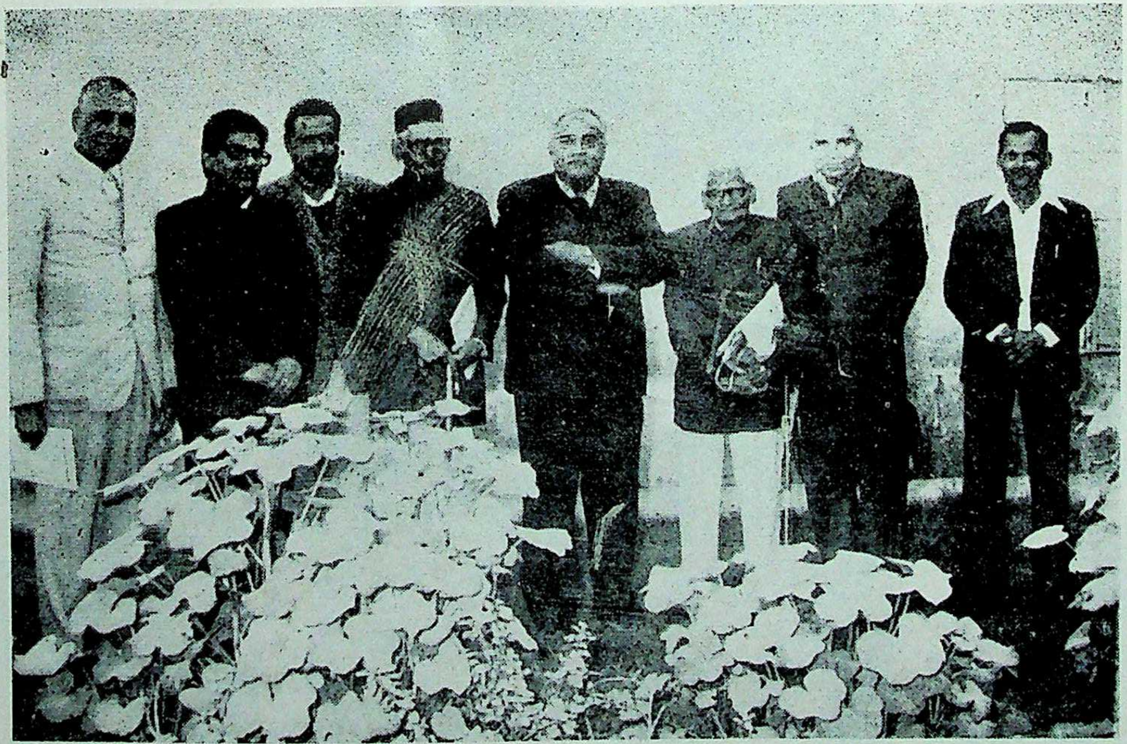

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान रै पैलड़ै वार्षिक अधिवेशन में स्मारिका-विमोचन पछै लियोड़ो अेक ग्रुपफोटो
(विवरण खातर ज्ञानपीठ-समाचार देखो ।)

प्रख्यात राजस्थानी विभूतियाँ

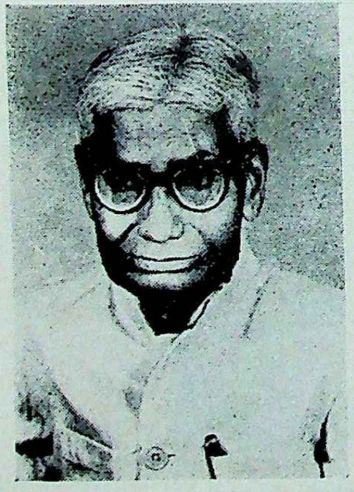

स्वर्गीय श्री नरोत्तमदास स्वामी

जन्म २ जनवरी १९०५ — निधन १३ अगस्त १९८१

स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह

जन्म २ फरवरी १९०३ — निधन ७ अक्तूबर १९७५

स्वर्गीय श्री सूर्यकरण पारीक

जन्म २ अगस्त १९०३ — निधन १६ फरवरी १९३९

राजस्थानी गंगा

अवतरण

मां मंदाकिनी

— महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ —

काया लाग्यो काट सिकलीगर सुधरै नहीं
निरमळ होय निराट तो भेटचां भागीरथी !
कीधा पाप जिकेह जनम-जनम मइं जूजुवा
तइं भांजिया तिकेह भेळा ही भागीरथी !
गंगाजळ गुटकीह निरणै ही लीधी नहीं
भव-भव में भटकीह भूत हुवा, भागीरथी !
जाळचा पुत्र जिकेह साठ सहस सागर तणा
तैं तारिया तिकेह भेळा ही भागीरथी !
थारउ अदभुत ताप मात ! संसारे मानियउ
पाणी-मुंहड़इ पाप जो तूं जाळइ जाह्नवी !
न्हाये पीयूं नीर समरूं जपतां सुरसरी
तपत वसूं तो तीर जोवंतां तो जाह्नवी !
पुळियै मग पुळियाह दरस हुवां अदरस हुवा
जळ पैठां जळियाह मंदा क्रम मंदाकिनी !
मोड़ो आयो माय तैं वेगो ही तारियो
पड़ियो रहसूं पाय भाठो हुय भागीरथी !

—

गौरी ! थे हो विश्व विराट

— दामोदरप्रसाद शर्मा —

कळ कीरत रा कनक कपाट
गौरी ! थे हो विश्व विराट

मनड़ो थांरो मानसरोवर प्रीत-भरचो निरमळ पाणी
पळै प्रीत रा राजहंस, इण मानस-तट पर, कल्याणी !

दया-द्रवित हो जावै हिवड़ो हेत-हिंवाळो पिघळ पड़ै
ज्यूं हिमगिर रै हिमसिखरां सूं हिमनद कोई निकळ पड़ै

झरणै सो रसराज झरै थांरै इण उन्नत आंचळ सूं
है सस्य-श्यामला वसुंधरा थांरी इण हरियल कांचळ सूं

विषुवत रेखा-सी पड़ी मेखळा थांरी कटि रै कटिबंधां पर
सोहै वसुधा रतनां-गरभा भूगरभ-खनिज आलेखां पर

है नील गगन-सो नील वसन झळकै घण केसां री झांई
कटि रो अंतरपट लहरदार छलकै रतनाकर-परछांई

थांरी वीणा-सी वाणी सूं उदगार उठै सुरगीतां रा
है सप्तसिंधु, झणकार उठै सातूं ई स्वर संगीतां रा

थे ऋचा वेद री हो अनुपम अनुपम कुरान री बाणी हो
हो बाईबल रा दिव्य वचन गौतम-करुणा कल्याणी हो

थे पारब्रह्म री माया हो प्रकृती हो पुरुष-पुरातन री
लीलाधर री लीलावां हो शाश्वतता धरम सनातन री

थे जोत दिवाळी-सी दमको लागो होळी री झळ प्यारी
थे उपहारां सूं लड़ालूम क्रिसमस-तरु सी लागो न्यारी

थांरो दरसण भी दुरलभ है देख्यां हुवै न थांरी दीद
गौरी ! कोई किण विध मानै विना चांद नै देख्यां, ईद ?

म्हांरै हिवड़ै रा समराट
गौरी ! थे हो विश्व विराट

राजस्थानी में ब, व अर व़ रो प्रयोग

— नरोत्तमदास स्वामी —

१— राजस्थानी रै आधुनिक लेखकां में ब, व अर व़ ध्वनियां रै प्रयोग बाबत घणी अव्यवस्था देखण में आवै है। पुराणी परंपरा अर जूना हस्तलिखित ग्रंथां नै हस्तलिखित प्रलेखां री प्रथा रै विपरीत नूंवा राजस्थानी लेखक, हिंदी रै प्रभाव रै कारण राजस्थानी शब्दां में 'व' री ठौड़, विशेषकर शब्दां रै आदि 'व' री ठौड़, बराबर 'ब' लिखै है। बै वात, वादळ, वधाई, वनड़ो, वरस, वडो, वांस, वाजो, वाड़ो, वीजळी, वूढो, वीरो, वेगो, वैरी, व्यांव, वणनो, वणावणो, वितावणो, वीको, वीदावत, वीकानेर जिसा शब्दां नै बराबर बात, बादळ, बधाई, बनड़ो, बरस, बड़ो, बांस, बाजो, बाड़ो, बीजळी, बूढो, बीरो, बेगो, बैरी, ब्यांव, बणनो, बणावणो, बितावणो, बीको, बीदावत, बीकानेर लिखसी। कैवण री बात कोनी, इण भांत लिखणो अशुद्ध है।

२— व्रजभाषा अर हिंदी रै तद्भव शब्दां में संस्कृत शब्दां रै आदि 'व' री ठौड़ 'ब' हुय जावै पण राजस्थानी में इयां को हुवै नी। राजस्थानी रा पुराणा हस्तलिखित ग्रंथ अर हस्तलिखित पत्रादि प्रलेख इण रा प्रमाण है। नैणसी तथा दयाळदास री ख्यातां री हस्तप्रतियां में वीकोजी, वीदावत, वीकानेर शब्द सगळै वीकोजी, वीदावत, वीकानेर ई है, बीकोजी, बीदावत, बीकानेर कठै ई नहीं। राजस्थानी रा सुप्रसिद्ध विद्वान् डा. तैस्सितोरी इसा शब्दां नै बराबर V अक्षर सूं लिख्या है, B अक्षर सूं नहीं।

गुजराती रो राजस्थानी सूं गैरो संबंध रैयो है। लांबै अरसै तांई दोनूं अेक ई भाषा ही, गुजराती में भी इसा शब्द 'व' सूं ई लिखीजै है, 'ब' सूं नहीं। मराठी में भी इयां ई हुवै।

३— राजस्थानी में इण अशुद्ध लेखण-परंपरा रो आरंभ हिंदी रै राजस्थान में आवण रै सागै हुयो है। शिक्षा रै क्षेत्र में हिंदी रो अेकाधिकार हुय जावण रै कारण राजस्थानी रो पढणो-पढावणो बंद हुय जावण सूं शिक्षित राजस्थानियां रो अर राजस्थानी लेखकां रो संपर्क राजस्थानी सूं टूटग्यो अर बै हिंदी में ई सोचण-लिखण लागग्या। धीरै-धीरै वां हिंदी-व्रजभाषा री वर्तनी अपणाय ली अर आ अशुद्ध परंपरा जोर पकड़गी। इण वखत राजस्थानी-लेखकां माथै आ इत्ती हावी हुयगी है कै जद भी बै किणी प्राचीन राजस्थानी ग्रंथ अथवा हस्तलेख री प्रतिलिपि करण नै बैठै है जद ई बै, सपना लेवतै आदमी री तरै, इसा शब्दां नै मूळ प्रति में 'व' हुवतां

थकां भी आप री प्रतिलिपि में 'व' सूं ई लिखसी ।

४—अबै समै आयग्यो है जद राजस्थानी रा लेखक हिंदी रै अंधानुकरण रै इण भूत सूं लारो छोडावै अर मातृभाषा री प्रकृति नै पैचाणर आप री पुराणी परंपरा नै पाछी अपणावै । भेड़ां भेळी भेड़ रळार मातृभाषा नै विगाड़णो वांनै शोभै कोनी ।

राजस्थानी में आदि ब अर आदि व

१—राजस्थानी में संस्कृत सूं आयोड़ा शब्दां रै आदि में कद 'ब' रो प्रयोग हुवै अर कद 'व' रो, इण विषय में मोटा-मोटा नियम इण भांत है—

जद मूळ संस्कृत शब्द रै आदि में ब हुवै तो राजस्थानी में भी 'ब' हुवै है, अर जद मूळ संस्कृत शब्द रै आदि में 'व' हुवै तो राजस्थानी में भी 'व' हुवै ।

उदाहरण

(क) संस्कृत में 'ब', राजस्थानी में भी 'ब'—

(१) तत्सम शब्द— बक, बधिर, बर्बर, बहु, बहुधा, बंधु, बाण, बाधा, बाहु, बिंदु, बिंब, बीज (बोवण रो), बुध, बुद्ध, बुद्धि, बृहस्पति, बोध, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी ।

(२) तद्भव शब्द— बल, बळद, बंधण, बंधव, बामण, बारै (बहिर्), बाळक, बाळो, बायरो (रहित), बांध, बुगलो, बुलबुलो, बूंद, बेर-बोर (बदर), बेलफळ (बिल्व), बांधणो, बाफीजणो, बुझणो, बूझणो (बुध्य-बुज्झ), बोलणो (ब्रू, बोल्ल) ।

(ख) संस्कृत में 'व', राजस्थानी में भी 'व'[1]

(१) तत्सम शब्द— वचन, वर्णन, वन, वर, वर्षा, वंचना, वंदना, वाणी, वाद-विवाद, वांछित, विकार, विचार, विज्ञान, विदेश, विद्या, विद्वान्, विधाता, विधान, विना, विनाश, विपदा, विस्तार, वीणा, वीर, वृद्ध, वृद्धि, वैरी, व्याख्यान, व्यापार, व्यास ।

(२) तद्भव शब्द— वड़ (वट), वड़ो (वटक), वडो (वड्ड = बड़ा), वणनो, वणावणो, वतळावणो, वतावणो, वधणो, वधावणो, वधाई, वधिया, वधोतरी, वनड़ी, वरखा, वरजणो, वरतणो, वरस, वरसात, वस, (वश), वस्ती, वहली (अेक सवारी) वहू, वंशी, वाजणो, वाजो, वाट (मार्ग), वाट (बत्ती), वाड़, वाड़ी, वाड़ो, वात

---

१. राजस्थानी 'व' रो उच्चारण संस्कृत रै 'व' सूं भिन्न हुवै है । संस्कृत रै 'व' रो उच्चारण राजस्थानी रै 'व' री तरै हुवै । इण रो विवेचन आगै देखो ।

(वार्ता), वाती (वर्तिका), वाद, वादळ, वादळी, वादीलो, वायरो (हवा) वारी, वालम (वल्लभ) वाल्हो, वावड़ी, वावळो, वास, वास्ती, विकणो, विक्री, विगड़नो, विगत, विघन, विचाळै, विचावळो, विड़द, वितावणो, विलोवणो, विसारणो, विसावणो, विसूंजणो, वीच, वीज, (विदचुत), वीजणो (व्यजन), वीजळी, वीतणो, वीनती, वीरो, वीस, वींटी, वुणनो, वूठणो (वृष्ट), वूढो (वृद्ध), वेगो (शीघ्र), वेचणो, वेल (वल्लि), वेळा, वेस, वेसवार, वैण, वैद, वैसंदर (वैश्वानर) वौपार (व्यापार)।

२— इण नियम रा अपवाद भी मिलै है पण उणां री संख्या थोड़ी ई है। केई अपवाद इण भांत है—

(१) 'द्व' सूं आरंभ हुवणआळा संस्कृत शब्दां रै 'द्' रो लोप हुयग्यो हुवै तो शेष वंच्यै 'व' री जगां राजस्थानी में 'ब' हुवै। जियां—

संस्कृत	**राजस्थानी**
द्वि	बे (दो भी)
द्वितीया	बीज (दूज भी)
द्वितीयक	बीजो (दूजो भी)
द्वादशी	बारस
द्वादश	बारह
द्वार	बार (दवार भी)
द्वारभट्ट	बारहट, बारठ,
द्वारशाला	बारसाळी, बरसाळी
द्वादशाक्षरी	बारखड़ी
द्वादशोत्तर	बारोतर

इणी भांत—

बाईस, बाईसी, बत्तीस, बत्तीसी, बयांळीस, बावन, बावनी, बासठ, बहत्तर, बहत्तरी, बयांसी, बाणवै, बीड़ोतर सौ (=१०२), बारोत (किंवाड़ां रा) इत्यादि।

(२) 'ज्व' सूं आरंभ हुवणआळा संस्कृत शब्दां रै 'ज्' रो लोप हुयग्यो हुवै तो शेष वंच्यै 'व' रो राजस्थानी में 'ब' हुय जावै। जियां—

संस्कृत	**राजस्थानी**
ज्वल्	बळ(नो), जळनो भी
ज्वालय	बाळ(नो), जाळनो भी

इणी भांत बळत (=जळन), बळीतो (=ईंधन) इत्यादि ।

(३) केई दूजा अपवाद[1]—

संस्कृत	राजस्थानी
वप्ता अथवा वप्र	वाप
वंग	बंगाल
वज्रांग, वज्रांगी	बजरंग, बजरंगी इत्यादि

३- उपविश् और उपविष्ट रो 'प' राजस्थानी में 'व' हुय जावै अर भगिनी रो 'भ' विकळप सूं 'ब' हुवै है —

संस्कृत	राजस्थानी
उपविश्	बैस (णो)
उपविष्ट	बैठ (णो)
भगिनी	बहन, बैण
	भाण, भैण

४- फारसी भाषा सूं आयोड़ा शब्दां रो आदि 'ब' राजस्थानी में प्रायकर 'ब' ई रैवै है पण कदैई-कदैई उण रो 'व' उच्चारण भी सुण्यो जावै है । जियां—बारीक, बाकी, बस, बिसाती आदि रो उच्चारण वारीक, वाकी, विसाती आदि भी सुणीजै है ।

५- संस्कृत शब्द रै मध्य में आयोड़ै 'र्' सूं संयुक्त 'व', अर्थात् संस्कृत 'र्व' रो 'व' राजस्थानी में 'ब' हुय जावै । जियां—

संस्कृत	राजस्थानी
गर्व	गरब, गब्ब (कविता में)
खर्व	खरब, खड़ब
सर्व	सरब, सब
पर्व	परब
पर्वत	परबत, पब्बय (कविता में)
चर्व्	चाब (णो)

१. ओ अपवाद संदिग्ध है—बाप रो मूळ रूप वप्ता अथवा वप्र ही है, ओ निश्चय सूं कोनी कैयो जा सकै बंगाल वंग सूं ई बण्यो हुवै, ओ भी संभव है । बजरंग अर बजरंगी उच्चारण वजरंग अर वजरंगी भी सुण्यो जावै है ।

राजस्थानी पा़बासर (= मानसरोव़र) रो मूळ संस्कृत शब्द पर्वतसरस् है।

राजस्थानी में व अर व़

१— 'व' अर 'व़' में खास भेद ओ है कै 'व' घर्षक ध्व़नि है अर 'व़' अर्धस्व़र ध्व़नि। अर्धस्व़र हुव़ण रै कारण 'व़' ध्व़नि 'उ' में अर 'उ' ध्व़नि 'व़' में वदळ सकै है पण घर्षक 'व' ध्व़नि में आ वात संभव़ को हुव़ै नी। जियां—

स्व़र = सुर	चाव़ = चाउ	भव़न = भउन, भौन
ज्व़र = जुऱ	भाव़ = भाउ	पव़न = पउन, पौन, पून
स्व़र्ग = सुर्ग	घाव़ = घाउ	कव़ण = कउण, कौण, कूण
रामेश्व़र = रामेसुर	राव़ = राउ	गउरि = गव़र

पण वन रो उन, वचन रो उचन, वात रो उआत अथव़ा वीर रो उईर कोनी हुय सकै।

२— संस्कृत में अर साहित्यिक हिंदी में व अर व़ ध्व़नियां में भेद कोनी करयो जाव़ै, अर दोनूं 'व' अक्षर सूं लिखीजै है जिण रो उच्चारण 'व़' जियां करीजै है। बोलचाल री हिंदी में शब्द रै आरंभ में 'व' रो उच्चारण भी कदेई-कदेई सुण्यो जाव़ै है।

गुजराती अर मराठी में दोनूं ध्व़नियां रो न्यारो-न्यारो उच्चारण करयो जाव़ै है पण लिखण में भेद कोनी करीजै। दोनूं 'व' अक्षर सूं ई लिखीजै है।

राजस्थानी में दोनूं ध्व़नियां रो न्यारो-न्यारो उच्चारण कदेई को हुव़ै नी पण लिखण में भेद कदेई-कदेई दरसायो जाव़ै है। घणकरा लेखक लिखण में भेद कोनी करै अर दोनां नै 'व' अक्षर सूं लिखै है पण अनेक प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां में अर लेखां में दोनां सारू न्यारा-न्यारा अक्षरां रा प्रयोग मिलै है—घर्षक ध्व़नि सारू 'व' रो नै अर्धस्व़र ध्व़नि सारू विंदी आळै 'व़' रो। आज भी केई पुराणै ढंग रा लेखक इण रीत मुजब चालै है।[1]

---

१. श्री रामकरण आसोपा, सीताराम लाळस, गणपतिचंद्र भंडारी आदि राजस्थानी विद्वानां दोनूं ध्व़नियां में भेद करया है। श्री आसोपा अर श्री लाळस 'व़' सारू 'व' अक्षर तथा 'व' सारू 'ब़' अक्षर रो प्रयोग करयो है पण आ रीत प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथा रै विपरीत पड़ै है। श्री भंडारी 'व' ध्व़नि सारू 'ब़' अक्षर रो प्रयोग करयो है।

रोमन लिपि में 'व' सारू V रो अर 'व़' सारू W रो प्रयोग करीजै है।

हकीगत में दोनूं ध्वनियां न्यारी-न्यारी है इण कारण दोनां सारू न्यारा-न्यारा अक्षरां रो प्रयोग करणो ई ठीक जचै है ।

३— राजस्थानी में 'व' ध्वनि प्रायः सदा शब्द रै आदि में आवै अर 'व़' ध्वनि प्रायः सदा शब्द रै मध्य में । इण नियम रा अपवाद मिलै है पण वै संख्या में थोड़ा ई है ।

उदाहरण

(क) व अर व़— वावड़ी, वावळो, वाव़ (हवा), वावड़नो (पाछो आवणो), वाव़णो (बोव़णो), वैव़णो, (चालणो), वचाव़णो, वंचाव़णो, वंटाव़णो, वताव़णो, वतळाव़णो, विछाव़णो, विताव़णो, विलोव़णो, विसाव़णो (खरीदणो), वसाव़णो, विव़ाण (विमान), विव़रण, विव़ाह ।

(ख) व अर व़— बुलाव़णो, बैठाव़णो, बंधाव़णो, बोव़णो बेव़ड़ो (दोलड़ो, दो घड़ां रो समूह) ।

(ग) व़— गांव़, नांव़, नाव़, भाव़, राव़, चाव़, साव़ (स्व़ाद, बिलकुल), नींव़, सींव़, जीव़, पीव़, कूव़ो, धूंव़ो, नूंव़ो, कंव़र, भंव़र, मोव़न, सोव़णो, सांव़रो, दाव़ो, साव़ो, आव़णो, जाव़णो, पीव़णो, जीव़णो, दूव़णो, देव़णो, लेव़णो, सोव़णो, गमाव़णो, मनाव़णो, सुणावणो, सुव़ाव़णो ।

(घ) व— उदाहरण ऊपर आयोड़ा है ।

४— अपव़ाद— नीचै लिख्या शब्दां में व़ शब्द रै आरंभ में आवै—

(१) संयोजक अव्यय व़ा (= या) ।

(२) अन्य पुरुष रो सर्व़नाम व़ो अर उण रा रूप नै उण सूं बण्योड़ा शब्द । जियां-व़ो (वो पुरुष), व़ा (वा स्त्री), व़ै (वै), व़ै (उण), व़ठै (वठै), व़तरो (वित्तो), व़ां (उणां), व़ण–व़णां–व़णी (उण–उणां) ।

(३) केई-अेक प्रत्यय, जियां व़ाळ, व़ाळो, व़ान, व़ंत, व़ंतो, व़त, व़र, व़ार, व़ो, व़ों, व़ां–ओसव़ाळ, गाडीव़ाळो, धनव़ान, धनव़ंत, धनव़ंतो, चूंडाव़त, ताकतव़र, जिलैव़ार, करव़ो, सातव़ों, देखव़ा, सुणव़ा, पढव़ा ।

५— उपसर्ग सूं जुड़र, अथवा समास में, 'व' जद शब्द रै मध्य में आवै जद बो 'व़' हुय जावै, जियां—

(१) वाद— वि+वाद=विव़ाद, प्र+वाद=प्रव़ाद

(२) वास— नि+वास=निव़ास, प्र+वास=प्रव़ास

(३) वासो— राती+वासो = रातीव़ासो, घर+वासो = घरव़ासो

(४) वर—सरो+वर = सरोव़र, तरु+वर = तरुव़र, तरव़र।

टिप्पणी— समास में इयां जद ई हुव़ै जद दोनूं शब्द आपस में घुळ-मिल जाव़ै, अर उणां में जे अलगाव़ रो आभास हुव़ै तो दूसरै शब्द रो आदि 'व' समास में 'व़' कोनी हुवै। जियां—

(१) सोच+विचार = सोच-विचार

(२) वाद+विव़ाद = वाद-विव़ाद

ब, व अर व़ रै उच्चारण नै स्पष्ट करणआळा केई उदाहरण—

१. वाळो = १ बालक २ जळाव़ो

वाळो = १ कान रो गैणो २ पाणी रो नाळो ३ नहरू नांव़ रो रोग ४ मोड़ दो (लौटा दो)

व़ाळो = १ स्वामित्व-सूचक तद्धित प्रत्यय, जियां गाडीव़ाळो, धनव़ाळो

२ कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय, जियां जाव़णव़ाळो, देखणव़ाळो

२. व़ाळी = १ बालिका २ बाळक जिसी छोटी (जियां बाळी ऊमर) ३ जळायी (बाळ दी)

व़ाळी = १ तद्धित प्रत्यय, जियां फळव़ाळी

२ कृदंत प्रत्यय, जियां देखणव़ाळी

३. बाड़ो = १ अेक स्व़ाद, कसैलो

वाड़ो = १ वाड़ो, घेरै सूं घिरचोड़ी जमीन

२ घालो, घुसाओ

व़ाड़ो = १ तद्धित प्रत्यय, जियां अैंठव़ाड़ो

४. बाड़ी = १ कसैली

वाड़ी = १ वाटिका, २ प्रवेश करायी

व़ाड़ी = १ तद्धित प्रत्यय

५. बा = १ बा स्त्री

व़ा = १ बा स्त्री २ या, अथव़ा

वा = १ वाव़ो (जियां खेत) २ चला (जियां हळ), वा (आज्ञा रो रूप)

६. बारी = १ खिड़की २, बुहारी

वारी = १ क्रम सूं प्राप्त अव़सर २ न्यौछाव़र हुयी

वारी = १ तद्धित प्रत्यय, जियां जिम्मेवारी

७. वाई = १ बहन

वाई = १ वादी

८. बोरो = १ टाट रो वण्योड़ो थेलो

वोरो = १ महाजन, व्यवहारियो

६. बू = १ गंध

वू = १ पाणी (टाबरां री बोली में)

१०. बीज = १ दूज

वीज = १ वीजळी

राजस्थानी में ब अर व तथा व अर व़ रै प्रयोग रा नियम संक्षेप में इण भांत दिया जा सकै है—

(क) ब अर व—

१–मूळ शब्द में ब हुवै तो राजस्थानी में भी ब लिखीजसी।

२–मूळ शब्द में व हुवै तो राजस्थानी में ब कोनी लिखीजै, व ई लिखीजसी।

(ख) व अर व़—

१–शब्द रै आरंभ में आयां व लिखीजसी।

२–शब्द रै मध्य में आयां व़ लिखीजसी।

टिप्पणी— ध्यान में राखण री वात है कै ऊपर लिख्योड़ा नियम बहोत स्थूळ नियम है। उणां रा अपवाद भी दीखै है जदपि इणां अपवादां री संख्या वेसी कोनी।

—

'सेठ पूनमचंद भूतोड़िया राजस्थानी पुरस्कार' रो आभार

आप लोगां 'भूतोड़िया पुरस्कार' सूं म्हारो सत्कार करचो. इण वासतै हूं आप लोगां रो घणो-घणो आभारी हूं. हूं समझूं है कै वास्तव में ओ सत्कार म्हारो नहीं, पण माता सरस्वती और मातृभाषा राजस्थानी रो है, जिणां री सेवा में मैं म्हारा जीवण रा लारला साठ सूं ऊपर वरस गाळचा है. मनै इण वात रो घणो हरख और संतोष है कै म्हारी तुच्छ सेवां मातृ-मंदिर में स्वीकृत हुयी. ओ आप सरीखा महानुभावां और सुहृज्जनां री सद्भावना और शुभ कामनां रो ही फळ है.

—नरोत्तमदास स्वामी

धरती अर भाषा !

— कन्हैयालाल सेठिया —

जिण भाषा री जड़ धरती में
बीं में हुसी मिठास,
बा भाषा ही व्यक्त कर सकै
धरती रो हिंवळास ।

जीव़ जिनाव़र पान फूल फळ
डूंगर समदर गांव़,
माटी रो मन समझ घड़्या है
भाषा अै सै नांव़ ।

गाछ, पेड़, द्रुम, दरखत सै सूं
अेक रूंख रो बोध,
पण धरती री वणगट सारू
अै सगळा संबोध ।

कवि़ता, कहाणी, लोककथावां
गीत, निरत, चितराम,
जिसी जठै री कुदरत, बींरा
अै प्रतिमान ललाम ।

रीत–भांत, तेंवा़र, मानता
खान पान पैरान,
रितुआं री इंछ्या परगासै
भाषा इसो वि़धान ।

देह–आतमा ज्यूं धरती रो
भाषा सूं संबंध,
आंनै अळगा करणा चावै
बै मूरख मतिमंद !

—सेठिया ट्रेडिंग कं०

३, मैंगो लेन, कलकत्ता-७०० ००१

नेव़र रो रसियो वावळो

— सूर्यकरण पारीक —

नेव़र रो रसियो वावळो बाबो सदाई घाट पर बैठो रैवै पण कदैई कीं देखै कोनी ।

उणरै काना में अपछरावां रा नाच-गाणा गूंजै और उणरी आंख्यां, ओझल हुयी मां नै देखण सारू आकळ-बाकळ बछड़ी री तरै, खितिज री ओर देखती रैवै ।

कदैई वायरै में बींनै किणीरै आंचळ री फरफराट सुणीजती, तो कदैई दूर रै रूंखां री सघण डाळां सूं छण-छणर आवती किणीरै दांतां री जोत चमकती दीसती ।

पण जद बो ख़ितिज पर किणी अदीठ मुळक री सोनल रेखा देख लेवतो तो उत्सुकता रै वायुयान पर चढर बींरी दीठ बठीनै ई चली जावती ।

नेव़र रो रसियो वावळो बाबो सदाई घाट पर बैठो रैवै पण कदैई कीं देखै कोनी ।

अेक सिंझ्या रा जद गांव री गिरस्थ कन्यावां अंतिम वार घड़ा भर-भर पाछी मुड़ी जद भी वावळो उणी तरै ध्यान में मगन बैठो हो ।

बांरी पायलां री झणकार सूं जळ में जळतरंग वाज्यो अर लहरां में लहरायग्यो ।

तो ही नेव़र रै रसियै वावळै रो ध्यान कोनी टूट्यो ।

अेक दिन दिनूगै सिनान कर आवतां जातरयां वावळै बाबै नै कोनी पायो, पण उण स्थान पर दोब री खिड़की मांयसूं सिर उठायां उषा सामी अेकटक झांकती, आंसू-भरया नैण री अेक कुसुमकळी मिली ।

अर पास ई नदी री लहरां में नेव़र री अेक झणकार सुणीजी ।

—

रूप री देवी

— मनोहर शर्मा —

वात वणी पुराणी है । अेक राजा री राणी अपार रूप री धिराणी ही । संपूरण राज में इसी कोई दूजी नारी नहीं ही जिकी महाराणीजी रै रूप री बरोबरी कर सकै । राजा इण रूप री मूरत नै टोर बांधर जोवतो ही रैवतो अर उणरो मन करतो कै आ छवि कदेई उणरी आंख्यां सूं दूर नीं हुवै । राजकाज खातर महलां सूं बारै आवणो हुवतो जद भी राणीजी रो रूप राजा रै नैणां आगै दीपतो ही रैवतो ।

अेक दिन राजा आपरै मन में विचार करयो– 'इसो रूप तो कदेई किणी मिनख में परगट हुवै । ओ तो अेक तरै सूं परमानंद रो झरणो है, मृत्युलोक रो इमरत है । जे किणी उपाय सूं ओ रूप संसार में कायम राख्यो जा सकै तो मिनख-जात री अेक अणमोल अर चिर-थायी निधि वणी रैवै ।'

राजा घणो ही विचार करयो पण इसो अेक ई उपाय निजर नहीं आयो जिण सूं ओ रतन संसार में थिर रह सकै अर सदा-काळ खातर जन-साधारण नै आणंद देवतो रैवै । सेवट अेक दिन राजा गुरु महाराज आगै आपरै मन री वात परगट करी तो महाराज बोल्या—

"राजा, तूं समझदार हुयर भी आज वावळो क्यूं वण रैयो है ? संसार में ऊपरलो रूप तो मात्र धोखो है । असली सुंदरता तो मिनख रै गुणां री हुवै । साथै ई संसार रो ओ भी अटल नेम है कै दुनिया री कोई भी वस्तु सदा खातर अेकरूप नहीं रह सकै । अठै प्रत्येक पदारथ में प्रति-पळ परिवर्तन हुवतो ई रैवै, भलांई बो मिनख री निजर में नहीं आवै ।

"शरीर नाशवान है । आतमा अमर है । नाशवान शरीर सूं मन हटायर आतमा री सुंदरता माथै ध्यान देवणो ई मिनख-जमारै री सार्थकता है ।"

राजा आपरै गुरु महाराज रो प्रवचन सुण्यो । सोच्यो– आं तो बा ई वात वतायी जिकी शास्त्रां में लिख्योड़ी है अर सदा सूं मुनि-महातमा तथा संत-जन कैवता आया है । फेर भी राजा विचार करतो ई रैयो अर अेक दिन सलाह लेवण सारू राजवैदजी नै बुलाया । राजा रै मन री समस्या सुणर वैदजी बोल्या–

"महाराज ! आपरो ध्यान ऊंचो है । संसार में अेक सूं अेक घणै रूप रा मिनख

आया अर उणां रो रूप वेगो ई, समै सूं पैलां ई, लोप हुयग्यो। संयम अर नियम सूं शरीर तथा इंद्रियां री सगती नै घणै दिनां कायम राखी जा सकै है। मूळ में शरीर री आ सगती ई तो सांचली सुंदरता है। ओ ही असली रूप है।

"आ वात तो आप जाणो ही हो कै ओ संसार चिर-थायी कोनी। समै पायर सेवट इण री सगती रो अंत जरूर ई आवै। कई मिनख, जिकां नै आपां जवानी में देख्या हा, वै बुढापै में ओळखण में भी नीं आवै।

"फेर भी संयम अर नियम साधर मिनख आप री आयु रो पूरो इमरत पी सकै है अर उण नै ओ रस पीवणो ही चाहीजै, भलांई जरा अर मरण किणी सूं भी टाळचा नीं जा सकै।"

वैदजी री वात सुणर राजा मन में सोच्यो कै गुरु महाराज आतमा रो धरम परगट करचो तो वैदजी शरीर रो धरम सुणायर धरम तथा करम नै अेक ठौड़ बैठाय दिया। फेर भी राजा रो ध्यान इण विषय सूं दूर नीं हुयो। उण रो चिंतन तो अेक खास ढंग रो हो। वो राणीजी रै रूप रो इमरत सदा-काळ खातर संसार में कायम राखर मिनख मात्र नै उण रो आणंद देवणो चावै हो।

समै वीततो गयो। राजा नै आपरी मनस्या पूरी करणै रो कोई उपाय नीं मिल्यो। सेवट अेक दिन राजा आपरी वात राजकवि रै आगै परगट करी तो कविवर बोल्या–

"महाराज! मिनख रै जीवण री सार्थकता कळा-पूजा में है। कळा आतमा साथै शरीर रो धरम भी है। इण धरम रो मरम कोई जाण ही नीं पावै। वडा-वडा विद्वान इणरै संबंध में देश अर काळ मुजब अनेक भांत सूं आपरा विचार परगट करता रैया है पण कळा रो रहस्य कोई जाण नीं पायो। कळा अेकै साथै ई आणंद अर मुकती है।

"सुंदरता तो संसार में जगां जगां विखरी पड़ी है। उण रो संग्रह करणो साधारण आदमी रै वस री वात कोनी। उणनै तो कोई समर्थ कळाकार ही संचित कर सकै है।

"ध्यान राखणो चाहीजै कै जिण भांत अेक पात्र री वस्तु दूजै पात्र में राखी जा सकै है उणी भांत अेक जगां री सुंदरता दूजी जगां थापित करी जा सकै है। महा-राणीजी अेक पात्र है। उणांरो रूप दूजै पात्र मांय भी संचित करचो जा सकै है। खूबी आ है कै उणां रो शरीर भी शोभायमान ही रहसी।

"आप चिंता छोडो अर मनै निरमळ भाव सूं महाराणीजी रा दरसण करावो। पछै कळा रो कमाल देखो।"

कविवर अेक सांस में बोलता ही गया अर आप रा गुण दिखावण रो अवसर हाथ में आयो जाणर उणां रो उमाहो उफाण लेवतो सो निजर आयो।

राजा राजकवि नै आपरै महल में लेयग्यो अर उणनै महाराणीजी रै आगै ऊभो कर दियो। महाराणीजी नै भी इण वात रो कोई विरोध नीं हो। बै आपरै रूप नै भगवान रो वरदान मानता हा जिणनै लुकायर राखणो कोई जरूरी नीं हो।

महाराणीजी रो रूप देखर कवि तो अेक तरै सूं आपो ई भूलग्यो। आज तांई कवि प्रकृति नै ही सुंदरता रो मूळाधार मानतो रैयो हो पण आज उणनै अनुभव हुयो कै प्रकृति सूं ऊपर भी रूप-विधान हुवै है जिणरी महिमा और भी घणी ऊंची है।

कवि आपरै अंतर-नैणां आगै महाराणीजी रै रूप रो 'ध्यान' थापित करचो अर उणमें लीन हुयर स्तुति-सरूप काव्य-रचना करी, जाणै रस री धारा ई वैवाय दी हुवै।

राज-दरबार में कवि-मुख सूं उणरी नवीन काव्य-कृति रो पाठ करवायो गयो तो सगळा दरबारी मंत्रमुग्ध सा हुयग्या अर उणां रै प्रमोद रो कोई पार नीं रैयो।

राजा आपरै सभासदां सूं कवि री रचना पर प्रतिक्रिया पूछी तो सहज ई इण भांत जवाब मिल्यो--"महाराज! कवि री रचना में ही महाराणीजी इता रूपवान है तो भगवान री रचना में बै नीं जाणां किता घणा रूपवान हुसी! कवि-बाणी में महाराणीजी रै रूप रो रस तो है पण वो रूप परतख किण भांत हुय सकै है जिणनै कोई भी, कदैई भी देख लेवै।"

सभासदां री संमति राजा नै उचित लागी। साथै ही कवि-कृपा सूं राजा नै आपरी मनस्या पूरी करणै रो मारग भी मिलग्यो। राजा घणै मान-सनमान साथै कविवर नै विदा दी।

अब किणीनै पूछणो नहीं हो। राजा कळाकार अर्थात् मूरती वणावण री विद्या में प्रवीण सिळावट नै बुलवायो अर उणरै आगै आपरै मन री वात परगट करी तो कळाकार मुळक्यो अर इण भांत निवेदन करचो––

"महाराज! आप चिंता मत करो। मैं महाराणीजी नै तो सदा-काळ खातर कायम नीं राख सकूं पण उणांरै रूप नै चिरथायी कर सकूं हूं। आप म्हारा हाथ देखो। मैं महाराणीजी रै रूप नै उणांरी मूरत में थापित कर देसूं। पछै आ इमरत-धारा सदा-सर्वदा पिरथी पर चालती रैसी। कळा री कृपा सूं इणरो कदैई भी लोप नीं हुसी। मिनख मरणशील है पण कळा अमर है।"

कळाकार री वात सुणर राजा घणो राजी हुयो अर उणनै राजमहल में ले जायर

महाराणीजी रै आगै ऊभो कर दियो। कळाकार तो जाणै रूप री देवी रा परतख दरसण ई कर लिया। इण वखत वो राजमहल में नीं हो, वो तो कळा रै मिंदर में ऊभो हो अर उणरै आगै राजराणी नीं ही, रूप री देवी साक्षात् विराजमान ही !

रूप री देवी रो ध्यान लगायर कळाकार आपरी साधना सरू करी अर समै पायर उणरी तपस्या फळवती हुयी। कळाकार महाराणीजी नै पत्थर में मूर्तिमान कर दिया। मूरती जाणै मूंढै बोलै ही। महाराणीजी री जगां जे मूरती थापित कर दी जावै तो कोई नीं कैय सकै कै अै परतख महाराणीजी नीं हुयर उणांरी प्रतिमा है।

राजा री मनस्या पूरी हुयी। कळाकार रो घणो मान वधायो गयो। राजा राज-महल सूं न्यारो अेक नूंवो भवन वणवायो अर उण मांय महाराणीजी री मूरत वडै उछब साथै थापित करी गयी। इण कळा-मिंदर में मिनख-जायै नै आवण री छूट ही। भवन में मेळो-सा भरचो रैवतो। दूर-दूर सूं लोग दरसण खातर आवता अर आपरै नैणां सूं रूप रो इमरत पीवता।

अेक मूरती नै देखर और भी घणी ई मूरत्यां वणी। चितेरां इण री 'छवियां' त्यार करी। कवियां इणरा गीत गाया। संसार में रूप री देवी रो जयगान गूंज उठ्यो। राजा रै आणंद रो कोई पार नी रैयो।

काळ री महिमा भी अपार है। समै पायर मिनख री मूरती देवी रो रूप धारण कर लियो अर जनता पुराणी वात भूलर नूंई कथा खड़ी कर लीनी। जगां-जगां रूप री देवी रा मिंदर खड़ा हुयग्या अर उण देवालयां में देवी-पूजा हुवण लागगी। कळा रै उपासकां रो स्थान देवी रा भगतां ले लियो।

आज संसार में नां तो वै राजा-राणी है अर नां वो कळाकार, पण उणां री कळा-पूजा रो परसाद जन-साधारण में वंटतो रैवै है अर सदा वंटतो ही रैसी।

—कैलाश निकुंज, राणी बाजार, वीकानेर

राम - रसायण

— रामसिंह —

कासमीर कैलास हिमगिर सागर हेरिया
मिली कठै मीठास मुरधर थारी मोवणी
ग्यानवान नहिं किसन सम करण जिसो दानीह
जुद्धवीर अरजन जिसो धरमराज ध्यानीह
घण गरजण दामण दमक सावण लायो साथ
मन भावण आवण विना वैरण वणगी रात
झरणा झर झर यूं कहै जा रे निकमा जीव !
मैं तो परवत फोड़िया तूं क्यूं पड़चो निजीव
धोरा सारा जीवधर जाणै सो जाणेह
मेहां सूं मन ऊमगै आंधी उकळाणेह
नभ नेही, नेही पवन रज नेही जळ रेस
नर नारी नेही निखळ नेही मुरधर देस
नारी नर री जिंदगी नारी मौत कुमौत
सती हुयां संजीवणी कुळटा हुयां करोत
निरमळ वन नभजळ न्रिमळ निरमळ धरा विसेस
निरमळ नर नारी न्रिमळ निरमळ मुरधर देस
नैणां ढळक्यो नीर जोय जोय गत जगत री
भोळकियां री भीर नुगरा नर भांगै नहीं
पंखड़चां पर मोती पड़चा प्यारो आज प्रभात
लाल उषा कूंकूं लियां सुखमा लायी साथ
पंथी ! अस मग पैठ कांटा रोड़ा ज्यां नहीं
पूग्यो चाहै ठेट थाक विना निज थान नै
पावस तन पुळकै घणा हिय री मिटै हुबाड़
धूड़ नहीं, अै धोरिया प्रेम हि तणा पहाड़
पेख्यां विन कवि परख लै विग्यानी पेखै न
मोटो दोनां भेद ओ न्यारा न्यारा नैण
प्रकृति जग पैदा करै पालण बा हि कराय
फिर संहारै सगत वण ओ ही चक्र चलाय

प्रेम धरम पाळ्यो नहीं रुच्यो न रस रंग राग
विदया कळा न वीरता जलम गयो ज्यूं झाग
प्रेम नचावै मोरिया प्रेम रिझावै ढेल
प्रेम जिवावै, जी हरै विश्व प्रेम रो खेल
प्रेम-लोक ससि ऊपरां उतरचा अमरीकीह
से-देहां सुरगां गया भू आया भटकीह
फूलां रंग सुरंग ले फूंदी करै गुमान
पण सुगंध पायां विना हुवै न फूल समान
बाणी राजस्थान री बोली वीरां केर
जो वैरचां सूं जूझिया केसर वाना पैर
बाळक लीलाकार है घड़ै नयो समराज
परजा रमत्यां नै वणा वणै आप म्हाराज
मेघ बूंद पिरथी पड़ी धूळ धूसरी अंग
ऊंचै सूं नीचै गिरै उण रो ओ ही ढंग
रणबंका रजपूत वाण्या वाणज बंकड़ा
राजस्थानी पूत दुनियां में छाना नहीं
रमै चित्त तव नूर डूंगरियां वादळ रमै
रण में रमै स सूर सागर पर लहरां रमै
रीता ताल भराय वन सूका हरिया हुवै
अड़बां करो उपाय फूल झड़या फूलै नहीं
लगन प्रेम री जद लगै मन नै रंगै मजीठ
राग छिड़ै वैराग री दरसण आवै दीठ
लोल वेकळू लैरिया विखरै वणै सुरेख
पवन धोरियां प्रेम रा लिखै नवनवा लेख
सांचो वर है सांवरो दूजा वर दिन च्यार
वर लै गोविंद वीन नै बेड़ो होसी पार
सूजा री वातां सदा आवै वरवस याद
जब लग घट में जीव है घटै न सोग संवाद
सेरी सेरी स्याळ फैल करै फूल्या फिरै
केहरियां रो काळ पड़ग्यो कांई पुहुमि पर ?
सो काळो, सो सांवळो खलक अंधारो खास
हियै उजाळो जद हुवै प्रेम दीप परकास
हरख सोग मन री गती जीतै सो जीतेह
निंतर जमारो जगत में विलखंतां वीतेह

जोसीजी म्हाराज

— नेमनारायण जोशी —

जोसीजी म्हाराज समाया कांई, गांव् रो भाटो ई टूटग्यो । बांरै जीव्ता थकां, गांव् रै चौफेर जाणै बांरै नांव् री कार ई कढीज्योड़ी ही । आथूण सूं चाल्यो आव्तो फाको गांव् रै खेतां री पाकी फसलां माथै तूट नीं पड़ै, इण खातर कांकड़ री सींव् माथै मंतरयोड़ै दूध री धार दिरीजती, पण वस्ती रै चौगिरद तो जाणै आपोआप ई धार लाग्योड़ी ही । जोसीजी रो रौबदाब आठूं पोहर जाणै पोहरो देव्तो । चोर-चकार हुवो, धाड़ायती हुवो, साधू रो भेख करयां उठाईगीर हुवो, खोटी मनस्या सूं आव्णआळो ओपरो मिनख हुवो, अठै तांई कै सरकारी ओहदैदार–अहलकार हुवो, गांव् रै फळसै में पग धरतां संको खाव्तो । खेत रो रुखाळो ऊभो रैवै जितै चिड़कली री कांई मगदूर कै हेठी उतरनै बूंटां माथै बैठ जावै ! वा जाणै कै हूं बैठी नीं, अर गोफण सूं छूटयो भाठो सरणाट करतो आयोनी । आपरो जीव् कुणनै वाल्हो नीं लागै ? जोसीजी रै निठयां पछै बा वात को रैयीनी । दो-तीनेक ढालैत आगै आया जरूर बांरी ठौड़ ढाबणनै, पण पंखेरुआं नै आ पैचाण करतां जेज को लागीनी कै अै तो मातर म्हांनै डरावण सारू ऊभा करयोड़ा अड़वा है । पछै कांई हो, बै तो धापर चुगो करता अर फकत वींट करण री टैम आंरै कांधै आ बैठता ।

❀ ❀ ❀

जेठ महीनै रो आकरो भाण आभै में हाथ-खंड ऊंचो आयग्यो हो, पण रात रा आयी काळी-पीळी आंधी रै खैंखाड़ सूं आभै चढयोड़ी खंख में बो कांसै री अणमांजी थाळी सो लखावै हो । गांव् में चाणचकी सुरसुराटी पसरगी कै धाड़ायती पांच ऊंठां सूं तळाव् री पाळ आय उतरया है । सुण्यो जिकै रो ई मूंढो थाप खायग्यो । हाथ में पाणी रो लोटो लटकायां अर खांधै धोतियो नाख्यां, निमटण-न्हावण सारू तळाव् दिस जाव्णआळा लोग मारग में, हा जठै रा जठै ई चापळग्या । फिकर लागी बांनै कै गैणो-गांठो अर रुपियो-पइसो कठै लुकोवां ? खाडो खोदर जमींदोज करां का छानड़ी रै फूस में खसोळां ? महाजनां मांय सूं च्यार मोतबर मतो करनै जोसीजी म्हाराज री हेली ढूक्या ।

न्हाय-धोय, सिंध्या-बंदण करयां पछै अमल गाळर जोसीजी म्हाराज डाढी माथै जाड़ियो बांध्यां, पोळ सूं लगती तिबारी में बैठा होको गुड़गुड़ावै हा । पगरख्यां पोळ में खोलनै च्यारूं जणा तिबारी में विछयोड़ी जाजम माथै आय बैठया । जोसीजी म्हाराज मूंढै सूं होकै री नळी नै अळगी करनै खैरसला पूछी जणै डालूजी भूतड़ै, ही

जकी हकीगत वतायी । मुळकर जोसीजी होकै री नळी नै पाछी मूंढै में लेय ली । दो–अेक गैरा कस खांचर धूंवो छोडता थका बोल्या–'वा जी सेठां वा, भली फिकर करी ! मैं जाण्यो कोई नाहर-बघेरा आयग्या दीसै । धाड़ायती तो आपणै जिसा मिनख ई है । जम रा दूत तो आथ कोनी ।' फेर दमसायत विचार में पड़ग्या रैया अर होकै री हळवी हळवी गुड़गुड़ाट चालती रैयी । छेकड़ डालूजी सामी जोवता थका बोल्या– धाड़ै रो कायदो है कै जिण गांव न लूटणो हुवै उण में धाड़वी इण भांत नचींता थका पड़ाव नीं करै । म्हारी जाण में अै रात नै किणी गांव में धाड़ो नाखर आया है अर आज री रात ओजूं किणी दूजै गांव माथै तूटर पड़सी । अठै तो थाकेलो उतारण सारू अर जीमा-जूठो करण खातर ई ढबिया दीसै है । फेर ई थांरै मन में वैम हुवै तो बींनै मेटण रो उपाव करसां ।

सेठां रै मन में थावस आयो । काळूंस खायोड़ै मूंढै री जोत वावड़ी । जोसीजी बांनै कैयो कै अेक काम करो । पकोड़ी कोटड़ी सूं स्योजीसींघजी नै म्हारै कनै खिनाय दो । म्हे दोनूं जणा अबार जायर तीयो–पांचो कर आसां । थे तो नचींता थका खूंटी ताणर सोवो ।

मेड़तियो स्योजीसींघ गांव रै रजपूतां में सैसूं लांठो अर धाकड़ आदमी हो । अेकलो जीव, आगै-लारै कोई नीं । कान री लोळ तांई पूगती डांग हाथ में लेयर नीसरतो जणै मिनख उणनै माखी सरीसो लागतो अर आभो लागतो टोपसी जिसो । बैन–बेटी नै लावण पुगावण सारू जोसीजी म्हाराज नै कदैई गाडी जुतावणी पड़ती जणै स्योजीसींघजी नै सागै वोळाऊ ले जावता ।

थोड़ी ताळ पछै स्योजीसींघजी नै सागै लेयर जोसीजी म्हाराज सामी घाटै, तळाव री पाळ चढया जणै डावै पसवाड़ै बालाजी रै बड़लै हेठै घासियां माथै बैठा धाड़वियां री निजर बां माथै पड़ी– हेठै सूं ऊपर तांई धोळी– सपेत पोसाक में, दोवड़ै डील रो सांचै ढळियो अेक टणको राजवी ठिमरी चाल सूं जमा-जमार पग धरतो बबर नाहर री भांत निरभै चाल्यो आवै । गोरो रंग । दप-दप करतो लिलाड़ । सूंतवों नाक अर आंख्यां रा मोटा-मोटा डोळा । चवड़ा पुणचा अर फाटता बूकिया, अंगरखी री बांवां फाड़र बारै आवण सारू कसमसीजता । कांगसियो काढ्योड़ी, हळवी पून सूं फर-फरावती डाढी । गोगाजी राठोड़ ई देख,लो जाणै ।

धाड़वियां निजरां ई निजरां में बांनै जोख्या । इसै डील अर चाल-ढाल रो अेक ई मिनख नीं हो बांमें । हाथ में डांग लियां सागै बैंवतो दूजोड़ो मिनख पण उगणीस नीं हो । गुमेज में कड़ातूड़ अर खड़ीखम हुयोड़ो लांबा-लांबा डग मेलै हो ।

काळी भंवर डंकदार मूंछां अर रोबदार चेरैआळै, अकेवड़ै डील अर लांबी रास-

आळै धाड़वियां रै सिरदार, अेक घासियै माथै बैठा दारू पीवता आपरा च्यार साथीड़ां नै आंख री सैन सूं समझाया, जणै वै उठनै वड़ळै रै ओलै जा बैठ्या। अै दोनूं जणा नेड़ा आया जणै गूंजतै-सै साद में बो बोल्यो – जै....ऽ माताजी री। जाणै सांड दड़ूक्यो हुवै इयां जोसीजी रो पड़ूतर आयो— जै....ऽ स्यामजी री। बांरै साद सूं वड़ळै रै पानड़ां में खड़को सो हुयो अर दो-तीनेक पाका पान खिर पड़्या।

घासियै माथै बैठता थका जोसीजी म्हाराज मुळकर कैयो कै मनै रजपूत मती जाण्या। हूं पारीक हूं। म्हारै खाटू स्यामजी रो इस्ट है। इण खातर हूं 'जै स्यामजी री'ज करया करूं हूं। थे इण बात री अंवळी मती मानजो। हां, थांरी 'जै माताजी री' आं कानी ढूकै। अै मेड़तिया सिरदार है, स्योजीसींघजी।

धाड़वी सिरदार सूं स्योजीसींघजी जै माताजी री करी अर वतायो कै अै जोसीजी म्हाराज है अर ठाकरां रै देवलोक हुयां पछै अै ई गांव रा धणी–धोरी है। आपरै जीवणै कान री लोळ नै सपरस करतो सिरदार बोल्यो – जाण्या सा, जाण्या। मोडजी रै मूंढै आंरी सोभा सुणी ही। सुण्या हा जिणसूं सवाया ई लाध्या। मनै वैरीसाल कैवै। नरूको हूं हाडोती थकलो।

पोतै सूं अमल री आठ–दस किरच्यां जीवणी हथेळी माथै काढर आं कानी आगै करता वैरीसालजी पूछ्यो कै कियां तकलीफ फुरमायी? जोसीजी कैयी कै आप सिरदार अठै आयर डेरो करयो, सो इण गांव रा आप मिजमान हो। किणी पण जिनस री आपनै दरकार हुवै तो फुरमावो, जिको मंगाय हाजर करां। वैरीसालजी बोल्या कै आपरी महर सूं बीजा तो सारा ई थोक है। हां, कड़ाही अेक वपराय दिरावो तो ऊंठां नै घी खळकावण में थोड़ो सुबीसतो रैसी। घिरत रा पींपा तो तीन रात उठाय लाया हा।

जोसीजी म्हाराज स्योजीसींघजी सामी जोयो जणै बै उठर च्यार–पांच पांवड़ा घाटै धकै दिया अर बठै सूं ई हाथ रो झालो देयर कायमखानियां री कोटड़ी आगै रमता टाबरां मांय सूं अेक नै नेड़ो बुलायर समंचार भुगता दिया। थोड़ी ताळ में ई हेली सूं कड़ाही लेयर हुकमो भांबी आय पूग्यो।

तीनूं जणां वातां–चीतां में इसा रम्या कै जाणै, वरसां री सैंध–पैचाण हुवै। इत्तै में जोसीजी म्हाराज खरी मींट सूं वैरीसालजी कानी जोयो अर बांरा हाथ झालनै मुळकता थका पूछ्यो कै ठाकरां, इण गांव में तो हाथ नहीं घालोलाक? वैरीसालजी मुळकर पड़ूतर देवै, जापैली तो धमधमै सै डील रो अेक धाड़वी जीवणै पासै झिगरै माथै बाटा सेकतो–सेकतो ई बोल्यो — अर घालसां तो थे कांई नव री तेरै कर लेसो?

तीनां रै मूंढ़ां री मुळक जाती रैयी। जोसीजी म्हाराज री आंख्यां रा राता डोरा

खंचीजग्या । बीं कानी मूंढो फेरनै पूछ्यो कै जी, कांई फुरमायी थे ? अेकर पाछा फुरमावजो.... । वैरीसालजी लखग्या कै वात वीगड़ी । आपरै वेली नै ओभाड्यो—बोलो क्यूं बळै नी ? अणूतो ई लढकपंच वणै है ? काण जाणै न कोई कायदो अर लपर-लपर करै है । मूंढागै देखर काम क्यूं करै नी थारो ? बाटा वाळ नाखैलो सगळा ?

तो पण भाळ सूं जोसीजी म्हाराज रो मूंढो मजीठवरणो हुयग्यो । गाबड़ तणगी, छेड़चोड़ै सपळोटियै री तणै जियां । फुरणा सूंसाड़ करण लागग्या जियां घींसोळी वैवता नारां रा करै । छाती में सांस मायो नीं । होठां आयोड़ी वात नै गिटण री घणीज कोसीस करी पण छेकड़ बींनै बारै आयां ई सरचो— 'घालसो हाथ, तो भचदणी रो वठै ई मूंचो दे देसां । पुणचै-सूधो घालसो तो पुणचै सूं, अर अकूणी-सूधो घालसो तो अकूणी सूं वाढ लेसां । मर जावणो कबूल है पण तूंतड़ो अेक लेजावण देवां नीं । जावोला खोखा खावता ई..........।'

स्योजीसींघजी पण आकरा पड़्या —अजी, कैरां में काकड़चां कोनी लाधै अर मतीरां रा भारा पण नीं बंधै । आं लमछड़ बंदूकां रै भरोसै तो खोटी ई हुवोला । इण गांव में पण इसी पनरै बंदूकां, बाईस भाला अर सैंताळीस तरवारां है अर डांगां तो अणकूंत है । थांरै पण माथा दो कोनी । दस-पांच म्हांरी लासां हुसी तो थां मांय सूं पण आधा-परधां नै परा ढाहसां अर सूको तो अेक नै ई जावण देवां नीं ।

जोसीजी म्हाराज ओजूं ऊफणग्या—'पाळा लड़ो तो पाळा, अर चढिया लड़ो तो अठै पण ऊंठां रो तोड़ो नीं है । ऊछळपांती थांरी है । पाळ हेठै ओ ताल कोनी दीसै, अठै ई रीठ वाजसी ? अबै थे थांरो चंदरमा सोच लीजो ।' आ कैयर जोसीजी म्हाराज भाटक अंगरखी अर उठ्या ।

वैरीसाळजी खुद पण लारै रा लारै उठ्या अर माफी मांगता थका, जोसीजी रो हाथ भालनै बोल्या— थांनै म्हारी आण है, खाटू स्यामजी री आण है जे हेठा नीं बैठ्या तो । जोसीजी म्हाराज रै मूंढै रो सवाद विगड़ग्यो हो अर जीभ माथै जाणै खार री पापड़ी जमगी ही, पण आण में बंध जावण सूं वै हेठै बैठ्या अर आकरी निजर सूं बाटा सेकतै धाड़वी सामी जोयो । पण वो तो नीची धूण घाल्यां मैण री माखी वणग्यो हो । वैरीसालजी कानी मूंढो फेरनै ओळभो देवता बोल्या – आदमी गत रा राख्या करो जी ठाकरां ! इसा वेगत रा मिनख कदैई कोगत कराय नाखसी ।

वैरीसालजी मुळकर पड़ूतर दियो कै जी, हाल साण चढ्यो कोनी । भरती हुयै नै जुमै जुमै आठ दिन तो हुया ई है । साव नवादू है । बंदूक झालणी पण हाल आयी कोनी । पण थे तो जाणो हो कै नूंवो मुलो घणो अल्ला-अल्ला करचा करै है । जोसीजी अर स्योजीसींघजी रै होठां माथै मुळक आयगी अर बांरा मन पाछा नितरग्या ।

❀ ❀ ❀

ढळतै जेठ री गळती रात में धराऊ दिस ऊंडा वाजता वांकियां री 'थुरी ……ऽ थुरी……ऽ' रै सागै जोसीजी म्हाराज री हेली में हळभळ माची। भाख फाटण में हाल जेज ही पण 'जानां आय पूगी, जानां आय पूगी' करती जाणै आखी हेली उठनै बैठी हुयगी।

बारलै चौक में पांच दिनां पैली चेतन हुयोड़ी च्यार भठ्यां आठ गाडी मुंगदणो भख लियो हो अर बां माथै डोढा काम करता पोकरजी अर अजमेर सूं तेड़िया हलवाई मारोमार मिठायां वणा रैया हा। दस बोरी चीणी खपगी ही अर रातै दो ओजूं गळीजगी ही। पांच कोठारां में न्यारी-न्यारी मिठायां री बागरां दिरीजगी ही पण डालूजी भूतड़ै री कूंत मुजब अजै कस्ती ही। रसोवड़ै रो सारो मदार बीं माथै ई हो। च्यार रातां रै ओभकै सूं कूटीज्यो थको भी बो च्यारां कानी चौकस हो। कारीगरां रो हाव वधावतो बोल्यो-हां मोटियारां, वाजण दो काम री झींक। आ नीं हुवै कठैई कै मिठाई कमती पड़ जावै अर वराज आपां में आवै। हां, काम नीवड़्यां सीख में जणैदीठ अेक सो अेक कळदार रोकड़ी अर तीन सौ छियंतर री मुलमुल रो मोठड़ो बंधावण रो जिम्मो म्हारो।

भैरूंबगसजी साह, डालूजी भूतड़ै अर जोधराज नाई नै सागै लेयर जोसीजी म्हाराज जानां री अगवाणी सारू गांव रै उतरादै फळसै बायांजी रै वड़लै हेठै पूग्या, जठै जानां देखण रै उमाव में आधोक गांव पैली ई उलळ आयो हो। सूरज भगवान री पैलड़ी किरण रै सागै, भरियै गुवाड़ै सागू वडी सूं बाई केसर री जान गांव रै फळसै ढूकी– अेक सगड़, अेक घोड़ी, अेक ऊंठ अर इग्यारै गाड्यां। छोटा-मोटा करनै जानी हुसी पचास-अेक नेड़ा। जान नै गढ रै दरीखानै डेरो दिरायो। आधीक कलाक पछै आयी छोटी खाटू सूं बाई मिसरी री जान, वांकियां रा तूंताड़ उडावती अर गरद रा गुबार उठावती– अेक रथ, अेक घोड़ी, च्यार ऊंठ अर चाळीस गाड्यां। दो सौ रै लगै-टगै वराती। इण जान रो जनवासो बठै धरमसाळ में ई थरप्यो, जिणरै लारलै पसवाड़ै ठिकाणै रै बाग में गाड्यां छुडवायी, जठै बळधां सारू चीपटै, पानड़ी अर फळगटी री तीन न्यारी-न्यारी ढूंगरयां दियोड़ी ही। वारी-वारी सूं दोनूं जनवासां में जायर म्हाराज व्याहीजी री राती टुईल री थेली रो मोळी सूं मूंढो बांधण री रसम अदायगी करी।

सिरावणी में लाडुवां सूं भरयो अेक लूंठो ठाठो गढ रै दरीखानै खिनायो अर इसा ई च्यार ठाठा धरमसाळ में पुगाया। गढ सूं तो आधो भरयोड़ो ठाठो पाछो आयो, पण धरमसाळ सूं समचार आया कै लाडू ओजूं खिनावो। च्यार ठाठा भरनै भळै पुगाया। बै पण कमती पड़ग्या। तीजी वार लाडू खिनाया जणै डालूजी भूतड़ो पण सागै गयो। तुरता-फुरत पाछो आयो अर हेली रै बारै चांतरै माथै बैठा जोसीजी म्हाराज, ठाकर अभैसिंघजी अर साह भैरूंबगसजी रै सांकड़ै जायर होळै-सीक बोल्यो कै बठै तो

म्हाराज, पानड़ी अर फळगटी री पातळां माथै वळधां नै लाडुवां री परूसकारी हुय रैयी है अर जान री सिरावणी तो हाल वाकी है !

च्यारूं माथा जुड़र आलोच करण लाग्या । ठाकर अभैसिंघजी बोल्या कै चालर वांरो माजनो पाड़ां कै थांरै घरै सात पीढ्यां में ई कदैई वळधां नै लाडुवां री सिरावणी करायी ही ? दातारी परायां रै पाण ई दिखावो हो कांई, जठै हींग लागै न फिटकड़ी अर रंग चोखै रो चोखो ? जोसीजी म्हाराज समाध्या कै राज, फुरमावणो तो आपरो वाजब है । आ ई जे न्यात री पंचायत हुवती तो हूं अेकलो ई आंनै इसा रगदोळतो कै घणा दिन याद राखता । पण करां कांई ? बेटी रा बाप हुयर जमारो खोयो । इण वखत हाथ आपां रो दब्योड़ो है । इण खातर, आपां तो लिलाड़ में सळ घाल्यां विना, मांगै जितो ई बाळो । भरी गाडी में छाजलै रो कांई बोझ ? अर आपनै ठा नीं है राज ! छोटी खाटू रा अै जोसी महा नागा है । परणीजण जावै जठै ई गोधमघोड़ो करै । धापर नागाई वरतै अर आगलै धणी रो पोत लेवण री आमना राखै । गैल री साल पींपाड़ रा कामदार छोगालालजी पिरोथ नै कम तलचो हो कांई ? बा तो कैवो कै घर रा आसूदा हुवण सूं अर लारै ठिकाणै रो ठरको हुवण सूं निभाव हुग्यो, नींतर अै मला भाई तो लता लेवण में खामी को राखी ही नी । हजार–खंड रुपिया वेसी भलांई लागो, पण पोत आपणो आंनै देवणो नीं । पोत चवड़ै आजावै तो इण घराणै री सात पीढ्यां री स्यान रा टका हुजावै राज !

मसवरो नीवड़्यां अर मतो थिर हुयां, अठीनै तो रुपियां री थेली लेयर गुलाबजी भूतड़ै अर वोळाऊ स्योजीसींघजी बंगलै पूग, ठाकरां रै खासै ऊंठ नै वेळास करनै मेड़तै रै मारग ढाण में नाख्यो, वठीनै पांखळां–सूधी गाडी जोतर सुखै चोयल माल-मतै री बोरयां घालणै अर हलवायां नै बैठार लावण सारू लारै-रा-लारै नारकियां नै दड़बड़ाया । भैरूंबगसजी आपरै नोहरै में भठ्यां दो खुदावण सारू उठर परो गयो अर डालूजी पण दूजा कामां में जाय अळूझ्यो ।

लारलै पोहर दोनूं जनवासां में ठंडाई रो मसालो, दूध अर चीणी पूगती करी । धरमसाळ सूं भांग अर गांजै सारू सनेस आयो जणै हेली सूं आदमी गया अर घोटचोड़ा भांग अर गांजै रा दो न्यारा–न्यारा लूंदा धरमसाळ री वरसाळी री सामली भींत माथै थरकायर थेपड़्यां ज्यूं चेप दिया अर बोल्या कै अबै आं मांय सूं सरधा सारू तोड़ो अर पीवो । व्याहीजी हजारीमलजी गांजै रा लोया तोड़ तोड़र तीन चिलमां सारी अर इसा गैळीज्या कै जीमण–जूठण तो गया आघड़ा ई, दो दिनां तांई ठा ई नीं पड़ी कै कद तो ऊग्यो अर कद आंथ्यो । कदैई तो वांनै लागै कै हूं मांचै माथै पोढ्यो हूं अर कदैई लखावै कै मांचो म्हारै माथै पोढ्यो है । नाड़ाछोड करण सारू मांचो छोडर दमसायत अळगा जावै तो पाधर री धरती में खाडा दीसै अर धक्का खावता पाछा नीठ मांचै तांई पूगै । जोसीजी म्हाराज पूण मेलर वैद मोवनलालजी नै तेड़्या । व्याहीजी री

नाड़ी रो जायजो लियां पछै बै बोल्या— गैळ उतरयां ही ऊभा हुसी, दूजै कोई विगाड़ जिसी वात कोनी । गैळ जे वेगी उतारणी हुवै तो आपणै अठै ओखाणो चालै—'भांग मांगै भूंगड़ा अर गांजो मांगै घी', सो घी पावो धपटवो । राजी--खुसी पी लेवै तो ठीक, नींतर नाळ देवो । आ कैयर वैदजी हांस्या अर दूजा लोग पण मुळक्या । विचै-विचै पतासां अर काळी मिरचां रा संपुट लगा-लगार निवायै घी री कटोरयां पायी जणै वडै भात में डिगता -पड़ता आय सामल हुया ।

वडै भात रै दिन आखो गांव नूंतीज्यो अर पांच न्यारी -न्यारी जगां मुकर हुयी, जठै अेकूकै स्याणै महेसरी री निगराणी में परूसकारी रो माकूल इंतजाम हो । जानां दोनूं जीमगी जणै हेली री सिरै डोढी सूं दरीखानै रै पगोथियां तांई राती टुईल रा थान विछीज्या, जिणां माथै पगमंडा करता ठाकर अभैसिंघजी मय लवाजमै पधारया अर दरीखानै विराजनै आरोग्या ।

पांचवै दिन वरातां री सीखां लागण सूं पैली व्याहीजी हजारीमलजी आयनै जोसीजी म्हाराज सूं बोल्या कै थांनै जे इतराज नहीं हुवै तो हूं कोठार रो मुलाहिजो करणो चावूं । जोसीजी खरी मींट सूं बां कानी जोयो । व्याहीजी रै होठां माथै हळवी सी मुळक अर माजरी आंख्यां में वाहीज पोत लेवण री कुचमाद पळकै ही । जोसीजी म्हाराज उथळो दियो कै कोठार रो थांनै मुलाहिजो करावां, इसो कोई कायदो तो आथ कोनी । पण थां सरीखा नेड़ा गिनायत आमना करै तो म्हांनै कांई उजर हुय सकै ? लो, पधारो म्हारै सागै अर फुरमावो मुलाहिजो । दोनूं जणा चाल्या जणै डालूजी भूतड़ो पण सागै हुग्यो । चालतां-चालतां ई कूंच्यां रो झूमको खणकावतां बीं व्याहीजी नै पूछयो कै कुणसी मिठाई रै कोठार रो मुलाहिजो करसो ? व्याहीजी चाणचकी, हा जठैई ऊभा रैयग्या अर बांगा-सा बीं कानी जोवता थका पूछयो कै कोठार ई कोई दो-च्यार हुवै कांई ? डालूजी अेक साळ रै लमछड़ ताळै में कूंची दाबर डावै हाथ सूं डस खांचतां पड़ूतर दियो कै अठै तो म्हाराज, न्यारी-न्यारी मिठायां रा न्यारा-न्यारा ई कोठार है । इण कोठार में लाडू है, आ कैयर बीं किवाड़ां रा पला धकेल दिया । व्याहीजी मांय झांक्या तो आंख्यां इचरज सूं चौड़ी हुयगी । साळ आधी सूं वेसी भरी ही अर लाडुवां रो थट लाग रैयो हो । व्याहीजी मन में विचारयो कै जानां पांच दिन और ढाब लेवै जोसीजी म्हाराज, तो पण पींदो नीं आवै ।

वारी-वारी सूं पांचूं कोठारां रो व्याहीजी नै मुलाहिजो करवायो । जिकी ई साळ खोलै उणी में मिठाई री वागर दियोड़ी लाधै । देखर व्याहीजी तो दियावळा सा हुग्या । जितै तो डालूजी भूतड़ै हाथ जोड़र अरज करी कै इता रा इता कोठार साहजी री हवेली में है सो पधारनै बांरो पण मुलाहिजो कर लिरावो । व्याहीजी री आंख्या फेरूं चौड़ी हुयगी । जोसीजी म्हाराज कानी जोयर आपरै कान री लोळ सपरस करता थका बोल्या कै गुनो माफ हुवै, म्हे तो कीं अंवळी ई तेवड़ी ही पण अठै तो थाग ई को लाग्यो

नी। जोसीजी मुळकर इता ई बोल्या कै सो विनायकजी अर स्यामजी म्हाराज रो परताप है अर आप जिसा सगां रो माईतपणो है।

जानां विदा हुयगी। दूजा सगळा लोगां नै सीखांवाड़्चां लागगी। लारै रैयग्या फगत तीन राव, वडी पाटू सूं आयोड़ा। जोसीजी म्हाराज बांनै कैयो कै कटोरदान थांरा मिठायां सूं भरवाय लो अर जणैदीठ दो कुचामणिया रोकड़ी ले जावो। राव बोल्या कै म्हाराज, जठै इसा राजान-काजान है बठै सूं कुचामणिया क्यूं लेसां? म्हे तो कळदार लेसां टणकारबंद, अर आज री रात तो अठै ई मुकाम राखसां नै परभातै सीख लेसां। जोसीजी म्हाराज कैयी कै घणी आछी वात है, रैवो। दूजै दिन वेळचां ई आयर बां आपरा कटोरदान मनचायी मिठायां सूं दटोदट भरवाय लिया अर जद जोसीजी म्हाराज रै वडोड़ै बेटै भंवरजी सीख रा छव कळदार बां कानी करचा जणै हाथ जोड़र बोल्या कै खमा अनदाता! म्हे जणा वीस हां, सो चाळीस रुपिया बगसावो। जोसीजी जद कैयी कै भाईड़ां! म्हांनै तो थे तीन ई दीसो हो, वाकी रा कठै है? जणै अेक राव ढकणै–सूधी मटकी आगै करतां समाध्यो कै इण में है बापजी! म्हे थांरो जस बखाणां जियां अै पण आपरो विरद गावै। आ कैवतां–कैवतां ढकणो आघो करनै बीं मटकी नै ऊंधी करी तो किताई मींडका हेठै आय पड़्चा। पड़ण री जेज ही कै बै तो टर–टर करता मरजी आयी जठीनै ई कूद–कूदर नाठ्चा। होठां आयी मुळक नै लुकोवता थका जोसीजी म्हाराज रावां नै कैयी कै रुपिया तो थांरा खरा, पण सतरै गिणावो तो सरी! आ सुणतां ई तीनूं राव मींडकां नै पकड़ण सारू उचक–उचक नै चौफेर कूदण लाग्या। नीठ पांच मींडका लेयर वावड़्चा जणै रावां रा मूंढा देखणजोग हा। जोसीजी मधरा-मधरा मुळकता रैया अर छेकड़ चाळीस रुपिया देयर रावां नै सीख दीनी।

❀ ❀ ❀

काती सुदी इग्यारस सूं पून्यूं तांई जोसीजी म्हाराज रो मुकाम पोकरजी रै मेळै में रैवतो। अेक गोरी सी टीवड़ी माथै बांरी छोलदारी तणीजती, जिणरै मांय वै ढोलियै माथै वैठा--बैठा ई, हेठै ताल में भरीजियै मेळै माथै निजर पसारचां रैवता। कोई सांतरी बळधां री जोड़ी, कोई कामल सांढ, कोई ओपती घोड़ी निजरां चढ जावती तो ताल में उतरनै आगलै धणी सूं भाव--ताव करता। कदैई पूण रो आटो-साटो कर लेवता, कदैई ऊपरदान रा चाळीस-पचास भुगतार खपीड़ बळधां री जोड़ी काढनै च्यार दांतां-आळा सूंसाड़ मेलता नारकिया मुलाय लेवता, तो कदैई दौड़ में सै-सूं आगै आवणआळो वैत मूंढै मांग्या दाम चुकायर खांच लेवता।

आज काती रै ऊजळै पख री दसम री रात ही। जोसीजी म्हाराज पोळ में ठौड़ री ठौड़ ढळियै डेलै माथै पोढग्या हा। आज सुदियां ई अपोढी करी अर दिसा फरागत हुयर आया। बारलै चौक में बैठर हाथ उजाळतां बां आभै सामी जोयो--किरत्यां मथारै आयर ढळगी ही अर लारै--लारै लुंगाड़ै जोगी सो चांदड़लो आपरै उजास री मुळक

विखेरतो, आंछा-आंछा पग उठावतो बांरो सागो करण सारू आघतो दीसै हो। पण किरत्यां तो घराणै री लुगायां दांई वावड़र बीं सामी जोयो तक नीं। पाजेबां रै घूघरां री घमरोळ उडावती वै तो वूहगी अर हांफ्योड़ो चांदो गुरळाई आळै वडलै री अेक डाळ सूं टिरचो थको फांसी खावण रो सांग करतो सो लखायो।

जोसीजी म्हाराज सौ सौ कळदारां सूं दटोदट ठुंसीज्योड़ी दोनूं नोळयां, जिणांरै सांकड़ै पेटां में हाथ रै अंगूठां रै जोर सूं अेक अेक रुपियो रिगसातां रिगसातां बांरा दोनूं बेटा– भंवर अर दुरगो- काती महीनै री ठाडी रात में पसेव सूं लतर-पतर हुयग्या हा, धोती री लांगां हेठै कड़चां सूं किड़र बांधी। गैरो साबण देयर धोयोड़ी ऊजळी पोसाक करी। घोड़ी-असवार हुयर, हाथ में भालो भालर पोकरजी रै मारग वहीर हुया जणै चाणचकी सुखै चोयल रो खयाल आयो, जिको गावा घी सूं गाडी भांग, जरूरत री सगळी चीज–वसत घालर रातै भालर वाज्यां वहीर हुग्यो हो, सो बीं तो पोकरजी नैड़ी ली हुसी। घोड़ती दुलकी चाल में आधी कलाक चाली हुसी। जणै खरवड़ नदी रो पायतण सरू हुग्यो। डांडी री खार रळचोड़ी रेत चानणी रात में चांदी रै चूरण ज्यूं पळकै ही अर मूंढै आगै खरवड़ रो चवड़ो, ओघड़–दोघड़ पाट पसरचोड़ो हो।

अंधारो पड़तां–नीं–पड़तां नदी रै इण पाट रो उणियारो वदळीजण ढूकतो। मारग सूं थोड़ोसोक डोढो, डावै ढिगै ऊभो पींपळ रो टणको रूंख जिणमें ओळै-दोळै गांवां रा लोग ओपरी माया रो वासो मानता, पून रै वेग सूं हड़हड़ाट करण लागतो, जाणै किणी राकस रै गळै में पड़ी हाडकां री माळावां खड़खड़ीजती हुवै। थोड़ी–थोड़ी ताळ में भरियै साद सूं घूघू बोलण ढूकता अर आभै में डरप्या तारा हब–डब हब–डब करण लागता। चानणी रै मुसाण में चांद मुड़दै री फाटचोड़ी आंख री कोडी–सो लखावतो। कुवेळां बठीनै सूं नीसरतां, काची छातीआळै वटाऊ नै डाफी चढर धूजणी छूट जावती। सैंठी छातीआळा पण दो-च्यार सागो करनै नीसरता तो मांय रां मांय हड़मान-चाळीसो गोखता जावता। तो पण डील री रुंआळी ऊभी हुवती रैवती अर काळजो छाती में ढीमड़ै री पनड़ी ज्यूं खटीड़ खटीड़ पड़तो रैवतो। आकळ-बाकळ हुयर कदैई कोई चूक जावतो आगली ओळी, तो आखो डील पसेव सूं हबाहोळ हु जावतो। नीची धूण घाल्यां वूहा जावता अर आंख रै कूणै सूं पण पींपळ सामी नीं जोवता। कठैई भूत दीसग्यो तो·········ऽ?

भय नांव री चीज जोसीजी म्हाराज रै नेड़कर ई को नीसरी ही नी। भूत–परेत री जूण में बांरी मानता पण नीं ही। वीसूं वार इण मारग पींपळ सामी जोवता अर खैंखारा करता नीसरचा हा, पण बांनै तो कदैई कीं भळको पड़चो नीं, अर नां कदैई बांरी घोड़ी चमकी। सो बां तो सहजां-सहजां नदी रो परलो ढिगो लियो। ठगां रो गूढो जीवणो छोडर थांवळै पूग्या जणै सामी अडावळै री अेक भाखरी माथै परभातियो तारो चिलकण ढूकग्यो हो। बां घोड़ी रै अेडी दी अर भाख फाटतां-फाटतां वाढी

घाटी रै भाठां माथै उणरा पोड़ वाज्या। तिलोरो लारै छोडर पोकरजी ली जितै दिन घड़ी दो चढग्यो हो। सागण टीबड़ी माथै तण्योड़ी छोलदारी वांनै अडीकै ही।

देखतां-देखतां ई च्यार दिन गुड़ग्या। तीरथराज में आज पून्यूं रो म्हातम न्हावण करचां पछै जोसीजी म्हाराज छोलदारी में बैठा अमल गाळर मेळै माथै निजर पसारचां होको पीवै हा। अेक लांबो-लड़ाक राईको सांढ री मोरी ताण्यां सामीकर नीसरचो। जोसीजी थोड़ी ताळ सांढ री चाल-ढाल देखता रैया। पूण कीं कामल दीस्यो। होको आधेटै ई छोडर ताल में उतरचा। होळै—होळै सांढ रै चोफेर दो आंटा दिया। खोड़ कोई दीसी नीं। राईकै सामी जोवता पूछचो—

— वैंत विकाऊ है कांई ?

— हां।

— गांव किसो ?

— टापू।

— ओ कठैक आयो ?

— पोकरण-फळोदी नेड़ो। भाटीपा धकै।

— घणी भांय आयो भाई देवासी !

— अजी, केई दिनां सूं पोकरजी रै म्हातम-न्हावण री ऊरमा ही। सो विचारचो कै चाल रे जीवड़ा, अेक पंथ दो काज हु जासी।

— असवारी करनै देखलूं कांई ?

— मजै सूं।

रैबारी सांढ नै झेकी। मोरी झाल, डावो पग पागड़ै देयर जोसीजी म्हाराज आगलै आसण बैठता थका बोल्या— आ जा भाई देवासी, तूं ई। इण भांत सांढ नै बेळास कर नै अेडी दी अर मेळै रै ताल सूं बारै नीसरचा। सांढ री रपटक चाल देखी, पड़छाळ देखी। पछै बींनै ढाण में नाखी अर चौताळां पण पटकी। पण कांई मजाल कै अैल ई आ जावै ? पेट रो पाणी दुरादुर नीं हाल्यो। जोसीजी म्हाराज मांय-रा-मांय बोल्या कै सांढ घणी सोहरी। आ तो नेखम ई मुलावणी। आंटो काटर पाछा आया। झेक नै उतरचा। बोल्या—

— मोल कर भाई देवासी !

— अबै थै ई कूंत लो।

— माल थारो है भाईड़ा ! म्हारी कूंत कठै काम आवै।

— रुपिया छव वीसी लेसूं।

— देख भाई देवासी ! लेवणा हुवै जिका वता। वाणियां-आळी ऊंचक-नीचक म्हारै सूं नीं हुवै।

— अे, थांरै लेवणीज हुवै तो दस आगला सौ गिण दो। इणसूं घाट पइसो अेक लूं नीं।

जोसीजी म्हाराज रुपिया गिण दिया अर राईकै सांढ खंचाय दी। जीम-जूठर लारलै पोहर वहीर हुया सो घड़ी दो रात गयां गांव पूग्या। पण इण सांढ री असवारी रो सुख जोसीजी रै लिख्यो नीं हो। दूजै दिन परभातै ई सांढ रा खोज काढता खरवा ठाकर धाड़वी मोड़सिंघजी आय ऊभा रैया। बोल्या— जोसीजी म्हाराज ! थे मुलार लाया जकी सांढ मनै घणी दाय आयी ही अर रुपिया पण सौ धाम दिया हा, पण म्हारो बेटो रैबारड़ो दीवी नीं। थे किता चुकाया ? जोसीजी जद कैयी कै दस आगला सौ दिया, तो ठाकर बांरा हाथ पकड़र बोल्या कै आप कोई दूजी मुलाय लीजो। आ तो मनै खंचावो। म्हारै घणी काम री। आ कैयर ठाकर रुपियां री थेली काढी जणै जोसीजी म्हाराज बांरो हाथ झाल लियो। बोल्या— थे म्हारो जितो कायदो राखो, अै रुपिया तो उणरी देखायी में जावै। सांढ थांनै दाय आयी थकी है तो बेलासक ले पधारो। रैयी वात रुपियां री, सो नुगरो हुयर हूं ले पण लूं तो थांसूं लुकोर आंनै मेलसूं कठै ठाकरां ? आ कैयर जोसीजी म्हाराज मुळक्या अर ठाकर घणी ताळ हो-हो कर हांसता रैया। ठाकरां नै झोळियो पायो अर पुगावण सारू तळाव तांई सागै गया।

❀ ❀ ❀

पचाणजी सूं सरू हुयर स्यामलालजी तांई री छव पीढचां री जतन सूं जोड़चोड़ी अणथाग पूंजी, दिल रा दरयाव अर हाथ रा उरळा जोसीजी म्हाराज री ढळती ऊमर में तेजी सूं छीजण ढूकी जियां ऊनाळै री रुत में तळाव रो पाणी वेगो-वेगो सुसै। धन री धिराणी लिछमीजी छव पीढचां सूं वेसी आज तांई किणी रै ढबी हुवै तो जोसीजी म्हाराज रै ई ढबती। दियाळी री रात हेली रै डागळै चोफेर दीपमाळका चसी रैवती अर दीयां में आखी रात तेल पुरीजतो रैवतो। लिछमीजी रै पानै री पण खासै सरंजाम सूं पूजा हुवती, पण पूजा करण आळां नै कांई वेरो कै लिछमीजी तो कदेई रा उठंतरी करग्या है अर जिणरी पूजा हु रैयी है बो भांत-भंतीला सोवणा रंगां में छप्यो थको मातर कागद रो अेक पानड़ो है।

मेड़ता पटी में तीन वरस लगोलग काळ पड़ण सूं आंवद तो अेक दाणै री हुयी नीं अर खरच रो तोमार बंधग्यो। ऊचाळो करता करसां अर असाम्यां नै माडै ढाब्या हा तो बांनै खावण-पूरतो धान तोलणो अर बांरा डांगरां सारू चारै रो पण सरंजाम करणो पड़चो। साळां, भखारचां अर खोडां में भरचो थको धान अर पजावां-ढूंगरचां में संच्यो थको चारो गेलै लाग्यो। गांव में कमाई रो सूत नीं रैय जावण सूं घणकरा महाजन दिसावरां में कानी-कानी जा वस्या अर सुकाळ हुयां ई वावड़चा नीं। जोसीजी म्हाराज रा बांमें निसरता अेक लाख सूं वेसी रुपियां री ओळचां जरब खायगी। अबै कुण तो उगाई सारू काळै कोसां जावै, अर आगला ई कुणसा साव गैला है कै कागद रै समचै रुपिया पूगता करै ? लारै जिका महाजन रैयग्या गांव में, बां पण आ कैयर हाथ जोड़ लिया कै म्हाराज, च्यार-पांच पीढचां पैली लियोड़ा वीस-पचीस रुपियां रै व्याज री कोडचां जोड़ण सूं तो लंक लागै अर म्हांसूं चुकायीजै नीं, अलबत मूळ लेयर फागड़ती

देवता हुवो तो हुकम करो। जोसीजी विचारयो कै मूळ सूं तो थागा ई कांई लागणा है, सो बीरै लारै पण धूड़ वाही।

सुकाळ हुवो चावै दुकाळ, परवार लूंठो हुवण सूं टाणो तो अेक-रो-अेक माथै ऊभा ई रैवतो। कदैई व्यांव है, कदैई मायरो, तो कदैई जिनोई। लोग भूंडा नीं कैय दै, इण खातर टाणा उणीज मठोठ सूं काढणा पड़या जिण ठरकै सूं आगै हुवता आया हा। रुपियां रो जुगाड़ करण सारू रकमां अडाणै मेलीजण लागी। पीतळ रा दो लूंठा कटोरदानां मांयसूं सोनै री रकमां, जाणै किणी मंतर रै जोर सूं बन-बन करती उडण ढूकी। किंतीक आलण्यास पूगी तो किंतीक बडायली; किंतीक सैंसड़ै री सोय बांधी तो किंतीक थांवळै री। चांदी री रकमां ई पछै लारै क्यूं रैवती? उणांरै पण पांख्यां आयगी अर मन रै मतै कानी-कानी उड चाली। गोर में चाळीस गायां री छांग ही, जिणां में मातर तीन रैयगी अर सिंझया री टैम बांटै री तगारयां माथै अरड़ावती सात भैंस्यां मांयसूं रैयी फगत अेक। मांयलै चौक में जठै ऊठ परभातै च्यार विलोवणां रा घमीड़ उठता बठै मातर अेक रैयग्यो अर बो पण धकै जायर इकांतरै पड़ग्यो। घी-गवां री रोटयां री ठौड़ गोजूं री लूखी रोटयां आयगी अर धापवों दूध पीवणआळा टाबरां री पांती में फगत अेक पळी दूध रैयग्यो।

❀ ❀ ❀

वगत री पण फटकार कोझी घणी हुवै। लागै जणै इसी, कै मिनख काठो ई संपटचूक हुयर अधगावळो हु जावै। कोडयां नै सूंई नाखणी चावै तो ऊंधी पड़ै अर ऊंधी राळण री तेवड़ै तो सूंई पड़ै। अबै कसालै री घड़ी आयगी है, इण वात नै जोसीजी रा घरआळां तो सै गोडी ढाळर अंगेज ली, पण जोसीजी म्हाराज री धज में अंगै ई फरक नीं। लिलाड़ माथै सळ ई किण रै? ऊंठ नै पूछयो कोई कै थारै मगरै नगारां माथै डंको पड़ै अर तूं चमकै कोनी? ऊंठ उथळो दियो कै वावळा! इण पूठ सूं जुजरवा चाल्या थका है। घर में थोथ वापरगी है, आ वात जोसीजी म्हाराज पण जाणता हा, पण वै तो आपरै हियाव अर छाती रै जोर सूं इणरी धापर अणदेखी करता रैया। नां तो इणरी गिनार करी अर नां कदैई इणनै धारी। कदैई रड़क जावतो कसालै रो कांटो, तो मांय-रा-मांय कैवता— कांई फिकर है? अखीर में तूटया तो ई टोडा। कुणसो काठो सुदामोजी हुयग्यो हूं? समंदर सूकै तो ई कड़यांसूणो कादो। मोटी रातां रा मोटा ई भांझरका। अै लाव–लसकर तो इयांई गाजां-वाजां चालसी।

अेक लूंठो खरच सामी ऊभो डिडकरातै अरणै भैंसे ज्यूं जोसीजी म्हाराज नै वकारै हो। रामजी रा जीव दस पोता हा बांरै, जिकां मांयसूं दो वडगर गांव री इस्कूल सूं दूजी पास करयां पछै पोळा बैठा हा। बारली निजर भलांई मोटी पड़गी हुवो, पण जोसीजी री मांयली निजर आगलै पचास वरसां तांई रो समो परतख देखै ही। आवणआळै जमानै में अंगरेजी भणिया–पढियां री घणी पूछ हुसी, आ वात बांनै काच में दीसै ज्यूं चवड़ै दीसै ही। जमीं री नेपै मोळी पड़गी ही अर अबै टाबरां री

भणाई में ई सार हो। दोनूं वडगरां नै मेड़तै पुगावणो हो अर बठै री सातवीं तांई री भणाई नीवड़्यां जोधपुर खिनाणो हो। लारलै टाबरां नै पण वारी-वारी सूं इणीज चरखी मांयकर काढणो हो। आं आठ-दस वरसां रै खरचै री कूंत करतां-करतां बांरै माथै में कूकड़ी वणन लागी जणै विरखा में कूटीज्योड़ै घोड़ै दांई गाबड़ झंझोड़ता उठ्या अर सांवळ-रामेसर नै तेड़र बोल्या कै सिंझ्या व्याळू कर्यां पछै गाडी जुतायर मेड़तै चालणो है थांरी भरती सारू, सो त्यार हुय जावो। दूजै दिन इस्कूल में बांरो दाखलो करायनै जोसीजी म्हाराज वावड़्या जणै बांरी पाघड़ी रै पेचां री घसक देखण-जोग ही।

गैल रा काळ-वरसां में विरखा घणी फोरी हुवण सूं गांव री माळ रा घणकरा वेरां में पाणी निठग्यो हो। अगूणी माळ में आयोड़ा जोसीजी रा पण वाढ रा दो वेरा खोडा हुयग्या हा। आथूण रा दो वेरां मांयसूं गोदारांआळै रो तो तळो घिस्योड़ो हो अर पाणी पण धपाऊ हो, पण स्यामसागर रो पाणी पींदै जा लाग्यो हो। खेती धणियां-सेती तो पछै हुवै, पैली तो पाणी सेती हुवै। गांव रो दाव-सांसर पण तिसायो-तिसायो च्यारूं कूंटां भटका मारै हो। सो जोसीजी म्हाराज खान करायनै तीनूं वेरांनै खोदावण री तेवड़ी। विचार्यो कै पोळा बैठा लोग पण सिलै लागसी। अेक स्याणो चांदारूण सूं तेड़ियो आयो, जिकै सावळ नेठाव सूं तीनूं वेरां री जांच कर्यां पछै समाध्यो कै स्यामसागर में तो पाणी हु जासी पण अगूणै वाढआळै वेरां में हाल दो वरस हाथ घालचा मती, मनै वा माळ सूकी लखावै है।

खोदाई रो माकूल सरंजाम हुयां व्यास फूसारामजी रै काढ्योड़ै मौरत, स्यामसागर माथै स्यामजी म्हाराज रै थान माथै जोत करायनै नारेळ वधारीज्यो। खान करायां पछै हाथ तीनेक खोदाई हुयी जणै हेठै भाठो आयग्यो। डोबळ्यां दिरायां ई भाठो नीं वीखर्यो जणै वळी रा घमीड़ बोलाया। स्याणै जठै दस हाथ माथै पाणी वतायो हो बठै पनरै हाथ वळी मेल दी। ऊभी वळी कार नीं करी जणै पाणी री सीरां में जाडी वळी चेपी। तीजै दिन पनाळो डाकणो सरू हुयो तो इसो कै मांय काम करता लुहारां नै वारै खांच्या जितै-जितै तो बारै हाथ पाणी चढग्यो। भीज्या गाभां हांफतो थको मोलो बाबो हाथ जोड़र जोसीजी म्हाराज सूं बोल्यो कै बापजी, म्हारा तो अैरण, घण, हथोड़ा अर दूजा सै औजार मांयनै ई रैयग्या, जणै मुळकता थका जोसीजी म्हाराज खजूर छापआळो अेक नोट पकड़ावता बोल्या कै कीं कोनी, तड़कै अजमेर जायर नूंवा मुलाय लायै। वेरै में पाणी आठ वळधां हुयो।

उमाव सूं जोसीजी म्हाराज रो मन छोळां चढग्यो। मांय रा मांय बोल्या— सुगन चोखा हुयग्या है। संज-सूत सै वपराया थका है अर काम गेड़ै चढ्योड़ो है। वळतै हाथ वाढ रै पण वेरां रो दिन वावड़ जावै तो कांई वेजा है? दो वरस कुण देख्या? आघेटै छूट्या काम मुसकलां ई पार पड़ै। स्याणै वेलासक वरज्यो है, पण बो कुणसो रामजी

है ? टाबरां मांयसूं किणी-न-किणी रो तो भाग जोर मारसी । आगै 'स्यामजी म्हाराज सहाय छै' । सो दूजै दिन बै तो लेय लाव् लसकर वाढ में जाय पूग्या अर अेकै सागै ई दोनूं वेरां री खोदाई सरू करवाय दी । काम री झींक उडण लागी । लगोलग पनरै दिन वेरां में डोबळचां रा घमीड़ उठचा अर दूजा पनरै दिन वळचां रै भचीड़ां सूं चिणगारचां उडती रैयी । रुपिया पूरा पांच हजार नाख दिया दोनूं वेरां में, पण पाणी रो टोपो ई कठै ? रोप्योड़ो पग आज तांई पाछो नीं उठयो हो जोसीजी म्हाराज, पण कुदरत रै आगै कांई जोर चालै ? मन मारनै काम सूं हाथ खांच्यो । दो दिनां तांई वदजायको रैयो ।

दूलै परजापत नै आपरै घर री नींव् खोदतां रेजगारी सूं भरी कुलड़ी लाधी उण दिन जोसीजी म्हाराज रै मन में नूंवो चानणो हुयो कै आपणा वडेरां जूनोड़ी हेली में कठैई–न–कठैई धन जरूर गाडचो हुसी । कोई स्याणो ठावी ठौड़ वताय दै तो दळदळ भागै । सुण्यो कै फलाणै गांव् में अेक गुसांई बाबो है जिणनै जमी में गडचो धन परतख दीसै । आपरो वैत मेलनै बुलायो । गुसांई बाबो जूनोड़ी हेली री सगळी साळां, वरसाळचां, तिबारचां अर इगदरां में अेकर अधर-अधर पग मेलतो इयां फिरचो जाणै कादै में चाल रैयो हुव् । पछै रसोई आळी साळ में अेकर ओजूं वड़चो अर फिरतां–फिरतां अेक ठौड़ बींरा पग चिपग्या, जाणै पगतळचां में 'मैटल डिटैक्टर' लाग्योड़ा हुवै । बींरै चोफेर आंगण माथै कोयलै सूं चांको दिरीजग्यो जणै बोल्यो कै तीन हाथ माथै धन लाधसी । बाबो तो आपरी सीख लेयर वाव्ड़चो अर रात रा सोपो पड़चां पछै जोसीजी म्हाराज री मौजूदगी में बांरै दोनूं बेटां वारी-वारी सूं कुदाळ चलायी । तीन री वजाय च्यार हाथ ऊंडो खाडो खोद नाख्यो पण धन तो आघो रैयो, कोयलां री हांडी तकात नीं लाधी । जोसीजी म्हाराज नै आखी रात नींद नीं आयी ।

पण जोसीजी रै मन में जिको दीवो अेकर चसग्यो हो, बो राज नीं हुयो । हु जावै तो पछै जोसीजी म्हाराज ई कांई ? नतीजो ओ हुयो कै पनरै–वीस दिनां रै छेड़ै कोई-न कोई स्याणो आवतो रैयो अर कोई-न-कोई आंगणो फोड़ीजतो रैयो । छव् महीनां हुवतां-नीं- हुवतां सावत आंगणै रै नांव् कोई भखारी तकात नीं वची । घर रा सै लोग काया हुयग्या । मन में सै भींकता, पण जोसीजी म्हाराज नै वरजै, इती तागत किणी में नीं । नाहर रै मूंढै कुण जावै ? करतां– करतां छेकड़ अेक जोतसी आयो, जिकै जोसीजी म्हाराज रो हाथ देख्यो, बांरै दोनूं बेटां रा हाथ देख्या अर गरमी री छुटचां में जोधपुर अर मेड़तै सूं आया थका टाबरां रा हाथ देख्यां पछै बोल्यो कै म्हाराज, थे तो फाऊ ई तरळा करो हो । गडचोड़ै धन री रेख थांरै तो आथ ई कोनी । ओ थांरो पोतो है नी रामेसर, ओ थांरी ऊमर में आसी जणै धन इणरै हाथ लागसी । जोसीजी पागती ऊभै रामेसर सामी जोयो जणै बांरी आंख्यां में चावना ही कै ओ अबार, इणीज घड़ी म्हारी ऊमर में आ जावै तो चोखो । पण आ वात हुवण आळी को ही नी । जोसीजी अेक लांबो निसांस नाखर उठचा ।

माघ उतरनै फागण लाग्यो हो। आभै रै आंगणै ठोड़-ठोड़ धोळै वादळां रा चूंखा विखरचोड़ा हा, जाणै मोसम रै धाणकै अणसध्या हाथां सूं रूई धुणी हुवै। जोसीजी म्हाराज हेली रै वारै चांतरै माथै अेकला बैठा हा। चांतरै माथलै नीमड़ै रा खिरता पीळा पान हवा में तिरता होळै–होळै हेठै आवै हा जाणै देवतावां रा विवाण उतरता हुवै। दो– तीनेक पान जोसीजी री पाग माथै पण आय बैठचा हा। गाबड़ ऊंची करनै बां नीमड़ै सामी जोयो। काळूंस खायोड़ा डाळा ठेट मथारै तांई नागा हुयग्या हा। आंनै देखर बां अेक निजर हेली री भींतां माथै नाखी अर अेक लांबी निसांस नाखता हिरदै री ऊंडी वावड़ी रै पगोथियां उतरग्या। डावै पसवाड़ै री भींत रै खोखालड़ै मांयसूं जाणै कोई बोल्यो— अरे चुनीलाल, नांव तो तैं कमायो, पण घर गमायो रे बावळा! वडेरां री अणथाग पूंजी नै तैं गेलै घाल दी। इतो नागो हुयर नाचण री कांई दरकार ही भाया? कांई नामून काढणो हो? कठै तो जमी सूं दो आंगळ ऊंचो चालतो हो अर कठै अबै वैंत-वैंत करजै में कळीज्यो थको लड़थड़ै! 'जोसीजी म्हाराज' रो ओ विरद तनै कितो मूंघो पड़चो? अबै तो लागग्या थारै सिंदूर–माळीपाना? पण अै कांई काम आसी रे बेटी रा बाप? थारी घी-गवां री रोटी, अमल अर भोळियो तो जगां–री–जगां कायम है पण बां टाबरां रो पण विचार करचो हुतो जिका बारवास में पढाई री मार भोगता थका जवां री लूखी रोटचां सूं बाथेड़ो करै है। मैं तनै किती वार वरज्यो पण तूं तो गिनार में ई को लायोनी। अबै मूंढो पिलकावण सूं कांई कारी लागणी है? बां वातां नै तो अबै घोड़ा ई को नावड़ै नी। रायां रो भाव तो रातै ई गया। अबै भोग थारै करमां रा फळ। म्हारै माथै आंख्यां काढण सूं कांई हुसी? आप कमाया कामड़ा किणनै दीजै दोस?……

आघता हुयोड़ा जोसीजी म्हाराज दाकळता थका जोर सूं बोल पड़चा– बोलो बळ। माथो खायग्यो टर- टर करतो। चाल्यो है मनै सीख देवणनै। थारै सरीसा किता ई बुभागर टांग हेठकर काढ दिया। हुं ...ऽ, राबड़ी कैवै मनै ई दांतां सूं खावो। छोटै मूंढै वडी वात करै। किती वार हुयगी है कागलै दांई कुरांय-कुरांय करतै नै!

अर जोसीजी म्हाराज देख्यो कै साचाणीज नीमड़ै रा नागा डाळां माथै वस्ती रा सै कागला भेळा हुयर पंचायत जोड़ मेली है अर सै अेकै सागै ई कांव-कांव कर रैया है। बोल्या— गांव में इता नीमड़ा है। आं भैण रै काड़ां नै पण अठैई सूनवाड़ दीसी कांई? उठर हेली में गया। धानआळी साळ रै खूंटै सूं बंदूक उतारी। भाथड़ै मांयसूं सोर री मूठी भरनै नाळ में ऊरी अर गज रा आठ- दसेक बटीड़ मेल्या। छरां री ठोड़ गुंवार रा पांच- सातेक दाणा पधराया। अेक मूठी सोर ओजूं घालनै गज रा बटीड़ बोलाया। गज काढनै खुणै में ऊभो करचो। बंदूक रै कान माथै टोपी चाढनै बारै आया। अेक डाळै माथै कागलां रो अणूतो ई जमावड़ो हो। बीं सामी नाळ ऊंची करनै घोड़ो दाब्यो। घमीड़ उठतां ई अेक तो खिर पड़चो अर वाकी सै कागला डरप्या थका कुरांय-

कुरांय करता जीव लेनै कानी-कानी उड चाल्या । जोसीजी म्हाराज मन में राजी हा कै इण कागलै रै सागै मांयलो कागलो पण फोत खेलग्यो है । हेलो मारतां ई फूसो भांबी दौड़र आयो जणै बोल्या कै जेवड़ी सूं अेक टांग बांधर इणनै नीमड़ै माथै ऊंधो टेर दै । फेर कागलै नै अेक फीटी गाळ काढर वै हेली में गया परा ।

❀ ❀ ❀

इणनै कुदरत री अणबूझ आडी कैवो चावै मांयली तीजी आंख री जोत, कै मोको आयां भावी री परतां मिनख रै सामी कावड़ री तसवीरां दांई खुलण लागै । हूणी परतख दीसण ढूकै जियां निरमळ पाणी में तिरती माछली । जोसीजी म्हाराज रै सागै आज आ-री-आ हुयी । हथाई माथै जुड़ी दीतवारी पंचायत में अेक अळूझै थकै मामलै रो फैसलो सुणार वावड़्या जणै वांनै लखायो कै मांयनै छाती में बट-देसी कीं टूटग्यो है अर अंत-समो आयग्यो है। बां इण भव री आपरी लीला सांवटण री तेवड़ी ।

पोळ मांयली तिबारी में बैठा बांरा दोनूं बेटा न्यारी-न्यारी वहियां में जमा-खरच री रकमां अटकावै हा । जोसीजी म्हाराज बांरै नेड़ा आयर अेक पळ ऊभा रैया । फेर बोल्या— आज संपाड़ो इण चौक में नीं करूं, ऊपरलै झरोखै में करसूं । कलमां कानां में अटकावता बै दोनूं जणा आबकनै वां सामी इचरज सूं जोयो । जोसीजी म्हाराज हळवा-हळवा मुळकै हा । दोनूं बेटा उठ्या अर चौक में पाणी सूं भरी थकी तांबै री लूंठी गंगाळ में तांबै रो ई लोटो राखनै बींरो अेकूको कड़ो झाल्यो । जूनोड़ी हेली रै इगदरै मांयकर नाळ चढ्या अर गंगाळ झरोखै में पुगायी । जोसीजी म्हाराज आपरै दोनूं बेटां सामी जोवता बोल्या— छपनै री साल ओ झरोखो चिणीज्यो जद हूं अठै आयो हो अर जा पछै आज आयो हूं । बेटा बांरै सामी जोवता रैया, समझ्या कीं कोनी ।

सांपड़र उठ्या जणै दुरगै वां कानी धोती आगै करी । बोल्या— आ नहीं, अेक कामळ लाव दोलड़ी । कामळ आयगी जणै आधी तो धोती री जागां पैरी अर आधी ओढनै आंगणै ई सोवता थकां कैयो— हूं थोड़ो पसेव लेसूं रे, अर देख, जे नींद लाग जावै मनै, तो जगायी मती । बै तो इसा सोया कै पाछा उठ्या ई नीं ।

धोळै दोफारै दाग लाग्यो जणै वाहळै में मिनख मायो नीं । सिखरां चढचोड़ै आकरै भाण रो तावड़ो पीळो पड़ग्यो हो अर सरणाटै चढचोड़ो पून खुद सरणाटै में आयग्यो हो । दागियां री आंख्यां सूं चौधारा चालग्या हा । डुसकी खावतै जोधराज रै मूंढै सूं मातर इती बात नीसरी— गांव रो सूरज आंथग्यो । जमी माथै इसै आदमी नै उतरतां जेज लागसी ।

जोसीजी म्हाराज रा भदर हुयोड़ा दोनूं बेटा ढाढां मारता हेली री पोळ में

वड़चा जणै वांनै लखायो कै पगां हेठली जमी पोली हुयगी है, हेली री छातां उडगी है अर भींतड़ा ऊभा रैयग्या हा ।

बारलै चौक रै पायगै में बंधी घोड़ी कनोती उठायां अर डबडब आंख्यां लियां, च्यारूं पगां सूं खूंद करै ही पण वीं सामी जोवण री फुरसत किणनै ही ? □

अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविदयालय
उदयपुर

करतारसिंघ और भरतारसिंघ

— श्रीचंदराय —

करतारसिंघ और भरतारसिंघ दो भाई हा । दोनां रै वीच में जमीं रै अेक टुकड़ै रो मामलो अदालत में चालतो हो । अेक दिन करतारसिंघ विचार करचो— भरतारसिंघ म्हारो भाई है, जमीं रो ओ टुकड़ो बो चावै है तो म्हारो फरज है कै बैनै दे दूं । करतारसिंघ गांव रा चौधरचां नै भेळा करचा अर आपरो विचार सुणायो । सगळां करतारसिंह री घणी वा- वा करी ।

सुलै री खुसी में प्रीति- भोज हुयो । सराब उडण लागी । ब्लैक- अेंड- व्हाइट री कई बोतळां खाली हुयी । करतारसिंघ माथो ऊंचो कर नै बोल्यो— कुण है जको म्हारी जमीं कानी आंख उठाय नै देखै ? गूंझै मांय हाथ गयो । दन-दन री आवाज हुयी । खण भर में भरतारसिंघ री निर्जीव देह जमीं माथै पड़ी ही ।

दस दूहा

— महेंद्र भानावत —

सगळा नाम अनाम है राम नाम है सत्त
सत रै गेलै चालजो इणसूं ही है गत्त

वचपण जोबण पावणा आवै अर जावेह
वूढापो वैरी इसो लारै ले जावेह

कागद बोल्यो कलम नै 'थारो मुंह काळोह'
कलम कयो 'वीरा ! जदी तूं किणसूं वालोह'

रेतघड़ी बोली 'मिनख ! समै रेत संसार
उडसी ढहसी पळटसी रह जासी नीसार'

बोल्यो चाक 'कुंभारड़ा ! माटी मोल अमोल
हांडी तो हींकै चढै ठीकरियां कांइ मोल ?'

'आकासां थांनै पतंग ! हूं ले जाऊं डोर'
'हूं नां आवूं तो भलो थांरो है कांइ जोर ?'

कोयल काळी रंग सूं पण काळो नीं दाग
लावो लेवै जगत रो मीठी दे-दे राग

भणियो पण गुणियो नहीं गुणियो नां भणियोह
जो भणियो गुणियो पुरस बो पाको मणियोह

साख राख रो मेळ है वधै वधावै वेल
साख सरावै राख नै राख भभूतां खेल

मिनख-मिनख में आंतरो मिनख-मिनख में फेर
जो मिनखाचारो करै बो ही मिनख-सुमेर

□

— ३५२, श्रीकृष्णपुरा, उदयपुर

नौकरी

— नाथूराम खड़गावत —

कचेड़ी में गोता खावतै-खावतै अेक दिन मैं अेक रासो खड़ो कर लियो। तहसील में अेक आरजी जाग्यां खाली ही। मैं देख्यो— अबकै गरमी री छुट्यां ई सुख सूं कट जासी और कीं पईसड़ा ई हाथ आ जासी। नाळी कानी आंधी री तो किरपा-महरवानी पूरी-पूरी रैया ई करै है, ऊपर सूं लूवां री लपकां रै लाड-प्यार रो तो वस कैवणो ई कांई। छुट्यां में अेक तो इयां ई जी को लागतो हो नी, आंधी और लू तो हाल रो बेहाल कर दियो। बाबोजी पैली ई चोखा घणा हा, लारै लगा ली राख! इण दुख सूं तंग आयनै आरजी जाग्यां रो नांव सुणतां ई अरजी तहसीलदार साब रै दफतर में विना पूछ्यां-ताछ्यां ठरकाय दी।

अरजी तो दे दी पण पछै जावतां सोच खड़ो हुयो— जे कदास आ अरजी नामंजूर हुयगी तो खोटी बीतसी, लोग कहसी बेटो कोरो ई पढाई रै भार में पूरो हुवै है, पूछै तो गांव रो गिंडकजी ई कोनी। मानखो माटी में मिलसी जिको तो मिल ही सी पण यार-दोस्तां नै अेक छोटो-मोटो तमासो लाग जासी। मरतो कांई करतो? जजी रा पेसगार साब आपणा पुराणा मुलाकाती हा। बांसू इण मामलै में मसवरो करण रो विचार करचो। पेसगारजी बोल्या— तहसीलदारजी सूं मिल लो। देसी आदमी है, कदास काम हु जावै।

दूसरै दिन अेक और आफत आयी। अरजी रै साथै देसी हुवण रो सर्टिफिकेट पेस को करचो हो नी। अबै कांई करां? रेवन्यू कमिसनर री अदालत में अरज करी-हजूर! देसी आदमी हूं, खास वीकानेर रो पुराणो वासिंदो हूं, देसी हुवण रो सर्टिफिकेट चाहीजै है। रेवन्यू कमिसनर साब बोल्या— हूं तो तनै जाणूं कोनी, भाया! म्हारै मूंढै मांयसूं निकळगी—आप तो को जाणोनी, पण हूं तो आपनै आछी तरै जाणूं हूं। रेवन्यूक मि-सनर साब हसण लागग्या। बोल्या— कोई जाणै है तनै, का कोई को जाणैनी? मैं कैयो— साब! अठै तो मनै भूत ई को जाणैनी, वीकानेर में तो लाखूं जाणै है। साब सोचण लागग्या। हूं कैवतो रैयो— कांई करूं साब! वडी मुसकल में फस्योड़ो हूं। आप दे देवो तो वडी महरवानी हुवै। सोचता-सोचता साब बोल्या— है तो देसी ही, कालनै कोई झगड़ो तो खड़ो को हुवैनी? मैं चट हैंकारो भरचो। राम-राम करनै अेक पुरजियो तहसीलदार साब रै अठै पेसकारजी पुगाय दियो।

सिझ्या रा रोटी खा-खूयर तहसीलदार साब सूं मिलण नै गयो। तहसीलदार साब

दुबळा-पतळा आदमी हा, पण हा राजपूत । देखतां ई बोल्या – कांई जात, भाया,थारी ? हूं बोल्यो– साब, हूं तो माळी हूं । तहसीलदार साब बोल्या– बारवीं गिलास में पढै है कांई ? मैं कैयो– पढूं कोनी मालकां ! पास कर लीनी ।

'भलांई पास कर लो, पण आजकाल रा पढचोड़ा राम सूं मिलर आवै है । म्हारै ई अेक बैन रो छोरो थारलै कालेज में पढै है । अकल तो मांयनै पईसै भर ही कोनी । बेटो रात-दिन अंगरेजी छांट बोकरै । इसी ई लारै रंडारू आयी है । आ रे म्हारा सपम-पाट, हूं तनै चाटूं तूं मनै चाट ! आपां तो साची कैवां हां । थारै माथै कोनी, आ तो कोई कूवै ही भांग पड़गी । साळा कोरा अकल रा अजीरण । हुवै तो अेक मिसल रो भुगताण ई कोनी अर वातां वडी-वडी वणावै ।' कैवता-कैवता तहसीलदारजी नै धांसी आयगी ।

हूं बोल्यो– तहसीलदारजी, आपरो फरमावणो ठीक है । आजकाल जमानो इसो ई आयग्यो ।

'जमानै री इणमें कांई वात है ? काम-धंधै री कीं ठा ई कोनी । बेटा आवै अर कैवै म्हांनै नायव तहसीलदार वणाय दो ।'– तहसीलदारजी आ वात कीं जोर सूं कैयी ।

'काम तो तहसीलदारजी, सीख्यां सूं आवै । कोई मां रै पेट मांयसूं तो सीखर आवै ही कोनी । पड़तां–पड़तां ई असवार हुया करै है'– कैवतै-कैवतै मैं दरवाजै कानी देख्यो । अेक आदमी आयो और तहसीलदारजी रै वस्तै में कागद फिरोळन लाग्यो ।मैं सोच्यो— ओ कोई अहलमद दीखै है ।

अहलमद सूं वात करनै तहसीलदारजी कैवण लाग्या– भाई, काम सीखै कुण है ? सगळा आप-आप री अंगरेजी छांटै । हळदी रो गांठियो लेयर पंसारी वणै । ठा-ठिकाणो तो कोई वात रो आथ ही कोनी । कोरी अकड़ावण में ई पूरा हुवै ।

मैं सोच्यो वात विगड़ती जावै है । मतळव री वात तो हाल तांई हुयी ई कोनी । पण खैर कोई वात नीं । तहसीलदारजी री वात सुणनै हसण लागग्यो । बै पूछण लाग्या— कांई वात है ? मैं कैयो– साब ! तजरबै री वात है । विना काम करयां किणी वात रो ठा लागणो मुसकल है । लारलै दिनां अेक तहसीलदार मकी रो खराबो दे दियो । जमीदारां बांनै कैयो कै इण साल तो मकिया लाग्या ही कोनी । तहसीलदार साब देख्यो-बेटी वात तो साची है, कोरा पता-ई-पता दीखै है, मक्यां रो तो नांव-निसाण ही कोनी । तहसीलदारजी नै इण वात रो कांई ठा कै मकिया सिटां आळै दांई बारै को आवैनी, पतां रै मांय लाग्योड़ा हुवै । विचारां नै ठा तो हो कोनी, खराबो दे दियो । विना तजरबै विना, और विना ठा हुयां विना आं वातां रो ग्यान को हुवैनी, तहसीलदार साब ! तहसील-दार साब, आप मानसो कोनी । आं सागी तहसीलदारजी सरू-सरू में जमीदारां नै आ

वात पूछी वताव है कै गुड़ गनै रै ऊपर लागै है का नीचै। इसा-इसा ग्यासां नै तहसील-दार वणावती वगत कोई आ को सोचै नी कै अै लोग तहसीलदारी रै लायक है का नहीं। आप जिसा तजरबैकार आदमी री होड बांसूं थोड़ी ई हुसी !

वात तो मैं इयांई कैय दीनी ही। मन में जाणी ही कै तहसीलदार साब पुराणा आदमी है, नूंवा आदम्यां सूं चिड़ै है। पण म्हारली वात सुणतां ही तहसीलदार साब रो मूंढो उतरग्यो। हां-हूं करता-करता उठर मांय गया परा। जावतै-जावतै मैं म्हारली अरजी री याद दिरायी जद इती ई वात बोल्या कै काल दफतर में आ जायी।

मैं सोची आज तो मीर मार लियो। तहसीलदारजी रै कमरै सूं बारै निकळतां ही बांरो अहलमद, जिको म्हारै साथै ई बारै आयग्यो हो, बोल्यो– आज तो थां खूब खरी-खरी सुणायी, तहसीलदारजी नै तो बोलणजोगा ई को राख्या नी।

अहलमद आळी वात म्हारै समझ में को आयी नी। हूं बोल्यो– मैं तो इसी कोई वात ई को कैयी नी। अहलमद बोल्यो– कैयी कांई कोनी, थां तो गजब गुजार दियो। मकी रो खराबो तो आं तहसीलदारजी ई दियो हो। गनै रो गुड़ कठै लागै, आ वात पूछणआळा तहसीलदारजी भी अै ही हा। खूब कैयी ! तहसीलदारजी रो मूंढो फक कर दियो। आखर कालेज में पढो हो नी।

आ वात सुणतां ही म्हारो तो ऊपरलो सांस ऊपर अर नीचलो सांस नीचै। होस उडग्या। जी-दोरो न्यारो हुवण लागग्यो। मरतो-डूबतो घरै आयो। तहसील में जायर फेर आपां तो मूंढो ई को देखायो नी।

अेक दिन पेसगारजी सूं मिलणनै कचेड़ी गयो। पेसगारजी नै सारी वात वतायी। बै मनै रेवेन्यू अफसर रै दफतर में लेयग्या। अेक मोटी-सी मिसल काढनै म्हारली अरजी रै लारै तहसीलदारजी रो लिख्योड़ो हुकम दिखायो। हुकम ओ हो —

'इस शख्स की तालीम तो बहुत ज्यादा है पर हमारे काम का आदमी नहीं है। हमें तो अैसे आदमी की जरूरत है जो खजाने के काम से वाकिफ हो।'

आपां देखी, चालो सस्ता छूटचा। जान वची लाखूं पाया। भोळै बामण भेड़ खायी फेर खावै तो राम दुहायी। □

मायड़ भाषा

— उदयवीर शर्मा —

तीन क्रोड़ पूतां री मायड़ हिवड़ै री उन्नत आसा
जन-जन रै मनड़ै री मूरत म्हारी आ मायड़ भाषा

जिण भाषा में निसरै सोरा हिवड़ै रा मीठा उदगार
बा है म्हारी मायड़ भाषा राजस्थानी जिणसूं प्यार

जिण बोली में घूंटी लेयी दूध पियो जिणमें ले मोज
हिवड़ो हुळस्यो जिणनै बोल्यां वीरां में प्रगट्यो बीं ओज

बा है म्हारी मायड़ भाषा राजस्थानी गुणपूरी
बाळै सूं वूढो नित गावै जिणरो जस भूरी भूरी

हुंसर हुंसरनै मरणो सीख्या देसधरा पै हिवड़ो खोल
रज-रज हुवणो सदा सिखायो मायड़ भाषा रा ही बोल

जोस-दिवाणी, तन- फड़काणी रस-वरसाणी, सांत सरूप
साहित री वगिया री सौरभ सीधी, मोहक, सुगणो रूप

वीरां री बाणी घणगूंजी भगती री फूटी रसधार
मायड़-भाषा में पुरजोरी ग्यान करम रो कर सिणगार

तेजो, कूजां, लूर, पींपळी रसभरिया मनभावण गीत
इणसूं जलम्या, मान वधायो आखै साहित रो अणभीत

टींटोड़ी री तान सुरंगी फोगां री मोहक महकार
मायड़ भाषा री सै गावै पुळक-पुळकनै जैजैकार

जिणरो साहित जिणरी भाषा पनपैगी नित पा सत्कार
उजळी मणियां निपजै बोजां चोतरफां हो जैजैकार

□

— राजस्थान साहित्य समिति
विसाऊ (झूंझुनू)

'वरसगांठ'-लेखक री वरसगांठ

— श्रीलाल नथमलजी जोशी —

[स्वर्गीय श्री मुरळीधरजी व्यास 'राजस्थानी' आपणी मातृभाषा रा अनुपम सेवक अर वीकानेर रै राजस्थानी कथाकारां में अग्रगण्य हा । बै राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान रा पैला पीठाध्यक्ष हा । श्रीयुत श्रीलाल नथमलजी जोशी घणां वरसां तांई उणांरै निकट संपर्क में रैया । उणांरी कलम सूं व्यासजी री वरसगांठ संबंधी संस्मरण अठै प्रस्तुत है। ध्यान में लावण री वात आ भी है कै 'वरसगांठ' व्यासजी रै पैलै अर बहुचर्चित राजस्थानी कहाणी-संग्रह रो नांव है जिणमें इण शीर्षक री अेक कहाणी छपी है । — संपादक]

मनै याद कोनी किता वरसां तांई ओ सिलसिलो चाल्यो, पण फेर भी मोकळा वरसां तांई चैत सुदी बारस नै हूं टाबरां अर दोस्तां नै लेयर राजस्थानी रै प्रसिद्ध साहित्यकार मुरळीधरजी व्यास रै घरै बांनै वधाई देवण नै जाया करतो । म्हारी छोटी लड़की प्रभा पारीक री वरसगांठ भी चैत सुदी बारस नै आवै इण कारण बा भी व्यासजी सूं प्रेरणा लेवण नै, बांरै तिलक काढण नै, प्रायः हर वरस म्हारै सागै गयी । वडी लड़की कांता पारीक भी अकसर जाया करती ।

लारला केई वरसां सूं मैं अेक टेप रेकारडर प्राप्त कर लियो अर उण में ऊंचै सुरां में स्वस्ति मंत्र रेकार्ड कर लिया हा । मुरळीधरजी हा तो लालाणी व्यास, पण घर बांरो कीकाणी व्यासां में है । कीकाणी चौक में पग राखतां ई हूं टेप ऊंचै सुर में खोल देवतो अर सगळां रो ध्यान म्हारै कानी आकृष्ट हुय जावतो । व्यासजी री गळी में तो सागीड़ी रोनक लाग जावती । लुगायां अर टाबर घरां सूं निकळ-निकळर बारै आय जावता । टाबर तो प्रायः व्यासजी रै घर में आय जावता । व्यासजी रै तिलक, माळार्पण अर मूंढो अैंठावण री रसम सगळा टाबर कोड सूं देखता ।

प्रभा जद अेक वार लोकगीत सुणाया तो सगळी लड़क्यां रो उत्साह वधग्यो, अर बै सालोसाल धूमधाम सूं लोकगीत गावण नै भेळी हुय जावती ।

बठै अेक तरै री छोटी-मोटी विचार-गोष्ठी जुड़ जावती । सगळां सूं पछै व्यासजी आपरो सनेसो सुणावता । आं मांयसूं अेक तो म्हारै कनै आज तांई टेप करयोड़ो है जिणमें व्यासजी री बाणी सुरक्षित है । ओ काम जदपी अकादमी अर आकाशवाणी नै करणो चाहीजतो, पण मनै ठा कोनी कै बां आ जागरूकता राखी का नईं ।

आपरै सनेसै में व्यासजी इण वात माथै मोकळो अणेसो दरसायो कै इतै सिमरथ साहित्य री धणियाणी हुवतां थकां भी राजस्थानी नै हाल प्रांतीय भाषा रो दरजो मिल्यो कोनी अर इण कारण संविधान री आठवीं सूची सूं उणरो नांव बारै है। व्यासजी केई दूजी भाषावां रा नांव भी गिणाया जिकी सगळी भांत राजस्थानी सूं हळकी पड़ै पण आठवीं सूची में सामल हुयां पछै किरोड़ूं रुपिया बांरै विगसाव माथै सरकार खरच करण लागगी। राजस्थानी अबार तांई जिकी मंजलां पार करी है, उणांरो श्रेय लिखारां रै व्यक्तिगत प्रयासां नै है, सरकार तो इण बाबत निष्क्रिय है।

व्यासजी री व्यथा अर उणांरै आक्रोश रो पतो इण वात सूं लागै कै असी वरसां री सफर तै करण रै बावजूद भाषा-संबंधी उणांरै उत्साह में किणी भांत कमी आयी कोनी। बां कैयो— "आपांरी भाषा नै सरकार इती कांई माड़ी गिणली ? जे जरूरत पड़ै तो आपांनै राजस्थानी री मानता सारू आंदोलण करण नै भी त्यार रैवणो चाहीजै, कारण आ सरकार अरजी री नईं, आंदोलण री भाषा सावळ समझै।"

व्यासजी रै मूंढै सूं आंदोलण री वात सुणर सगळां रा रूं खड़ा हुयग्या, अर व्यासजी री आंतरिक भावनावां री म्हां लोगां हिरदै सूं सराहणा करी।

वरसगांठ- आळै दिन व्यासजी दिनूगै सूं ई मनै अडीकणो सरू कर देवता, अर जद हूं दळ- बळ सूं पूगतो तो छोटा—वडा सगळा घणा राजी हुवता।

व्यासजी कैया करता कै जीवतां थकां तो कोई पूछै कोनी अर मरचां पछै सोक-सभावां करै !

मनै याद है जद व्यासजी री सितरवीं वरसगांठ आयी, तो उणरी मैं आगूंच योजना वणायी। लाडेसर रै संपादक भाई रतन शाह नै लाडेसर रो विशेषांक काढण खातर लिख्यो। बांरो वावड़ती डाक सूं उथळो आयो— सामग्री भिजवावो तो हूं विशेषांक छाप देसूं।

इण तरै रा आयोजनां में वीस- तीस री उपस्थिति सूं मनै संतोस नईं हो, इण कारण आयोजन राख्यो फूलबाई रै कूवै ऊपर, हड़मानजी रै मिंदर (जोशीवाड़ो, वीकानेर) में, जिणमें साहित्यकार बंधुवां रै अलावा समाज रा दूजा मानीता लोग- लुगाई भी सैकड़ूं री संख्या में भेळा हुया, अर बो आयोजन वीकानेर खातर अभूतपूर्व कैयीज सकै है। उण में व्यासजी नै अेक मुद्रित-मंडित प्रशस्ति पत्र अर शाल भेंट करचा। उण आयोजन में स्व० नाथूरामजी खड़गावत रो भासण पूरै विस्तार सूं हुयो। उणी दिन भाई रतन शाह लाडेसर रो विशेषांक भेज दियो जिणरै वितरण सूं आयोजन री घणी सोभा वधी।

मनै याद आयग्यो, इणरै पछै ई व्यासजी रै घरै जायर वधाई देवण रो क्रम मैं सरू करचो हो। अेक साल हूं रामचरितमानस रै अखंड पारायण रै सिलसिलै में बेटी

प्रभा समेत अळगै गांव गयोड़ो हो, इण कारण वधाई देवण नै पूगीज्यो कोनी। संयोग री वात— उणी साल व्यासजी नै धर्मपत्नी रै निधन रो आघात सैवणो पड़चो। जद मिलणो हुयो तो बोल्या— थे वरसगांठ माथै आया कोनी, देखलो, जोड़ी खंडत हुयगी।

जा पछै हूं हाजर हुवण रो ध्यान राखतो अर कदैई गैरहाजर हुयो कोनी। उणांरी आखरी वरसगांठ माथै अेक घटना घटी। टीको काढर ऊपर चेपण खातर चावळां री जिकी पुड़िया म्हां थाळकियै में घाल राखी ही, बा मारग में पड़गी। कांता बोली--चावळ पाड़ोस्यां रै घर सूं लेयलो, नईं तो व्यासजी वैम करसी। चावळ तो म्हां लेय लिया, पण बा पुड़िया पड़गी जिकी तो पछै पड़ ई गी, व्यासजी री दूजी वरसगांठ फेर आयी कोनी। संवत २०४० री माघ सुदी १४- १५ नै बै श्रीजी शरण हुयग्या। □

— सोनगिरी रै कूवै कनै, बीकानेर

अंतरजामी !

— मुरळीधर व्यास —

लुगाई— थांरै लारै आर कांई सुख पायी ?

माईत— घाघरै रो ढेरो बणग्यो, बेटा !

संतान— म्हांरो थां कांई करचो ?

मिनख विलखो मूंढो कर नै अेकरसी- अेकरसी सगळां सामो जोयो। फेर आप री देह कानी जोयो। फेर अकास कानी मूंढो करचो। दो निसांसा नाख्या। माडाणी मूंढै सूं नीकळचो— हे अंतरजामी ! □

मैं माटी रो दीप

— दीनदयाल ओझा —

मैं माटी रो दीप, धरा पर उजियाळो वरसाऊं

१

म्हारै हिवड़ै नेव, अधर पर बळती वाती रैवै
झाटां झेल पवन री, तन मन वात अेक ना कैवै
अेक ऊजळी आस हियै में, छोज–छीज हरखाऊं
मैं माटी रो दीप, धरा पर उजियाळो वरसाऊं

२

मरणो मन में धार, धरा पर जिकै हरावळ आवै
मेट अंधारो धरती रो नित, नाम अमर कर जावै
हूं म्हारै बूथै उणियारै, नानो नेम निभाऊं
मैं माटी रो दीप, धरा पर उजियाळो वरसाऊं

३

धुन रा धणी भोम पर आयर, ना भरमै- भटकावै
अपणै प्रण नै पाळ, अमेट रेख धरा लिख जावै
घणै अंधारै नित उजास दे, मैं बळ हरख मनाऊं
मैं माटी रो दीप, धरा पर उजियाळो वरसाऊं

४

सूरा संत भगत अपणै मुख निज- पर री ना कैवै
सगळा बोल अबोला रह- रह, घणै हेत सह लेवै
छोड जगत री वात, मून रह, मैं नित सुख विसराऊं
मैं माटी रो दीप, धरा पर उजियाळो वरसाऊं

५

जोगी जती तपी जगती रा, अवगुण मन ना धारै
जग- हित अरपण कर तन मन नित, अपणो धरम विचारै
म्हारी भी अभिलाष धरम धर, दे उजास मिट जाऊं
मैं माटी रो दीप, धरा पर उजियाळो वरसाऊं

□

— विनाणियां रो चौक, वीकानेर

राजस्थानी री उन्नति किण विध ?

— नागरमल सहल —

अेक वार जर्मनी रा पांच-सात विद्वान् इलाहाबाद विश्वविद्यालय रो कोई विज्ञान विभाग देखण नै गया हा। जावती वखत बठै रै प्रोफेसर जर्मनां री राय मांगी। वै टाळमटोळ करता रैया, पण छेकड़ कैवणो ही पड़्यो कै साची वात पूछो तो आ है कै थे लोग काम कमती अर वातां घणी करो। साहित्य में नव रस है पण आज रै भारत में वतरस नवूं रसां नै जाणै मात दे दी। विचारां री चरचा करणिया दर्शन-शास्त्री वणै, पण वातां रा चटकारा लेवणियां री पूछ अजकालै कीं वेसी ई हुवण लागी दीखै है। ईमानदारी सूं काम करणियां नै कोई पूछै नीं, अर सांग करणियां रा पौबारा पचीस। जोधपुर रै इंजीनियरिंग कालेज रो नांव सगळै हिंदुस्तान में हो जद इणरा प्रिंसिपल हा गर्डे साव। अेकर बांनै भाषण देवणो पड़्यो जद वस अेक मिनट बोल्या हुसी। आ ही कैयी कै बोलणो मनै आवै कोनी, आप तो म्हारो काम देखो। सगळा विभागां में आज आ शिकायत वध रैयी है कै लोग काम नहीं करणो चावै, वस पैली तारीख नै तनखा मिल जावणी चाहीजै। मकान री नींव मजबूत नीं हुवैला तो ऊपर रा महलमाळिया किताक दिन टिकैला ? पैली जद सौ वरस री ऊमर हुया करती तो पचीस वरसां तांई बस अेक ई काम हो— पढ-लिखर गुणी वणनो। आज तो फिकर है परीक्षकां रै नांवां री। आज फिकर है इण वात री कै साक्षात्कार लेवण सारू कुण-कुण कठै सूं आ रैया है। वस, बांनै पोटायर आपणो काम वणावण रो पूरो ध्यान है। अेम० अे० में फस्ट डिविजन में फस्ट आयग्या जिका तो आयग्या, पण 'आगै कवन हवाल ?' इंछा ज्ञान वधावण री नीं, वस, जियां तियां डिगरी लेवण री है। वात करै अंगरेजी नै पुस्तकालय री भाषा (Library Language) वणावण री, पण आवै कोनी अंगरेजी रो कको- कोडको ई, अर समझणो चावै अंगरेजी री पोथ्यां नै। कीड़ी जे पांच मण री गुड़ री भेली ले जावै तो आज रा पढणिया अंगरेजी री पोथ्यां समझै। जद हिंदी में कूड़ी-साची दो-च्यार पोथ्यां रै अनुवाद सूं ही काम चालै तो मूळ सूं कुण माथापची करै ? आगलै दस-पनरै वरसां में पुस्तकालयां में अंगरेजी री पोथ्यां में वस दीमक लागैली।

कोई भी भाषा रो दूजी भाषा सूं विरोध नीं हुवै। बै तो सागै- सागै फूलै- फळै। राजस्थानी रो विकास हुवै तो हिंदी रो ह्रास कियां हुवै ? जिण भाषा में ताकत हुसी बा आगै वधसी। वाकी निमळी गंगा रो वैवाव नीं हुयर तळाव रो ठैरयोड़ो पाणी

हुयर रै जासी। राजस्थान में जलम लेवण सूं ही कोई राजस्थानी रो विदवान कोनी वण जावै। इण वासतै म्हारो कैवणो है कै राजस्थानी रा विदवान वणना चावो तो घणकरी भाषावां री जननी संस्कृत पढो। संस्कृत नहीं तो कम-सूं-कम अपभ्रंश तो पढो। राजस्थानी रा दो विश्वविद्यालयां में अपभ्रंश रो अतो-पतो ई नीं है। पुराणो काव्य भी आयो– गयो, कारण कै उणरी टीकावां कोनी मिलै। विना टीका रै माथा-फोड़ी कुण करै ? इण वात रा शिकार हुया कवि नारायणसिंह भाटी। उणां री 'सांझ' तो पढाई में राख दी, क्यूंकै श्री गणपतिचंद्र भंडारी उणरी सटीक व्याख्या कर दी। उणांरी 'कळप' जिसी पोथ्यां तो कळपती ई रैयगी। हिंदी रा केशवदास प्रेत-कवि कैया जावता, क्यूंकै लाला भगवानदीन री टीका विना उण प्रेत सूं जूझै कुण ? कैवत है— कवि को देन न चहै विदाई, पूछै केशव की कविताई। लाखपसावां री तो वात छोडो, सौ-पचास पसावा नीं देवणिया ई कठिन काव्यां नै लेयर सामनै धरता अर रजवाड़ां रा पईसा वच जावता।

आज रो जमानो तुलनात्मक अध्ययन रो है। खाली हिंदी पढचोड़ो, हिंदी रो विद्वान कुण कद वण्यो है ? पंत, प्रसाद, निराला, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, केशवप्रसाद मिश्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी— कोई भी नाम ले लो, सगळा लोग अेकाधिक भाषावां रा विद्वान हा, दूजी भाषा भलांई संस्कृत, बंगला, उर्दू, अंगरेजी— कोई हुवो। राजस्थानी रा विद्वान, खाली राजस्थानी री पोथ्यां पढर ई कोई वण सकै तो वांझ रै बेटो भी हुंय सकै। परंपरा अर वातावरण दोनां सूं आदमी रो निरमाण हुवै। जद ई तो व्यांव करती वखत घर- वर देखां, खाली वर अर खाली घर नहीं। घर री कुलीनता अर वातावरण री निरमळता ई मिनख नै मिनख वणावै। राजस्थानी रा पुराणा लोग तो लगन सूं परिश्रम करता। सूर्यकरणजी पारीक, नरोत्तमदासजी स्वामी वगैरै नै काम करतां मैं घणी वार देख्या। कविता री अेक-अेक पंक्ति नै ई नहीं, अेक-अेक शब्द रो अर्थ समझण री स्वामीजी पूरी कोसीस करता। छायावादी कविता नै खाली छाया वतार टाळ कोनी देवता।

अेक वार रेवतदानजी चारण बोलता थकां नूंई-पुराणी कवितावां रो पाठ भी करयो। लोगां वाहवाही देवण में कसर नीं राखी, पण मैं जद सभा में ही कैयी कै सुण– णियां में मुसकल सूं दो–च्यार आदमी ई वांरो अरथ समझ्या हुसी। मूळ ग्रंथ पढ्यां विना बांरी अठै–ब्रठै री आलोचना पढण सूं साहित्य रो रस कियां मिल सकै ?

महेंद्र चतुर्वेदी अर भोलानाथ तिवारी रै 'व्यावहारिक हिंदी–अंग्रेजी कोश' जिसै राजस्थानी रै संक्षिप्त कोश री कमी घणी खटकै। रामचंद्र वर्मा रै 'संक्षिप्त हिंदी शब्द-सागर' जिसो पांच सौ- सात सौ पेजां रो कोश राजस्थानी रो आज तांई नीं छप्यो। कोई ढंग रो, प्रामाणिक राजस्थानी भाषा अर साहित्य रो इतिहास नीं छप्यो। राजस्थानी रो सगळां सूं कमजोर पक्ष है आलोचना रो। खरी आलोचना कोई सुणण

नै त्यार ई कोनी। अेक पोथी री आलोचना मैं तीन–च्यार वरस पैली 'जागती जोत' में छपण सारू भेजी। भूल– चूक सूं बा छपगी तो वतायी ('वतायी' इण वासतै कै आज तांई केई वार लिखण रै वावजूद बा प्रति म्हारै कनै नीं भेजी गयी) पण वीच में लेखक कानी सूं कीं टोकाटोकी हुयगी का भगवान जाणै और कोई कारण हुग्यो। आलोचना रै नीचै म्हारो नांव भी नहीं छप्यो वतायो। जिण साहित्य री आलोचना समृद्ध नहीं हुवै बो साहित्य सुपनै में भी पनप नहीं सकै। 'वादे वादे जायते तत्त्वबोध:' आळी वात संपादक लोग सफा भूलग्या दीखै। आलोचना रो मतळब हुवै — आ यानी समन्तात् अर्थात् च्यारूं कानी सूं। लोचना यानी देखणो, भाळणो। Appreciation रो मतळव खाली तारीफ नहीं, अर Criticism रो मतळव साहित्य में कोरी निंदा करणो नहीं है। राजस्थानी में कवियां पर कोई ठायी आलोचना री पोथी नीं है, अर आ ही वात उपन्यास, कहाणी, नाटक वगैरै रै बावत कैयी जा सकै है। 'परंपरा' रै किणी अंक में कवियां री थोड़ी–वहोत चर्चा हुयगी, पण तळस्पर्शी आलोचना रो घणो अभाव है। आलोचक तो लेखकां रा हिताळू हुवै, दुसमण नीं। आछी आलोचना सूं साहित्य रा कृतिकार सुधरै ही, विगड़ै नीं। रागद्वेषपूर्ण आलोचना छींटाकशी है, आलोचना नीं। आलोचना रो मतळब ई है— Reasoned opinion. 'अहोरूपमहोध्वनि:' नै ही राजस्थानी रा लेखक आलोचना समझै तो वांरी मरजी। पुस्तक छपावण रो मतळब ही है लोगां री राय जाणणो। पतो नहीं क्यूं संपादक अर क्यूं कृतिकार आलोचना नांव सूं ही डरै। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी लड़खड़ावती हिंदी नै खड़ी करी। आचार्य नरोत्तमदासजी स्वामी 'जागती जोत' रै माध्यम सूं राजस्थानी नै अेकरूपता देवण री कोसीस करी, पण संपादक वदळण री नीति आडी आयगी। साहित्यिक भाषा वणन सारू अेक माणक रूप तो सामनै आवतो रैवणो ई चाहीजै। लोग आप–आप री बोली में भलांई लिखता रैवो, पण कोई अेक पत्र तो इसो हुवणो चाहीजै जिको सगळै लेखां नै टंकसाळी भाषा में ढाळ सकै। ओ काम बो ई कर सकै जको पूर्वाग्रह सूं ग्रसित नीं हुवै। भाषा अर साहित्य रो निर्माण स्वार्थी जमात नीं कर सकै। आपरो नुकसाण करनै भी राजस्थानी रो हित सर्वोपरि मानै बो ही लगन–आळो कर्मठ इण काम नै विघ्न–बाधावां झेलतां थकां कर सकै। सती सावित्री सीता सूं काम कोनी चालै। देखणो है, आज री नारी कुण-सी ! राजस्थानी रो पुराणो साहित्य गौरवशाळी है आ वात १९८५ में घणो महत्त्व कोनी राखै। समै री दौड़ में लारै रैवणिया खोवैला ही खोवैला, पावैला कीं ई नहीं। भींत माथै लिख्योड़ी वात समझर टैमसर काम करणिया ई पार लागैला। □

—वासंती, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर

तीन कवितावां

— सांवर दइया —

अेक

□

मैं वडभागी खरो, पण जोर कांई ?
मैं दीवो, म्हारी उमर भोर तांई !
थां जोगो हूं–क नईं, थे ई जाणो,
पग देख रोवूं, नाचूं मोर दांई !
जद देखूं लेणायत ऊभा लाधै,
घरां आवूं–जावूं मैं चोर दांई !
धरती हरी हुयी हुवै तो बा जाणै,
मेह आया अर वरस्या लोर दांई !
बीं हेत, बीं अपणायत खातर आज
भटकै मन–राम शबरी–बोर तांई !

दो

□□

आखै जंगळ री कलम वणा
सात समंदरां री ले स्याही
धरती रो कागद करचो
मैं ही
आ सोच—
हरि गुण अणंत है
मांड–मांड थक जासूं ।
पण देखो !
दो ओळयां मांड
सोच–सागर में डूब्यो
कांई लिखूं ...... ?
...............?

तीन

□□□

प्रीत
ओलै-छानै पळी
परखी मैं
आखर री आंख सूं !
हूक
होळै-सीक उठी
सुणी मैं
आखर री आंख सूं !
गांठ
मनां मांय पड़ी
देखी मैं
आखर री आंख सूं !

लोकशब्दां रो सांस्कृतिक अध्ययन

— रावत सारस्वत —

लोकज्ञान अर लोकसंस्कृति री जड़ां किती गैरी हुवै, इणरो आभास देवण-आळा वै शब्द है जिकै हजारूं वरसां सूं चाल्या आ रैया है, भलांई उणांरा मूळ अरथ भुलायीजग्या हुवो, अर उणांरी अर्थवत्ता नूंई प्रासंगिकतावां सूं जुड़गी हुवो। भाषा-वैज्ञानिकां आपरै सिद्धांतां रै प्रतिपादन सारू उदाहरण रूप में इसा केई मनमोवणा शब्द राख्या है जिणांरै मूळ शब्दां नै देखर वडो इचरज हुवै। पण सांस्कृतिक क्षेत्र रा शोधकां नै जिका शब्द मिलै है उणांसूं आपणै देश रै युगां रै इतिहास अर संस्कृति री जाणकारी मिलै। इण वासतै इसा शब्दां री खोज सगळी दृष्टियां सूं घणो महत्व राखै।

आपणां कोशकारां शब्दां री व्युत्पत्तियां रै विसै में आपरी असमर्थता वतावता थकां उण सवाल नै प्रायः अछूतो ई छोड दियो। शब्द रो मूळ तावै आवणो प्रायकर दोरो ई नीं असंभव सो भी हुवै है। जिका व्याकरणकारां अठीनै कोसीस भी करी है उणांरी करचोड़ी मोकळी व्युत्पत्तियां खांच-ताणर बैठायोडी सी लागै है। व्याकरण रै सागै-सागै भाषाविज्ञान रो ज्ञान हुवणो तो जरूरी है ही, पण शोधविद्वानां रो बहुपठित अर प्रतिभावान हुवणो भी जरूरी है। इयां हुयां ई शब्द आपरै सागी परिप्रेक्ष्य में पैचाण्या जा सकैला।

शब्दां रै सांस्कृतिक अध्ययन रो ओ क्षेत्र महत्व रो तो है ई, पण अजै अछूतो भी है। कदैई-कदैई विद्वानां पत्र-पत्रिकावां में 'शब्द-चर्चा' रै सिलसिलै में केई अरथां नै परकास्या तो है, पण योजना रै साथै इसै किणी कोश नै त्यार करण री हाल कोई चेस्टा को हुयी नी। देखां हां कै प्रायकर सीधा-सादा दीखणआळा लोकशब्द भी चिंतन-मनन रै सागै खोज करचां वडा संदर्भ-भरचा नीवड़ै है। साफ है, कोई भी शब्द सहज ई टाळ देवण जोगो को हुवै नी। अठै विद्वानां रै विचारणै सारू इसा केई बहुप्रचलित शब्दां री चर्चा करी जावै है।

रंग रा दूहा

प्रायकर जुध रै मौकै जोधा लोग भेळा हुयर आं दूहां नै सुणता हा। इणांमें वीर पुरखां और दूजा लोक-नामी वीरां रो विड़द-गान हुवतो। इणांरो लक्ष्य जोधां माथै रंग चढावणो ई हुवतो जिणसूं बै जुध सारू ऊमगता। 'रंग चढावणो' मुहावरै रै रूप

में, किणीनै आपरै अनुकूळ वणा लेवण खातर करयो जावै है। इण मौकै माथै कसूंबो लियो जावतो अर केसर रै द्रव नै भी काम में लेवता। 'रंग' रो अेक अरथ रणखेत भी है (हलायुध कोश)। जिण तरै वसंत (होळी आदि) रै मौकै, अर व्यांव वगैरै में लोग अेक-दूजै माथै रंग छिड़कर हियै रो हरख दरसावै, उणी तरै रणखेत में कूदणो ई अेक आणंद रो अवसर मानीजण रै कारण, उण वेळा भी केसर छिड़कण री परंपरा क्षत्रियां में रैयी है। आ ई धीरै-धीरै वस्त्रां नै केसर में रंगणै रै रूप में वदळी अर 'केसरिया करणो' जुध सारू उतारू हुवणो मान्यो गयो। ओ अवसर अफीम, दारू वगैरै रै सागै परब रै रूप में ई मनायीजतो रैयो है।

इण संबंध में अरबी शब्द 'रजज़' माथै विचार करणो चाहीजै जिणरो अरथ भी जुधखेत में वंश री श्रेष्ठता वखाणनी ई है। इणरो अेक अरथ रज यानी रंगणो भी है ई। हुय सकै है कै वीर पूर्वजां री जुध रै मौकै करी जावणआळी अै प्रशस्तियां अरब अर भारत री संस्कृतियां में अेक सरीखी, किणी आदिकाळ री संस्कृति री धरोहर रै रूप में मानीजती रैयी हुवै। आज भी 'रंग' शब्द किणी नै साबासी या धन्यवाद देवण सारू वापरीजै है।

दळिद्दर

ओ शब्द संस्कृत रै 'दरिद्र' सूं वण्योड़ो मानीजै है। संस्कृत 'दरिद्र' शब्द 'दरिद्राति दुर्गच्छतीति' (दरिद्रा+अच् = निर्धन, कीकट आदि अरथां) में वापरीज्यो है (हलायुध कोश)। 'दरिद्रो यस्त्वसन्तुष्टः कृपणो योऽजितेन्द्रियः' (भागवत, ३४८) रै मुजब असंतुष्ट व्यक्ति नै दरिद्र कैयो जावै। 'मोनियर विलियम्स' रै कोश में इणरा अरथ— घूमणआळो, जरूरतमंद, निरधन, भिखारी वगैरै दियोड़ा है।

विद्वानां रा विचार है कै ओ शब्द भी 'वटच्चर' सूं वण्योड़ै 'फटीचर' शब्द री तरै 'दरद' शब्द सूं रूढ हुयो है। महाभारत में कांवोजां रै साथै दरद-निवासियां रो जिकर हुयो है—

> गृहीत्वा तु बलं सारं फाल्गुनः पांडुनंदनः।
> 'दरदान्' सह कम्बोजं रजयत् पाकशासनिः॥

(सभा० २७/२३)

'दरद' देश रा लोग युधिष्ठिर सारू भेट लेग्या हा (सभा० ५२/१३)। वनवास रै समै सुवाहु री राजधानी में जावती वखत पांडव 'दरद' देश मांयकर गया हा (वन० १७७/१२)। पांडवां कानी सूं उणांनै रण में सामल हुवण रो नूंतो भेजीज्यो हो (उद्योग० ४/१५)। ओ देश पूर्वोत्तर दिशा में है (भीष्म० ९/६०)। दरद देश रा

जोधा दुर्योधन री सेना में ई हा (भीष्म० ५१/१६)। भगवान श्रीकृष्ण कदैई इण देश नै जीत्यो हो (द्रोण० ७०/११)। अै लोग पैली क्षत्रिय हा पण ब्राह्मणां रै सागै ईर्ष्या करण रै कारण शूद्र हुग्या (अनुशासन० ३५/१७-१८)।

'दरद' रो हवालो विष्णुपुराण में ई मिलै है और 'टालमी' नै 'स्ट्रेबो' पण दरदां रो वरणन करयो है। दरद री पैचाण 'दर्दिस्तान' रै प्रदेश सूं करीजै है जिणमें 'गिलगिट' अर 'यासीन' रो इलाको आयोड़ो है। ओ प्रदेश उतरादै कश्मीर अर दिखणादै रूस री कांकड़ माथै है। 'विल्सन' रै मुजब दरद लोगां रो इलाको आज ई बो ही है जिको विष्णुपुराण, स्ट्रेबो नै टालमी री वखत हो — यानी सिंध नदी रो सींच्योड़ो बो प्रदेश जिको हिमाळै री तळेटी में आयो है। 'दरदपुरी' दरदांरी राजधानी ही (मार्कंडेय पुराण, ५७)। इणरी पैचाण डा० स्टेइन 'गुरेज' सूं करी है (अैतिहासिक स्थानावली, पृ० ४२६)।

विद्वानां रो मत है कै संस्कृत रो 'दरिद्र' शब्द इणी 'दरद' सूं वण्यो है, अर मूळ रूप में ओ शब्द दरद लोगां री हीण हालत रो सूचक हो। मोनियर विलियम्स आपरै कोश में 'दरद' री ठौड़ 'पेशावर' सूं ऊपर कानी वतायी है। उण क्षेत्र रै लोगां रै सिनान नीं करणै, मैला–कुचैला गाभा पैरणै अर हीण माली हालत हुवण रै कारण, राजस्थान रो 'दळिद्दर' शब्द आज ई अै भाव दरसावै है।

चिठी फाड़णो

ओ शब्द मृत्यु री सूचना देवण सारू परिजनां अर परिचितां नै लिखीजणआळी उण चिठ्यां खातर काम में लेयीजै है जिकी प्रायकर मौत रै 'तीसरै दिन' पोस्ट कार्डां पर लिखीजै, और इण अशुभ समाचार रै सैनाण- रूप जिणांरा खूणा फाड़्या जावै है। इसी चिठ्यां प्रायकर घरां रै बारै ई राखीजै है। ज्यादातर तो 'चीरी' अर 'चिठी' नै अेक ई मान्यो जावै है। लोक-गीतां में 'चीरी लिख भेजां जंवाई थांनै कागद लिख भेजां' कैयो है। इयां तो, लोक में समान अरथआळा शब्दां रो प्रयोग विना किणी खास कारण रै मुहावरै रै रूप में भी हुवै है। 'कागद– चीरी' रो प्रयोग भी इसो ई है, भलांई 'चीरी' 'कागद' रै पैलां री है। पण 'चीरी' अथवा 'चिठी' फाड़णै री वात विचारण- जोग है।

सतरवीं सदी रै 'गजगुण-रूपकबंध' नांव रै काव्य में गाडण केसोदास जुध सारू जावणआळी सेना में सामिल हुवण सारू सामंतां नै नूंतती वखत 'चीरी फाटी' रै भाव नै इण भांत दरसायो है—

राजा काम भळावियो, राखे विकळी कत्थ।
कह्यो वजीरां गजपती, तेड़ो साऊ सत्थ ।। ११ ।।
'चीरी फाटी चहुं दिहे', सामी कमधज्जांह।
कटक पधारो ठाकुरे, जोधा रिड़मल्लांह ।। ३५/१२ ।।

'चीरी फाटी' रो ओ प्रयोग 'चिठी फाड़ी' रै ऊपरलै उदाहरण सूं साव जुदो है। इणरो मतळब समझण सारू इण विसै री सांस्कृतिक परंपरावां नै देखणो हुसी। सोमदेव रै 'यशस्तिलकचंपू' में आयै अेक प्रसंग री व्याख्या करतां स्व० के० के० हिंदीकी लिख्यो है कै पुत्रजलम अथवा इसा ई मौकां माथै राजा लोग रेसमी कपड़ै री 'चीरीयां' आपरै कृपापात्रां नै दिया करता हा। अै चीरियां सिर माथै बांधर धारण ई करीजती ही। अजंता री गुफावां में इसी चीरियां सिर माथै बांध्योड़ा राजसेवक चीतरचोड़ा है। अै अेक तरै सूं आज रै 'हेयर रिबन' री तरै दीखै है। हुय सकै है, अै चीरियां ई बै 'चीरी' है जिकी स्वजनां नै भेजीजती अर उणांनै जुध रै परब में सामिल हुवण सारू नूंत्यो जावतो हो। अै 'चीरियां' ई आगै जायर 'चिठी' रो रूप धारण कर बैठी, क्यूंकै उण अति पुराणी सांस्कृतिक परंपरा रो महत्त्व अर संदर्भ विसरीजग्यो हो।

बादशाह अकबर रै वखत रै 'दळपतविलास' नांव रै इतिहास-ग्रंथ में इसी ई अेक घटना रो हवालो है जिण कानी इतिहासविदां कोई ध्यान नीं दियो है। उणनै, हुय सकै है, अकबर रै पागलपण री अेक सनक मानर अणदेखी कर दी हुवै। उण ग्रंथ में लिख्यो है कै अकबर आपरी पागड़ी उतारनै उणरी च्यार-च्यार आंगळ री 'चीरियां' वणायी नै हरेक हाजर उमराव नै अेक-अेक चीरी अर गंगाजळ देयर उणसूं कैयो कै जद म्हे 'फिरंग' में जासां तो थारै कनै सूं आ निसाणी मांगसां। उण ग्रंथ रा नायक दळपतसिंह नै उणांरी किशोर अवस्था देखता हुयां 'चीरी' कोनी देयीजी, पण उणांरै जिद करण सूं पछै बांनै देयीजी। आ घटना उणी पुराणी परंपरा री याद अणावै है।

'चीरी' रै आं हवालां सूं इण परंपरा रै इतिहास री गैराई में जावणो जरूरी लागै है। 'चिठी' नै ई 'चीरी' रो पर्याय मानणो, नै 'चीरी फाड़णै' री जगां 'चिठी फाड़णो' समझणो सायद ठीक नीं हुवैला, भलांई 'चिठी फाड़णै' नै लोक री मानता मिलगी हुवो।

आजकालै री चिठी, गोळ आकार में सांवटचोड़ी लांबोतरै कागद माथै लिख्योड़ी जलमकुंडळी सरीखी पत्री, रै लारै भी वैई वस्त्र-चीरियां है। तेरवीं सदी में चीन सूं फारस हुयर आवणआळै कागद रै जलम सूं पैलां लांबोतरै कपड़ै री चीरियां ई पत्र और दूजा अभिलेख लिखण रै काम आया करती। बाणभट्ट 'हर्षचरित' में डाक लेजावणआळा बां कुरंगक-धावकां रो जिकर करचो है जिका सिर माथै बंध्योड़ी कपड़ै री पाटी में पत्र-चीरियां खसोळर दौड़्या करता। समाचार रै शुभ-अशुभ रो अंदाज करावण सारू उणांरी पोसाक उणीज मुजब करायीज जावती। मृत्यु-संदेस रा वाहक कुरंगकां री पोसाक काळी हुवती। आं चीरियां माथै कांजी या मांड लगार लिखण रै काम में लेवता। आं 'चीरी' पत्रां री नकल माथै कागद पर पत्र और अभिलेख लिखीजण लाग्या अर कपड़ै री तरै ई वांनै गोळ लपेटर वस्त्रां री थेल्यां अथवा लोह रा गोळ अर लांबा

डवां में घालर जावण आळी जगां भेज्या जावता। सरू में पुस्तकां ई इणी भांत लिखीजी। प्राच्य–ग्रंथ भंडारां में श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, कुरान नै दूजा केई ग्रंथ इसा गोळ पुलंदां में लिख्या मिलै है। अंगरेजां रै आवण रै खासा वरसां पछै तांई इणी तरीकै सूं पत्र भेज्या जावता हा। इणांनै राजस्थानी में 'ओळियो' भी कैया करता। 'आर' (कांजी) लगार वणावण रो इणरै नांवकरण सूं कोई संबंध है का नहीं, आ सोधण री बात है, अर आ भी कै कांई अवळी (पंक्ति, ओळी) सूं ई ओ शब्द वण्यो है।

—डी २८२, मीरां मार्ग, वनी पार्क
जयपुर-३०२००६

□

सीप

— चंद्रसिंह —

विदा लेवतां रात उषा नै कैवै— काल अठै ही भलो! उडती सी उषा सूं सूरज सुणै— काल अठै ही भलो! आंख्यां सूं अदीठ हुवतै सूरज सूं सांझ मैं ही वचन लेवै— काल अठै ही भलो!

□

भल कैवत री वात

सरसती समरूं सामणी बाणी देह विगत्त
समरूं गणपति सुमति वा समरूं सिव सगत्ति

सगती गुरु की भली भगती मेरी भली
आण फेरी भली अंब केरी भली

आस पूगी भली भंग ऊगी भली
लाल लूंगी भली रात चंदरणी भली

लाडी जाडी भली भैंस पाडी भली
खेत वाड़ी भली पथ गाडी भली

मौत मोड़ी भली ममता थोड़ी भली
जोबन जोड़ी भली कछा घोड़ी भली

वीज चमकी भली सीत चमकी भली
घंट रणकी भली तंत झणकी भली

नोबत वाजी भली जीत वाजी भली
राणी राजी भली देह साजी भली

प्रीत बाधी भली भोम साधी भली
रसवती ताजी भली खीर खाधी भली

गाय दूझी भली गवर पूजी भली
छाछ गूंजी भली पोथी वाची भली

पदमण प्यारी भली केसर क्यारी भली
सूंथण ढीली भली अंग आंगी भली

जोध जुवानी भली पाय पानी भली
माळा मन की भली सेव सिव की भली

भवानी भेटी भली फिकर मेटी भली

□

राजस्थान में धरणा देव़ण री परंपरा

— गिरिजाशंकर शर्मा —

राजस्थान में धरणा देव़ण री परंपरा मोकळी पुराणी है। सोळवी अर सतरवीं सदी रै राजस्थान रै इतिहास में धरणां री सांगोपांग जाणकारी मिलै है। उण वखत रै चारण जाति रै लोगां रा दियोड़ा धरणा घणा नामी हा। जद राजपूत लोग किणी वात नै लेयर आपस में लड़ण लागता तो उण वखत चारण जाति रा लोग जामिन वणर वीच- वचाव् कर दिया करता हा। चारणां री जामनी राजपूतां में पकी समझी जाव़ती। जे कोई राजपूत चारणां री जामनी लेव़ण रै वाद वदळ जाव़तो तो चारण उणरै घर रै आगै धरणो दे देव़ता, अर कदैई कदैई तो धरणै में मर भी जाव़ता हा। मारवाड़ में तो चारणां खासा धरणा दिया हा। अै धरणा घणकराक तो जागीरदार या राजा द्वारा उणांरी जमीन अटकाव़णै अथव़ा जप्त करणै रै कारण दिया जाव़ता। जद कदैई किणी गांव़ रो जागीरदार या हव़ालदार चारणां री जमीन अटकाय लेव़तो या जप्त कर लेव़तो तो चारण आपरै भाई– बंधां नै भेळा करनै जागीरदार री कोटड़ी माथै, अर जे गांव़ खालसो हुयोड़ो हुव़तो तो जोधपुर जायर, धरणो देव़ता। उण समै रै धरणां रै अध्ययन सूं वेरो पड़ै है कै घणकरा धरणा हिंसक रूप ले लिया करता हा। जिण भांत जापान में बठै रा लोग हाराकारी (पेट वाढर मर जावणो) कर लिया करता हा, उणी भांत चारण अर पुरोहित भी धरणां में आपरा अंग तोड़–भांगर जान दे दिया करता हा। आं हिंसक धरणां रो दस्तूर इण भांत हुव़तो— सगळां सूं पैली अेक आदमी आपरो डील चीरनै जाजम माथै लोही छिड़कतो अर पछै धरणो देव़णआळा सगळा लोग उण जाजम पर बैठ जाव़ता। वै तीन दिनां तांई भूखा–तिसा रैयर जोगमाया रै धूप खेव़ता अर स्तुति गाव़ता। जे इण तीन दिनां में बांनै किणी तरै मनाय लियो जाव़तो तो धरणो सफळ हुयो मानीजतो, अर जे बांनै नीं मनायो जाव़तो तो चौथै दिन धरणै माथै बैठा सगळा लोग पैलां तो खूब खाव़ता- पीव़ता अर पछै आप मांयलै अेक वूढै आदमी या लुगाई नै रूई रा कपड़ा तेल में भिजोयर पैराय देव़ता नै उणनै जीव़तो ई जळाय देव़ता। वाकी वच्योड़ा लोगां में कोई आपरो हाथ चीरतो, कोई जांघ फाड़तो, कोई गळै माथै छुरी चलाव़तो तो कोई पेट में कटारी मारतो। इण भांत उणां मांयसूं केई लोग तो बठै ही जान दे देव़ता अर वाकी वच्योड़ा उणरै (जिणरै खिलाफ धरणो देव़ता हा) इलाकै नै छोडर दूजै इलाकै में जायर वस जाव़ता। धरणै री इण प्रथा नै 'चांदी' रै नांव सूं जाण्यो जाव़तो हो। पुरोहित लोग तो कदैई- कदैई धरणै माथै गाय अर टोगड़ी नै

सागै लेनै जळ जावता ।[1]

मारवाड़ रै इतिहास में आहुवै रो धरणो मोकळो नामी है । ओ धरणो सं० १६४३ वि० में मोटै राजा उदयसिंह रै ऊपर दियो गयो हो । वात आ ही कै वीस वरसां पैली जद राय चंद्रसेन जोधपुर रो किलो मुगलां नै सूंप्यो हो तो किलै री सगळी लुगायां, जिणांमें उणरी खुद री जनानियां भी ही, सिवाणै रै पहाड़ां में भेज दीनी ही । जद जनानियां रा रथ पहाड़ां कानी जाय रैया हा उण वगत मोटै राजा उदयसिंह री मां रै रथ रो अेक वैल घणो थकग्यो । मारग में कनै ही अेक चारण वैल सूं कूवो वावै हो राजा रा आदमी उण चारण रो वैल खोल लाया अर रथ में जोड़ लियो । चारण आपरै गांव सूं थोड़ा आदम्यां नै भेळा करनै वठै लायो अर आपरो वैल खोल लियो नै रथ नै उलट दियो । रथ रै उलटणै सूं मोटै राजा उदयसिंह री मां रो हाथ टूटग्यो । उण वगत तो सगळां नै जान री पड़ी ही, इण खातर उण घटना माथै कोई ध्यान नीं दियो । सं० १६४० वि० में जद जोधपुर रो किलो पाछो मोटै राजा उदयसिंह नै मिल्यो तो उणरा जनाना भी पाछा जोधपुर आयग्या । आयां पछै मोटै राजा उदयसिंह री मां आपरो टूटयोड़ो हाथ उदयसिंह नै दिखायर कैयो कै और तो तूं थारी समझ में आवै जियां ही करी पण जिकै चारण म्हारै रथ नै, उलटायर म्हारो हाथ तोड़चो हो बो माफी रै लायक नीं है । इण कारण मोटै राजा उण चारण री जमीन जप्त कर ली । चारण री जमीन जप्त नीं करण वासतै जिका दूजा चारण सिफारिस में आया उणांरा सासण भी जप्त कर लिया । इणसूं चारणां में हलचल मचगी, अर ११०० चारणां आहुवै गांव में महादेवजी रै मिंदर माथै धरणो दे दियो । आहुवै में धरणो देवण रो कारण आहुवै रै ठाकर चांपावत गोपाळदास रो चारणां नै चांदी करण में सहयोग देवणो हो । आ खबर सुणर मोटै राजा चारणां नै समझावण वासतै सोजत सूं आखैजी बारठ नै भेज्यो । पण आहुवै में जायर बो भी आपरी विरादरी में सामिल हुयग्यो । इण कारण मोटै राजा अेक वडी कटार आखोजी बारठ कनै आ कैयर भेजी कै दूजा चारण तो गळै में छरी खायर मरसी पण तूं इणनै गुदा में घालर मरी । इणरै सागै ई फोज नै चारणां नै सजा देवण रो हुकम दियो ।[2] इण माथै चांपावत गोपाळदास चारणां नै कैयो कै फोज सूं तो हूं लड़सूं, थे थांरो काम करो । चारणां पैलां तो सीरो करनै खूब खायो, अर रातभर जोगमाया रा गीत गाया । तड़को हुवतां ही आखोजी रै ढोली गोवंद नै मिंदर रै सिखर माथै चढ़ार कैयो कै जद सूरज री किरण फूटै तो उगरी खबर देवण वासतै ढोल वजा देयी । पण गोवंद इसी वात नै, जिणसूं ११०० चारणां री जानां जावती ही, नीं मानर ढोल नहीं वजायो अर सूरज री किरण फूटतां ही आपरै गळै माथै छुरी चलायर ढह पड़चो । इण पर सगळा चारण मिंदर रै मांय गया, अर किणी आपरो गळो

---

१. रिपोर्ट मर्दुमशुमारी, राज मारवाड़, सन् १८९१ ई० पृ० ३८३–८८, अग्रवाल, गोविंद— चूरू मंडळ का शोधपूर्ण इतिहास, पृ० ४३१-३२

२. रिपोर्ट मर्दुमशुमारी, राज मारवाड़, सन् १८९१ ई० पृष्ठ ३४३

काटर उणरो लोही महादेवजी माथै छिड़क्यो तो किणी आपरो सीस चढायो, कोई आपरो पेट वाढर मरग्यो तो कोई जखमी हुयर पड़ग्यो। सगळो मिंदर लोही सूं भरीजग्यो। इण चांदी में सात जणा मरचा, जिणां में आखोजी बारठ भी हो। जद तांई आ चांदी हुयी, चांपावत गोपाळदास जोधपुर री फौज नै मारग में ई रोकी राखी। इण पछै चांपावत गोपाळदास और वच्योड़ा चारण बीकानेर भागग्या। पण बाद में बीकानेर रै राजा रायसिंह रै भाई पृथ्वीराज री सिफारिश सूं बादशाह अकबर चारणां रै सासण री जमीन उणांनै पाछी दराय दी।[1]

सन् १६१४ में बीकानेर रै महाराजा सूरसिंह रै समै में गांव तोळियासर रै पुरोहित मान महेश अर गांव खूंडियै रै चोहथ बारठ बीकानेर रै किलै सामी धरणो दियो पण उणांनै इण धरणै में सफळता को मिली नी। इण खातर अै दोनूं किलै रै सामी ई चिता जळायर मरग्या।[2] सन् १८१५ ई० में बीकानेर रै ही बीदासर ठिकाणै रा पुरोहितां बीकानेर रै दूजै ठिकाणै भादरा में जायर धरणो दियो। सन् १८३७ ई० में बीकानेर रो महाराजा चूरू गयो। उणरै साथै उणरो दीवाण हिंदूमल मेहता भी हो। इण मोकै माथै बिसाऊ रै अेक ब्राह्मण रो ऊंठ वेगार वासतै हिंदूमल रै डेरै भेज्यो गयो हो जिको चोरी हुयग्यो। ब्राह्मण नै जद ऊंठ पाछो नीं मिल्यो तो उण हिंदूमल रै डेरै माथै च्यार दिनां तांई धरणो दियो। ब्राह्मण धरणै सूं जद ही उठचो जद कै उणनै ५६ रुपियां रो दूजो ऊंठ खरीदर पाछो देयीज्यो। सन् १८५४ ई० में बीकानेर रै गांव बोवासर रो चारण शंकरदान सामोर तो धरणा देवण में नामी हुयग्यो हो। उण राज सूं बारै अलवर में च्यारभुजानाथ रै मिंदर में अर दूजी ठोड़ां भी धरणा दिया हा।[3]

उगणीसवीं सदी रै आवतां ही हिंसक धरणां में कमी आयगी अर उणरी ठोड़ अहिंसक धरणां लेवणी सरू कर दी। आ वडै अचंभै री वात है कै गांधीजी सरीखा लोगां अहिंसक धरणां सूं भारत में अंगरेजी राज नै झकझोड़ दियो अर उणांरै आं धरणां रो ही परताप हो कै विना लड़ाई लड़चां ई अंगरेजां नै भारत छोडण खातर मजबूर हुवणो पड़चो। राजस्थान रै रजवाड़ां में धरणां रो रूप जापान में प्रचलित हाराकारी सूं मिलतो-जुलतो हो, उणरै वावजूद कदेई-कदेई राजा लोग आं धरणां सूं टस-सूं-मस को हुवता नी अर धरणा देवणियां नै आपरी जान गमावणी पड़ जावती। इणरो खास कारण ओ हो कै गांधीजी रा धरणा जठै जनसाधारण री समस्यावां अर देश रै हित नै लेयर हुवता और उणांरै धरणां माथै देश री सगळी जनता रो ध्यान रैवतो नै उणरी सहानुभूति मिलती ही, बठै ही रजवाड़ां में दियोड़ा धरणा व्यक्तिगत अथवा जाति विशेष री वात मनावण सारू दरीजता हा, जिणांरो राजा माथै नैतिक दबाब नीं पड़तो।

---

१. रिपोर्ट मर्दुमशुमारी, राज मारवाड़, सन् १८९१ ई०, पृ० ३४३
२. अग्रवाल, गोविंद— चूरू मंडल का शोधपूर्ण इतिहास पृ० ४३१-३२
३. अग्रवाल, गोविंद— चूरू मंडल का शोधपूर्ण इतिहास पृ० ४३१-३२

अहिंसक धरणां में राजा री रीत-नीत सूं नाराज हुयर राज विशेष रा लोग राजा री कुळदेवी अर देवतां रै मिंदर में जायर धरणै माथै बैठ जाया करता हा। धरणै माथै बैठण आळो आपरै सगळै परवार नै लेयर मिंदर में चल्यो जावतो अर बठै सूं जद तांई को हालतो नी जद तांई कै राजा खुद अथवा आपरै प्रतिनिधि सागै दिलासा रो कागद नीं भेज देवतो। दूजी भांत रै अहिंसक धरणै में राज विशेष रा लोग आपरै ऊपर हुयोड़ी जादती रै विरोध में, राजा नै प्रभावित करण सारू उण राजा या जागीरदार रै इलाकै नै छोडर दूजै राजा या जागीरदार रै इलाकै में जायर वस जावता अर बठै ही आपरो विणज-वोपार सरू कर देवता। वीकानेर राज रै इतिहास में आं दोनां धरणां री जाणकारी मिलै है। इण भांत रा घणकरा धरणा राज में विणज-वोपार करण आळा वाणियां रा हुया करता हा। आं धरणां सूं राजा रै नैतिक जीवण पर प्रभाव पड़ण रै साथै-साथै राज में विणज-वोपार में कमी आवण सूं राज रो आर्थिक नुकसाण हुवण रो अंदेसो भी रैवतो हो। इण कारण इसा घणकरा धरणा सफळ ई रैवता हा।

वीकानेर राज में सन् १८२० ई० में अेक वोपारी माथै राज री तरफ सूं साहूकारा भाछ रै रूप में साठ हजार री रकम निकाळीजी। वीं वोपारी इण रकम नै थोड़ी करावण री कोसीस करी, पण पार को पड़ी नी जणां वीकानेर राजा री कुळदेवी देशणोक री करणी माता रै मिंदर में जायर शरण ले ली अर बठै सूं जद तांई को हिल्यो नी जद तांई कै राज कानी सूं इण साहूकारा भाछ में उणनै छूट रो परवानो नीं मिलग्यो। सन् १८२० ई० में वीकानेर रै साहूकार कोठारी रूपचंद, सीपाणी सोनो, सुराणो जीतमल, डागो उतमो, गोलछो जोरावर अर डागो मेघो वगैरै री राज सूं साहूकारा भाछ अर हाट-भाड़ै री रकम रै मुदै माथै अणवण हुयगी। सगळा साहूकार करणीजी रै मिंदर में जायर धरणो देय दियो। राजा कानी सूं दिलासा रो कागद मिल्यां पछै ही वै बठै सूं पाछा आया। सन् १८४० ई० में गंभीरचंद दसाणी भी साहूकारा भाछ रै कारण ई देशणोक में करणीजी रै मिंदर में जायर धरणै माथै बैठग्यो अर बठैसूं राज कानी सूं छूट रो परवानो मिल्यां पछै ही उठ्यो।[1]

अहिंसक धरणां रा मोकळा उदाहरण मिलै है। वीकानेर राज में चूरू रो ठिकाणेदार शिवजीसिंह (१७८३-१८१४ ई०) आपरै अठै रै पोदार वोपारयां सूं वेजा जगात वसूल करणी चावतो हो। पैली तो वोपारयां इणरो विरोध करयो, पण जद पार नीं पड़ी तो वै चूरू नै छोडर रामगढ (सीकर) में जायर वसग्या। इण पर चूरू रै ठिकाणेदार उणांनै बुलावण री कोसीस करी पण उणनै कामयाबी कोनी मिली। छेकड़ वीकानेर राज रै शासक पोदार सेठां री वात मानर उणांनै पाछा वीकानेर राज में लायर वसाया। इणी भांत सन् १८५९ ई० अर १८६५ ई० में चूरू रै सुराणा घराणै रा

१. डा० गिरिजाशंकर शर्मा— १९ वीं सदी में राजस्थान के व्यापारी वर्ग का अहिंसक आंदोलन (विश्वंभरा, जनवरी-मार्च १९८१, पृ० ३१-३३)

सेठ रुखमानंद, तेजपाल अर विरधीचंद वीकानेर महाराजा सरदारसिंह सूं उणांरै जगात अर धूंवा भाछ वेजा रूप सूं वसूलणै रै मामलै में नाराज हुयग्या। राजा जद उणांरी वात नीं मानी तो बां आपरै परवार रै साथै चूरू नै छोड़ दियो अर कनलै राज में जायर रामगढ अर महणसर में वसग्या। छेकड़ राजा नै उणांरी वात मानणी पड़ी अर उणांनै परवानो भेजर पाछा वीकानेर राज में वसाया।[1]

ऊपर मैं धरणां रै सरूप रो ही खास तौर सूं वरणन करचो है। धरणा तो और ही घणा दरीज्या है जिणां रो कोई अंत नीं। □

— सहायक निदेशक
राजस्थान राज्य अभिलेखागार
वीकानेर

---

१. डा० गिरिजाशंकर शर्मा— १९ वीं सदी में राजस्थान के व्यापारी वर्ग का अहिंसक आंदोलन (विश्वंभरा, जनवरी- मार्च १९८१, पृ० ३१-३३)

□

सुधी पाठकां सूं निवेदन

'राजस्थानी गंगा' रो ओ 'अवतरण' कोई अेकाअेक ई कोनी हुयो है। इणरै लारै विद्यामहोदधि स्वर्गीय पं० नरोत्तमदासजी स्वामी री अनवद्य भूमिका रैयी है। स्वामीजी अेक तप:पूत ऋषि हा। अेक ई जीवन-व्रत हो उणांरो— मातृभाषा राजस्थानी रै साहित्य नै सांगोपांग समृद्ध वणायर उणनै जग-जाहिर करणो। मौन रैयर वै आपरी अनूठी साधना पूरी करग्या। उणांरै अधूरै कामां नै पूरो करणो अर उणांरी जगायी जोत नै हर हालां जगमगावती राखणी— आपां राजस्थानी-भक्तां रो ओ ही तो पैलो फरज वणै है।

'राजस्थानी गंगा' री लैरां निर्बाध रूप सूं सगळा राजस्थानी-प्रेमियां तांई पूगै, इण वासतै आपांनै अेकमत हुयर इणरै प्रचार-प्रसार सारू जतन करणा पड़सी। विसाळ भारत रै हृदय राजस्थान रै इतिहास, संस्कृति, भाषा, साहित्य अर कळा वगैरै रो कोड करणियो हरेक भाई 'राजस्थानी गंगा' सूं किणी भा रूप में जुड़र मां शारदा री सेवा करण रो लाभ लेय सकै है।

आपरी संमतियां रो, रचनावां रो, विज्ञापनां रो अर दूजी सेवां रो राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान हृदय सूं स्वागत करसी।

गिरिजाशंकर शर्मा
पीठाध्यक्ष,
राजस्थानी ज्ञानपीठ, वीकानेर

पेपर-वे़ट

— नरेंद्र भानावत —

अेक जमानो हो
जद 'पेपर'
अपणैआप में
'वे़ट' राखतो हो ।

बींरा आखर
फगत आखर नीं हा,
बांमें घुळचोड़ी हुव़ती
किणी मायड़ री ममता,
किणी गोरड़ी रै हाथां री मेंहदी,
मिल्योड़ा हुव़ता
किणी भायली रा आंसू,
किणी वीरै रा दुख–दरद,
किणी बाबोसा रा अणभरचा घाव़ ।

तद
बीं 'पेपर' नै
किणी बारलै 'वे़ट' री जरूरत नीं ही ।

पण
अबै जमानो पळटग्यो ।
ओ जमानो
'पेपर' रो नीं,
'पेपर-वे़ट' रो है ।
'वे़ट' विगर
वेचारो 'पेपर' अमूझणो,
पांगळो,
कोटड़ी रै बारै
पाटियै पर बैठो-बैठो
खंखारतो डोकरो ।
आंख्यां है पण सूझै नीं,
कान है पण सुणीजै नीं,
हाथ-पग हालै नीं ।

–सी/२३५ अे, तिलकनगर, जयपुर

राग लूहर

— जयचंद्र शर्मा—

राजस्थानी धुनां में अेक-सूं-अेक वधर राग-रागण्यां गायी-वजायी जावै है। हरेक राग आपरो न्यारो सरूप राखै है। सुरां रै उतार-चढाव अर ठहराव सूं रागां रा नांव पैचाणीजै। सुरां रै ठहराव में थोड़ी-सीक कमी-वेसी हुवतां पाण राग वदळ जावै। आपणै देश री लोक-धुनां में जिण सुरां नै काम में लियो जावै है बै सुर शास्त्रीय संगीत री रागां में भी काम आवै है। इण भांत, सुर तो सगळा सात-ईज है चाहै लोकगीत गावो चाहै शास्त्रीय संगीत।

पकी राग-रागण्यां गावणआळा गवैयां अर विदवानां रो कैवणो है कै लोकगीतां सूं ईज पकी राग वण जावै। आपणै देश री भी बहोत-सारी धुनां रै नांव सूं पकी रागां वणी है, जियां माड, सोरठ, लूहर, देशी आदि।

लूहर आपणै देश री बहोत-ईज प्यारी अर जाणी-पैचाणी राग है। इण राग रा सुर इता मीठा है कै उणांनै सुणतां पाण नर-नारयां रा रूं-रूं नाचण लाग जावै। इणरी सही सुरावळी नै कंठा सूं गुणगुणायां इणरो साचो सरूप सामी आवै अर आ राग पकी रागां में भी इणी सुरावळी साथै गायी जावै है।

लूहर राग रै वारै में संगीत कळा रा विदवान पं० कृष्णानंदजी व्यास आपरै ग्रंथ 'राग-कलपद्रुम' में लिखै है—

अथोपरागः

झिंझोटी जंगला पीलू बरवा धानी तिलंगिका।
आसा घाटा लूहरश्च लूम लहरी तथैव च॥

श्रीमान् व्यासजी इण राग नै दूजी रागां री तरै उप-राग मानी है। इणी ग्रंथ में आगै अेक 'राग सागर' नांव री रचना दी है, उणमें इण राग रो नांव आयो है—

राग सागर

हे घनश्याम मोलार नटवर हे वाहीके गोडे पग धरात।
बांके विहारी लूहर लूम पहाड़ पै,
कंगन गड़ात खड़ी ता नायक की वात,
वैजू बावरी रावरी हितू हितारी राग सागर।
तीन तिलक शिर मांझ देखात॥

राग सागर रो मतळब है कै अेक-ईज गीत में जिण-जिण रागां रा नांव आवै उणांरै साथै उण-उण राग रा ई सुर लगायर गावणो । ओ काम बहोत दोरो है । इसा गीत गावणआळै कळाकार नै सगळी रागां रो पूरो ज्ञान हुवणो जरूरी है, नीं तो गीत री बंदिश खोटी हुवणै रो पूरो डर रैवै । लूहर रा चालू सुरां नै सुणनै सूं अर देखणै सूं इण राग रो जिको सरूप शास्त्र री दृष्टि सूं वणै, उणरी जाणकारी नीचै लिखै मुजब है—

लूहर राग विवरण

धैवत वादी स्वर जहां, रिषभ करै संवादि ।
सारंग अंग ग वर्ज तहां, लूहर षाड़व जाति ।।

विवरण— इण राग रो जलम काफी ठाट सूं हुयो है । इण रो वादी सुर धैवत अर संवादी सुर रिषभ है । राग री जाति षाड़व-षाड़व है । इण राग नै वसंत रितु में गायी-वजायी जावै है । धैवत सुर रै साथै कोमल निषाद नै लगावणै सूं इणरो सरूप उभरनै सामी आवै । राग रै उतार में कोमल गंधार नै रिषभ रै साथै लगायो जावै, जिणसूं आ राग 'सामंत सारंग' सूं अळगी दीखै । इणरै आसै-पासै री दूजी राग 'धुळिया सारंग' है, पण दोनूं अेक-सा सुर हुवतां भी अेक-दूजी राग सूं न्यारी है, क्यूंकै राग रै सुरां रो फैलाव अर ठहराव जिसी वातां अेक-दूजी नै अळगी कर देवै ।

सुरां रो चलण

सा, सा रे नि़ सा, रेम पध, पमरे नि़ सा, सा, रेमपध- , धनिध – , पम पध पम रे –नि़ सा । मपध– पम रे–रेग रेग रे –नि़ सा –– ।

ऊपर रै सुरां में धनिध अर रेग रेग रे नि़सा इण राग रै सरूप नै दूजी रागां सूं अळगी करै अर आपरो महत्त्व वणावै । इण सुरां माथै राजस्थान में 'घूमर' नांव रो गीत गायीजै जिणरी सुरावळी इण भांत है —

— पध ध धनि ऽ घूऽ म रऽ ×	प –ध म म छै ऽऽ न ख ×	रे म मध पम रा ली अेऽ ऽऽ ×	प प म्हा री रे — रेग रेग मां ऽ ऽऽ ऽऽ ×
रेसा सारे नि़ नि़ ऽय घूऽ म र ×	सा सा रेम पध र म वाऽ ऽऽ ×	पम रे –नि़ -- ऽऽ म्हे ऽजा ऽ ×	सा – रेग रेग सां ऽ राज रीऽ ×
रेसा सारे नि़ नि़ ऽऽ घूऽ म र ×	सा सा रेम पध र म वाऽ ऽऽ ×	पम रे –नि़ – ऽऽ म्हे ऽजा ऽ ×	सा – प प सां ऽ म्हा री ×

लूहर राग रो शास्त्रीय पक्ष

राग री पूरी जाणकारी करण सारू उणरो शास्त्रीय पक्ष जाणनो घणो जरूरी है। विना शास्त्र री जाणकारी रै, राग रो ज्ञान अधूरो-ईज मान्यो जावै है। राग री जाणकारी में आं वातां रो खास ध्यान राखणो—

१. राग रा आरोह- अवरोह
२. सुरां रो ठहराव
३. वादी-संवादी सुर
४. वर्जित सुर अर कोमल- तीबर सुर
५. राग रो खास अंग
६. सुरां री श्रुतियां रो अंतर

मध्यम पंचम भाव संवाद

खास सुर	सा	रे	म	प	ध	नि
मध्यम भाव	म	प	नि̱	सां	रें	–
पंचम भाव	प	ध	सां	रें	–	–

ऊपरआळा सुर-संवाद देखण सूं मालम हुवै कै इण राग में सा म प, रे प ध अर म नि̱ सां सूं संवाद पूर्वांग में, अर प सां रें, ध रें, सूं संवाद उत्तरांग में है। राग री चलण देखण सूं मालम हुवै कै धैवत अर रिषभ रो संवाद वणै है। ठहराव रै सुरां में धैवत खास सुर है अर म, रे री संगत सूं राग री सजावट आछी तरै उभरै है।

खास वातां

१. लूहर राग रो उठाव धैवत सुर नै प्रधान मानर करणो। इणसूं राग रो न्यारो रूप निखर नै सामी आवै।
२. धैवत रै साथै कोमल नी नै बहोत ई मधुरता रै साथै लगावण सूं राग में रंजकता आवै।
३. रिषभ सुर रै साथै कोमल गंधार नै इण भांत लगावणो जिणसूं इणरो सरूप सारंग सूं अळगो दीखै।

लूहर राग रै सुरां रो अध्ययन

१. सा — सामान्य
२. रे — बहुत्व
३. ग — वर्जित
४. म — अलंघन मूलक

५. प — विशिष्ट स्थान माथै बहुत्व

६. ध — बहुत्व

७. नि — दोनूं। कोमल नि अल्प, अर शुद्ध नी मंद्र सप्तक में, अलंघन मूलक बहुत्व ।

राजस्थान री लूहर राग रो पूरो विवरण अेक-अेक सुर री वातां नै खोलर राख्यो है । संगीत–कळा री दृष्टि सूं आ राग उप-राग है, पण इण राग रै सुरां री मधुरता, सुरावळी, लोच अर मिठास रो इतो प्रभाव हुवै कै उणसूं प्राणी मात्र थनक उठै । लूहर रै सुरां में भारी लळक है, जिणसूं इण रो महत्व आज भी है अर आगै भी रैसी ।

—निदेशक, संगीत भारती, बीकानेर

□

राजस्थानी महिमा

—उदयराज उज्वळ—

मरदां ! भाषा मात री, मरै आज विन मौत ।
आडा किण दिन आवसो, राजस्थानी रोत ।।

राजस्थानी में रैया, कितरा आछा कोस ।
वणी घणेरी व्याकरण, देवै विरथा दोस ।।

राजस्थानी थिर रहै, प्रांतिय भाषा पाण ।
आंदोलण सफळै 'उदय', जद जीवै रजथाण ।।

□

हवा अर उणरी उपयोगिता

— पुरुषोत्तमदास स्वामी —

धरती री पापड़ी, जिकीनै लिथोस्फियर यानी प्रस्तरखंड कैवै है अर जिकै माथै जळमंडळ भी है, च्यारूं कानी अदृश्य अर विना किणी रंग री गैसां रै आवरण सूं ढक्योड़ी है। इणनै हवा या वायुमंडळ कैवै है।

हवा में घणकरी नीचे लिखै मुजब गैसां हुया करै है—

आक्सीजन	—	२१%
नाइट्रोजन	—	७८%
आर्गन अर नियोन	—	१%
कार्बन डाइ-आक्साइड	—	०.०२% (आ मात्रा निश्चित कोनी।)
जळवाष्प अर्थात् पाणी री भाप	—	इण री मात्रा वदळती रैया करै है।

आपांरै जीवण रै खातर हवा अेक घणी जरूरी चीज है। हवा में मौजूद आक्सीजन रै माथै ही जीवण रो सगळो दारोमदार है। आ गैस शरीर री सांस लेवण री प्रक्रिया में जानवरां, जकां में आदमी भी सामल है, अर पेड़–पौधां रै सांस रै सागै उणां रै शरीर में जावै। इण गैस रो कीं भाग तो शोषित हुय जावै अर वाकी कार्बन डाइ–आक्साइड वणर सांस साथै पाछो वारै आ जावै। इण कारण घणा आदम्यां सूं भरचोड़ै कमरै में मांयली वासी हवा में कार्बन डाइ–आक्साइड री मात्रा मोकळी हुवै है। पेड़–पौधा रात नै तो आपां दांई सांस रै सागै कार्बन डाइ–आक्साइड वारै निकाळै पण दिन री वगत जणै धूप खिल्योड़ी हुवै, पेड़ री पत्यां में मौजूद हरै पदार्थ क्लोरोफिल रै कारण कार्बन डाइ–आक्साइड हवा मांयसूं लेयर पाणी अर माटी में मौजूद खनिज लवणां रै साथै मिलर आपरै खातर खादय पदार्थ वणावै। पचावण री इण प्रक्रिया में आक्सीजन वारै निकळर हवा में मिल जावै है। इण कारण खुली हवा में कार्बन डाइ–आक्साइड री मात्रा घणी वधै कोनी। आर्गन, नियोन अर नाइट्रोजन हवा नै हळकी वणावण रो काम करै। मटर अर सेम परवार रै पौधां री जड़ां में गांठ्यां हुया करै है, इणां में अेक भांत रा वैक्टीरिया अर्थात् जीवाणु रैवै है। अै जीवाणु वायुमंडळ में मौजूद नाइट्रोजन रो उपयोग पौधां खातर नाइट्रोजन-आळी खाद रै निर्माण में करै।

गैसां रो मिश्रण हुवण रै कारण हवा रो संपीड़न कियो जा सकै है। हवा री

निचली परतां रो घनत्व ऊपरली परतां री अपेक्षा वेसी है। दूजै शब्दां में, निचली परतां ज्यादा गैरी है। ऊपरली हवा इण कारण विरल अर्थात् हळकी हुवै है। हवा री ऊपरली परतां धरती रै गुरुत्वाकर्षण सूं खिचर उणरै केंद्र री तरफ जावै अर निचली परतां माथै दबाव नाखै। समंदर रै तळ पर हवा रो दबाव पारै रै तीस इंच ऊंचै स्तंभ रै संतुळन खातर काफी हुवै है। ज्यूं ज्यूं आपां ऊपर चढां ओ दबाव घटतो जावै। ३०,००० फुट री ऊंचाई माथै हवा रो दबाव छव या आठ इंच ही रैय जावै है। हवा रो दबाव मीटरिक प्रणाळी में भी माप्यो जावै है। १००० मिलीबार आळो हवा रो दबाव ३० इंच रै बराबर हुवै है।

जद हवा गरम हुय जावै तो बा फैलै अर ऊंची चढै। गरम हवा ठंडी हवा री अपेक्षा हळकी हुवै। ठंडी हवा रै मुकाबलै गरम हवा में जळवाष्प रै शोषण री शक्ति वेसी हुया करै है। आ अेक अचंबै री बात है कै नम हवा सूकी हवा री अपेक्षा हळकी हुवै है। इण खातर गरम नम हवा सदा ऊपर उठै, ठंडी सूकी हवा नीचै रैवै, पण नीचै आवती वगत बा संपीडण रै कारण गरम हुय जावै।

हवा नै थोड़ी मात्रा में गरमी सूरज री उण किरणां सूं मिलै जिकी हवा मांयकर निकळै, पण उणनै घणकरी गरमी पाणी या जमीं री सतह माथै सूं विकिरण सूं प्राप्त हुया करै है। ऊंचै तळ पर जठै हवा पतळी अर्थात् हळकी हुवै इण कारण सूं बा खूब ठंडी रैवै। जदपि सूरज री किरणां धरती री सतह माथै घणी उग्रता सूं पड़ै, पण रात री वगत गरमी तुरत नष्ट हुय जावै कारण कै कामळ दांई गरमी नै ढकण खातर बहोत कम हवा इणनै मिलै। इण कारण भूमध्य–रेखा माथै, जठै सूरज री किरणां रै समूह नै फैलण खातर बहोत थोड़ी सतह मिलै क्यूंकै उण जागां किरणां ऊर्ध्वाधर रूप में अर्थात् सीधी खड़ी निचाई रै मार्ग सूं आयर पड़ै। उतराद अर दिखणाद आळै ध्रुवां री अपेक्षा सूरज री किरणां वेसी गरम हुवै। इणरो कारण ओ है कै किरणां रै इण समूह नै फैलण खातर वेसी जागां मिलै अर धरती-तळ तांई पूगतां बो हवा री वेसी मुटाई मांयकर आवै। इणसूं गरमी कम हुय जावै। ओ ही कारण है कै हवा रो तापमान घंटै-घंटै, दिन- प्रति-दिन और महीनै सूं महीनै वदळतो रैवै।

हवा रो तापमान नापण खातर तापमापक यंत्र अर्थात् थर्मामीटर नै काम में लियो जावै है। तापमान छियां में लेवणो चाहीजै अर थर्मामीटर नै जमीं रै तळ सूं पांच फुट यानी डेढ मीटर ऊंचो राखणो चाहीजै। इण काम खातर महत्तम अर न्यूनतम थर्मामीटर रो उपयोग करणो ठीक रैवै। महत्तम अर न्यूनतम तापमानां रो अंतर रोज रो तापमान-क्षेत्र वाजै है। ओ दैनिक क्षेत्र दिन रा चौईस घंटां रै तापमानां रो अंतर हुवै है। दिन या महीनै रै महत्तम तापमानां रै मध्यमान नै दैनिक या मासिक मध्यमान तापमान कैवै। ओ दैनिक या मासिक महत्तम तापमान रो औसत हुवै है। वरस भर में सगळां सूं वेसी गरम महीनै रै मध्यमान तापमान अर सगळां सूं ठंडै मध्यमान तापमान रै अंतर नै वार्षिक क्षेत्र अथवा श्रेणी कैया करै है।

ऊपर लिखै मुजब तापमान घंटै-घंटै, दिन-प्रति-दिन अर महीनै-सूं-महीनै वदळतो रैवै है, पण केई वडा अंतर भी तापमान में इण कारणां सूं हुया करै है—

(१) तापमान में भूमध्य रेखा सूं ध्रुवां तांई री दूरी रै कारण।

(२) मौसम रै परिवर्तन (ऋतुभेद) रै कारण।

(३) तापमान में जमीं अर पाणी रै कारण।

समंदर री अपेक्षा विना पाणी आळी जमीं ज्यादा अर वेगी गरम हुवै, पण सागै ई उणरी गरमी रो वेगो विकिरण हुवण सूं जमीं ठंडी भी जळदी हु जाया करै है।

नाना भांत री हवां रो वर्गीकरण

हवां रो वर्गीकरण नीचै दियोड़ी श्रेणियां में कियो जावै है—

(१) ग्रह संबंधी या नियमित हवां

(२) नियतकाळिक हवां

(३) मानसून आळी हवां

(४) स्थानीय हवां

अठै इणांरो संक्षेप में वर्णन करणो वाजिब रैसी।

(१) ग्रहीय या नियमित हवां— अगर आपां ओ मानर चालां कै धरती री सतह समान रूप सूं अर्थात् अेक-जियां समान गैराई री पाणी री परत सूं ढक्योड़ी है तो हवां रै नियमित रूप सूं गरम हुवण में किणी भांत रो कोई हस्तक्षेप को हुवैनी। इण कारण आपां आ आशा कर सकां हां कै भूमध्य रेखा रै च्यारूं कानी गरम अर नम हवा री पट्टी मौजूद है। इण तरह री हवा हळकी हुवण रै कारण ऊंची उठै अर ठंडी नै वेसी भारी हवा उतराद अर दिखणाद कानी सूं उणरी जागा लेवण खातर आ जावै। धरती रै परिभ्रमण रै कारण उत्तरी गोळार्ध रै मांय उत्तर-अगूण सूं अर दिखण गोळार्ध रै मांय दिखणाद-अगूण सूं अै हवां चालै। इण भांत री हवां वास्तव में आपांनै मिलै। इणांनै व्यापारिक (ट्रेड) अथवा मौसमी हवां कैया करै है।

अै हवां शक्ति अर दिशा में नियमित अर अविरळ यानी थिर हुवै है। जमीं माथै इणां री नियमितता में फरक आवै अर वठै नहीं भी मिलै। उष्ण कटिबंध प्रदेश में अै हवां अगूण सूं चालै।

सम शीतोष्ण कटिबंध आळा प्रदेशां में हवां इती नियमित रूप सूं कोनी वाजै। वै आथूण सूं चालै। इणांनै पश्चिम दिग्गामी वायु कैवै है। उत्तरी गोळार्ध में दिखणादी-आथूणी पून ई चाल्या करै है जकीनै प्रति-व्यापारिक (अेंटी ट्रेड) हवा कैवै है। दिखणादै गोळार्ध में अै हवां उतराद-आथूण सूं चालै। जे आपां संसार रै नकसै या ग्लोब माथै निजर नाखां तो आपांनै पतो चालसी कै दिखणाद वाळै समशीतोष्ण कटिबंध

रै मांय जमीं री अपेक्षा समंदर रो भाग घणो वेसी है। इण कारण अठै हवां नियमित रूप सूं चालै। उतरादै गोळार्ध में जमीं रो भाग वेसी हुवण सूं दिखणाद-आथूण आळी हवां काफी कम नियमित रूप सूं चालै।

(२) नियतकाळिक हवां— इण श्रेणी में आवण वाळी हवां में केई तो बै हवां हुवै जिकी थोड़ी देर ई चालै। अै हवां समंदर रै किनारै हुवै है। इण नै मंद पवन री संज्ञा देयीजै है। अै दो भांत री हुवै— १ समंदरआळी मंद पवन अर २ जमींआळी मंद पवन।

दिन री वगत जमीं समंदर री अपेक्षा वेगी तपै। जमीं रै तपण सूं हवा भी गरम हुय जावै। हळकी हुवण सूं वा ऊपर उठै अर उणरी जागां लेवण खातर ठंडी समंदरी मंद पवन आवै। समंदरी किनारां आळा स्थान, जे समंदरी मंद पवन नहीं चालै तो वास्तव में घणा तपण लाग जावै। रात री वगत समंदर री अपेक्षा जमीं ज्यादा वेगी ठंडी हुवै है। इण कारण जमींआळी ठंडी मंद पवन चालै। इणनै जमींआळी मंद पवन रो नांव दियो गयो है।

(३) मानसून आळी हवां— महाद्वीप जिसा धरती रा मोटा भूमिभाग गरमी र मौसम में घणा तप जावै है अर इणां-माथली हवा भी गरम हुयर ऊपर उठै नै उणरी जागां लेवण खातर महासागरां सूं ठंडी हवा चालर आवै। इण हवा नै मानसूनआळी हवा कैवै है। इणमें अर मंद पवन में इतोई फरक है कै मंद पवन तो थोड़ा घंटां वासतै ही चालै जदकै मानसूनआळी हवा वरस रा गरमीआळा पांच-छव महीनां तांई चाल बोकरै। सरदी रै मौसम में धरती रो महाद्वीप भाग घणो ठंडो हुय जावै अर इण खातर ठंडी, भारी हवा समंदर कानी चालै।

(४) स्थानीय हवां—इणां में खास हवां चक्रवात (बवंडर यानी भतूळियो) अर प्रति- चक्रवात है। इणांरै अलावा गरम पहाड़ी हवां, गरम अर सूखी मरुभूमिआळी हवां यानी रेतीली आंधी अर ठंडी पहाड़ी हवां री गिणती भी स्थानीय हवां में हुवै है।

वारिस या विरखा— जद नमी सूं तर हवा ठंडी हुवै तो संघनन हुवण लाग जावै। दूजै शब्दां में हवा में मौजूद भाप पाणी वणन लाग जावै। इण भांत विरखा वरसणी सरू हुय जावै अर हवा घणी ठंडी हुवै तो हिमपात हुवै यानी बरफ पड़ण लाग जावै। वरसणै में वारिस अर हिमपात दोनां री गिणती हुवै है। हवा नै नमी महासागर जिसा वडा भारी जळस्थळां री सतह माथै वाष्पीभवन सूं मिलै। नम हवा नै विरखा खातर ठंडी करणै रा केई तरीका है। वायुमंडळ रा ऊपरला अर घणा ठंडा भागां में हवा रै ऊपर उठण सूं विरखा हुवै, का पछै ठंडै प्रदेशां में नम वायुआळी हवा चालण सूं वारिस हुवै।

विरखा च्यार न्यारी-न्यारी भांत री हुवै—

(१) संनयनीय(Convectional)विरखा— धणा गरम प्रदेशां में अर्थात् भूमध्य रेखा

रै कनला प्रदेशां में वाष्पीभवन घणो हुवै । नम वायु सूकी हवा री अपेक्षा हळकी हुवण सूं तुरंत ऊपर उठ जावै । आ फैलै, ठंडी हुवै अर वरसण लाग जावै । इण भांत हुवण-आळी विरखा, जठै सूं हवा नै नमी मिलै, लगभग उणी जागां वरसै । आ विरखा भूमध्य रेखा रै कनला देशां में करीब-करीब रोजीनै ही हुवै ।

(२) **पर्वतीकृत विरखा**— जद महासागर सूं चाल्योड़ी हवा, जिणमें नमी काफी ज्यादा हुवै, स्थळ प्रदेशां में, जिकांमें पहाड़ी जागां हुवै, पूगै तो उणनै ऊपर उठणो पड़ै । ऊपर उठण सूं आ ठंडी हुय जावै । इणसूं विरखा वरसणी सरू हुय जावै ।

(३) **तूफानी विरखा**— तूफान जद आवै जणै गर्त अवनमन हुवै । इण पछै हवां केंद्र कानी अर साथै ही गर्त रै च्यारूं कानी वामावर्त दिशा में चालण लाग जावै । केंद्र में कम दबावआळो क्षेत्र हुवै जकैसूं ऊपर उठणआळी हवा री लैरां चालै । जे हवा में नमी है तो अै वायु-लैरां ऊपर उठै अर ठंडी हुयर वरसण लाग जावै ।

(४) **अंधड़आळी विरखा**— जद किणी जागां तेज आंधी चालै तो घणी वार विरखा भी पड़ै । इणमें अकास में गाज-गूंज खूब हुवै । वीजळी (तड़ित्) अकसर चमकै अर गड़गड़ाट हुवै ।

विरखा मापण खातर अेक तरै रो यंत्र हुया करै है । इणनै वर्षामापी यंत्र कैवै है । सगळी विरखा, जिकी अेक निश्चिव ठिकाणै माथै पड़ै, अेक फनल सूं हुयर अेक जार में भेळी हुय जावै है । ओ जार इण भांत रो वण्योड़ो हुवणो चाहीजै कै भेळै करयोड़ै पाणी री भाप नहीं वणै अर पाणी नै मापण रो प्रवंध हुवै । जद आपां कैवां कै आज पचीस मिलीलीटर विरखा हुयी है, तो इणरो मतळव ओ है कै आज विरखा सूं पड़योड़ो सगळो पाणी वठै ही वण्यो रैवै जठै वो वरस्यो है, तो उण जागां पचीस मिलीमीटर गैरी पाणी री परत वण सकै है । प्रकृति में ज्यूं ही विरखा हुवण सूं धरती माथै पाणी पड़ै, उणरो कीं भाग जमीं चूस लेवै । इणनै भूजळ कैवै है । पाणी कीं तो भाप वणर उड जावै, अर वाकी रो नदियां अर नाळां में वह जावै । हरेक दिन री विरखा रो रिकार्ड राख्यो जावै है । महिनै भर रै रिकार्ड नै जोड़र मासिक रिकार्ड त्यार करयो जावै, जिणसूं मासिक औसत विरगा रो पतो लागै ।

मात्रा रै हिसाव सूं विरखा रा अै च्यार प्रकार और मान्या जावै है—

(१) आछी विरखा — ८० इंच रै बरोबर
(२) साधारण विरखा — ४० सूं ८० इंच रै बरोबर
(३) कम विरखा — १५ सूं ४० इंच रै बरोबर
(४) बहोत कम विरखा— १५ इंच सूं कम

ऋतु या मौसम— साल में छव ऋतुवां हुवै है– वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत अर शिशिर । दबाव, तापमान, हवा, नमी, विरखा– अै सै मिलर मौसम वणावै है ।

राजस्थान प्रदेश में खासकर तीन भांत रो मौसम हुया करै है— चौमासो, सीयाळो अर ऊनाळो। कैयो जावै है कै मौसम रो भरोसो नहीं। अबार तावड़ो निकळचोड़ो है तो थोड़ी ताळ पछै विरखा री झड़ी भी लाग सकै है। मौसम री जानकारी दैनिक अखबारां में देयीजै है। रेडियै माथै भी इणरो प्रसारण हुवै है, पण पूरी जाणकारी तो मौसम-विभाग रै दफतर सूं ही मिलै।

जळवायु— जळवायु यानी आबहवा औसत मौसम रो नांव है। जे आपां कनै किणी जागां री औसत विरखा, तापमान, दबाव, आर्द्रता यानी नमी, वायुदिशा री सही जाणकारी हुवै तो आं सगळा औसत आंकड़ां नै अेक महीनै, अेक रुत अथवा अेक वरस रै वासतै मालम करनै उण माथै विचार करचां सूं आपांनै उण जागां री जळवायु रो पतो लाग सकै है।

इण तरै सूं आपांनै मालम पड़सी कै आपांरै दैनिक जीवण में हवा री किती ज्यादा उपयोगिता है। जीवण खातर पाणी अथवा भोजन विना कीं वखत तांई काम चाल सकै है, पण हवा विना थोड़ी ताळ ई काम को चालै नी। हवा में मौजूद आक्सीजन नै इण कारण ही प्राणवायु री संज्ञा दिरीजी है।

—वसुधा, अमरसिंहपुरा,
२४ गजनेर रोड, बीकानेर-३३४००१

तंवरां रो उपकार

(स्व० ठाकुर रामसिंहजी तंवर रो समरण)

— मनोहर शर्मा —

राजस्थानी रा रतन, रामसिंघ निरभीक
सुधी नरोत्तमदास अर, सूर्यकरण पारीक

रामसिंघ ग्यानी गुणी, पूरी करी पिछाण
राजस्थानी में प्रबळ, जागै भारत-प्राण

रामसिंघ कवि-जस लियो, जण-जण मुख जयकार
थिर गादी थापित करी, देवां रै दरबार

रामसिंघ री रस-कथा, अग-जग मांय अनूप
निरमळ धारा प्रेम री, पसरी पुन्न-सरूप

आतां नित आदर करै, जातां करै जुहार
चित सूं कदै न ऊतरै, तंवरां रो उपकार

□

अै कुणरा, आंरो कुण हुयसी ?

— सूर्यशंकर पारीक —

चूक्यां चाल आखड़ै बंदो मन में भैड़ा भाव भरै
दिशासूळ आंख्यां ओळींदो जद पण अबढा काम करै

सेकै सदा आपरी रोटी बीजां काची, भावै बळो
तिरिया मिरिया कानां तांई खाली हेठै पड़चो तळो

पापी पेट भरण रै सारू कुड़को रोपै मन में धार
पर धन हरण करै पण जलड़ा नीच करम नां करै विचार

निरबळियां सिर खोल खूंसड़ो सौ–सौ मारै अेक गिणै
खोलै थान–थान पण वातां, पण के आंगळ अेक मिणै ?

आवै तावै बियां अणावै, भलो क भूंडो सोचै कूण
खावै आप तणी पण मिसरी, बीजां तणो चबावै लूण

मोटो वण पोमावै मन में, गिणै न किण नै जूं जितरो
डांग– पटेली गांव गळी में, मन में धो राखै इतरो

टको टाल–सो गिणै आपरो, बीजै रै रुपियै में खोट
मतलब में आगै पग मेलै, मौकै सारू लेवै ओट

आडो खोल वड़ै घर दूजां, काछ लपट पण जती वणै
बोले जितरो सो पण खोटो, कूड़ कथै, कह साच भणै

जितरा काम करै सै माड़ा माड़ा नै पण भला कहै
काण कसर बीजां में काढै भूल भुंडाई सदा लहै

किण रा काम वीगड़चां राजी सुधरचां सांसै पड़ै घणो
भुंईतार सूं जुगळी जोड़ै कदै न राखै मिनखपणो

दाता रै आडो आ ऊभै नक्कारै में त्यार खड़ो
म्हारा घोड़ा म्हे पण पीयो भावै कोहर ढह पड़ो

ऊपर सूं बाबोजी दीसै नीचै खोज गधां रा है
झोळै मांही पड़्या जेवड़ा अै तो काम अधै रा है

धबसां धूड़ पड़ै उण माथै फेंक धूळिया डावी टांग
ऊत मिनख रो जूत गुरू है नातर घणो विगाड़ै सांग

मिनख-मिनख में घणो आंतरो मिनख- मिनख में बोळो फेर
अेक मिनख है फकत पाव रो अेक मिनख है पक्को सेर

मिलै सेर नै सवा सेर जद जद पण वात वणैली सार
लार पड़ो उणरै ले खेटर उणनै लेवो आंतरै मार

लतिया कद मानै वतियां सूं, लातां लाफस खावण जोग
घुत्तां सूं घी घाल घुंकावो, जद रोवै जद देखै लोग

वेस कांचळी में सूं काढै आंख मांयलो काजळ काढ
रोपण नै कोनी कीकरियो मतळब सूं लै पींपळ वाढ

अैड़ां नै अळगै सूं देख्यां हाथ जोड़ आदेश करो
देख फेरलो पूठ इणां सूं आंख मिलातां सदा डरो

अै कुणरा आंरो कुण हुयसी, गईवाळ रो भीरी कूण ?
नांव न मुख घालो अैड़ां रो कंवळै कदै न मांडो सूण

जोड़- कळा आंरी जोड़ी है सहजां ही जुड़गी ओळी
खाली अेक नमूनै दाखल आंमें काण–कसर बोहळी

□

— नगरपरिषद रै कनै, बीकानेर

पोथी – विमोचन

— अन्नाराम 'सुदामा' —

उद्‌घाटण अर मूर्ति–अनावरण दांई पोथी–विमोचन री परंपरा ही अबार चाल पड़ी । जलमती ही खाथी, कळजुग है नी । रोकै कुण ईंनै, लहर है आ तो । पण लारै ईंरै विवेक कम है, भूख जादा । भूख पेट री नहीं, पूछ अर पईसै री । पण बीं भूख रो कांई अंत, लिलाड़ पर लागी बूक है बा तो । सावधानी नीं राख्यां, लेखक नै खतरो है बींसूं । कुण जाणै, कद बा बींरी प्रतिभा रै कंठां पर हाथ मेलदै ? गूंगी रो कांई भरोसो ?

संस्था–संस्थान, संघ–संमेलन अर दूजी रच–रचावां रा उद्‌घाटण आयै दिन हुवै, हुवो, सै आछा ही है— आप- आप री सीमा में । आवश्यकता बांरी पईसो, उद्देश्य बांरो सेवा, पण ऊमर बांरी आछै कार्यकर्तावां अर आछै व्यवस्थापकां सागै पूरी हुवै, पछै ही जियै कोई तो दीपतै साइनबोर्डां लारै भुगत-भुगतर घटता पूरा भलां ही करो, जीणै में लूण-लखण कीं नी । नां सर्मपित जीवण वेगा सा जुड़ै अर नां बो जीवण सुधरै । सुधरै तो देखलो, सर्मपित जीवणां रै अभाव में हाडो ले बैठो गणगौर नै, संसार–प्रसिद्ध, राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस जिसी ही तीन–तेरह हुवती खिडगी, छांया बींरी इतिहास रै पानां में ही रैयी है, जनचेतना में कठै ? जीमग्या पदलोलुप बींनै । राष्ट्र सूं सांवटीजती बा अेक आदमी में जा वड़ी, आदमी गयो तो बा लारै कियां रैवती ?

मूर्ति अनावरण हुवै, चोखो ही है, दोरी कींरै ? पण बा धातु री हुवै चावै भाठै री हुवै, जड़ ही है । बा कोई इतिहास उजाळती लोकसेवी चेतना रै नांव पर खड़ी करचोड़ी है तो बींनै देख्यां जीसोरो, चेतना पर प्रेरणा री कीं लीकां मंडै, पद-पईसां अर भाई–भतीजावाद री सांकड़ी धरती पर खड़ी हुवै बा तो बीं कनकर निकळतै समझदार री नां आंख्यां तृप्त हुवै अर नां काळजो । बींरै नाक में ही सळ अर बींरी चेतना में ही । ऊमर बींरी कितीक, चोरी अर टूट-फूट कीं ई हु सकै है बींरो, अंधारै-उजाळै चालतो ही कोई टांचो दे नाखै नाक-आंख पर तो चैरो खांडो, खांडी मूर्ति और ही माड़ी । कीं हुवो, अबार री राजनीति में मूर्ति-अनावरण ही आपरी टांग पूरी अड़ा राखी है, ढीली हुवण रा आसार कम, दिन-दिन बा काठी हुवती ही लागै है ।

अर पोथी-विमोचन ? बाबैआळा घी-तेल देयर ऊंठ आरड़ावै तो आपां पाणी देयर ही सही, पण बांसूं लारै क्यों ? रोग असली ओ है, अर ओ वेगो सो मिटणो ही ओखो है । विमोचन रो पोथी सागै सहज मेळ नीं— बींनै अेकर लारै मेलर, पोथी

कानी देखो पैलां । सरीर में बा सगळां सूं छोटी, पण ऊमर बींरी सगळां सूं लांबी । नालंदा अर तक्षशिला जिसी संस्थावां नै काळ जीमग्यो, पण आ बींरै तावै नीं आवै वेगी सी । विचार अर अभिव्यक्ति जीवण है ईंरो । बै काळ री जाड़ां नीचै कियां आवै ? चोर-डाकू अर भूल्यै-भटक्यै नै आ दिस दे सकै है, अंधकार सेवतै नै उजास कानी मोड़ सकै है, आ चावै तो प्यार में बांध दै कितां नै ही, अर ईं री मनस्या हुवै तो आ विना तोप-तरवारां रै क्रांति खड़ी कर दै । ईंरी मार रो कोई माप नीं । अणुबम छिणभंगुर है, आ घणी सबळी है बींसूं । 'कैनन बाल्स मे अेड दी ट्रुथ, बट थॉट' ज अे वैपन स्ट्रोंगर', स्याणी दुनियां रो ढांचो ही सगळो विचारां सूं चालै, अणुबमां सूं नीं । पोथी रो ओ महत्व, पण रचनाकार बींरो जद विमोचन री बंजर धरती पर आ खड़ो हुवै तो पोथी रोवै अर रचनाकार राजी हुवै, तमासो देखो थे !

रघुवंश अर रामायण रो विमोचन कुण करचो अर कद हुयो ? गोदान अर गीतांजळी रो विमोचन किसै मंत्री करचो ? शेक्सपीयर अर शैली, टाल्सटाय अर गोर्की री पोथ्यां विना विमोचन ही चमकगी, ओजूं चमकै अर चमकती रैसी आगै । बांरो विमोचन तो पाठकां री चेतन धरती पर हुयो, पोथी रो असली विमोचन करै ही पाठक है । अवकास रै किसै ही क्षणां में हु सकै है बो अर किसी ही परिस्थिति में । पोथी में धूड़ रा दो दाणा ही नीं हुवै, डील रो भार ही हुवै खाली का मूंढो रंग्योड़ो ही, बींरो विमोचन चावै राष्ट्रपति अर प्रधानमंत्री करदै तो कांई हुवै ? बींनै पढणो तो दूर, स्याणो पाठक आलू--कांदां रै भाव ही नीं लेवै बींनै । बीं खूणै-पड़ी जेट नै कसारचां भलां ही जीमो, का धीरै–धीरै चूलो लाड करै बांरो । पोथी जे लेखक रै ओछै कामना-जाळ सूं ऊपर उठर रचीज्योड़ी है तो नां बींनै विमोचन री जरूरत अर नां किणी आंधै आकर्षण कानी झांकण री ।

लेखक गरीब हु सकै है— जड़ धन री दृष्टि सूं, पड़चो हुवो । बा गरीबी चेतना री थोड़ी ई है, सरीर री है बा तो, जिकी रोज मरै–जलमै बींरो कांई, पग कठै बींरा ? धन तो विचारां में है । सुख अर शालीनता तो मन में है— सात गांठ कौपीन के, इंद्र विचारा कौण ?

वेगो सो लखपति अर लोकप्रिय वणन नै लेखक री लुक्योड़ी लालसा मोको तकै— आंख्यां फाड़-फाड़र । मंत्री–उपमंत्री, पख रो कोई अेम० अेल० अे०– अेम० पी० अर नेता, कोई जद कद दोरै पर घूमतो आवै तो कोई न कोई खथावळो लेखक भागा-दौड़ी करनै पोथी-विमोचन करावण री व्यवस्था खड़ी कर लेवै, चुणाव रै नेड़ै दिनां में तो खासकर । औरां री तो ठा नीं, पण लेखक आछी तरै सूं जाणै है कै विमोचन-कर्ता भाईजी रै चरित्री चैरै पर ईमानदारी री केसर-कूंकूं रो छांटो सोध्यो ही नीं लाधै, बेईमानी सूं चांकीजी लीलां रो जाळ सगळां नै ठा है, पण बींनै ईंसूं कांई, आयोड़ो अवसर कियां जावण दै ? गयां पछै मोज करो ।

माथै–चोटी कर–करार पोथी रो चैरो कियां देख्यो है, बो ही जाणै । ईंरो जे कींरै ही करकमलां सूं विमोचन हुग्यो तो अगलो–लारलो दाळद सगळो धुप जासी अर कुण जाणै मुनाफै रा किता नूंवा राजमार्ग खुल पड़सी ?

कार्ड छपवावै । आंधो नूंतै दो जिमावै, अध्यक्ष सागै कोई मुख्य अतिथि ठायो और करै । आपरी पोटी सारू कीं चाय–पाणी रो बंदोबस्त ही करै । जूतां में पग वढावै, दुख पावै, पण जीभ लालसा पकड़ राखी है, बोल नीं सकै, माथै पर मोह पग दे राख्या है, ऊंडो नीं सोचण दै बो । पण इतै सूं किसो सरै, बांरै गळां पर नाखण नै पांच-सात माळां ही लावै । गळा बांरा माळां अर मिठायां रा आदी हुयोड़ा हुवै, सागै कूड़ा वादा अर आश्वासन उगळन रा ही । कूड़ी प्रसंसा सुण-सुणर बांरा कान, ऊपरी कमाई अर जोड़--तोड़ कर-कर बांरी क्रिया, अर स्वागत-सत्कारां सूं घिर-घिर बांरी दीठ—अंग-अंग बांरो रोगलो । वां कनै सूं पोथी–विमोचन । विमोचन हुतां ही बा, सियाळै में गरम गुलगुलां सी हाथो-हाथ विकसी कांई ? कंगाली में आटो गीलो, वीं भीड़ में दस-पांच पोथ्यां भांग रै भाड़ै और जासी, बो चिरमिराट और, अर जावतो कोई अैठै हाथ सूं हाथ पूंछण रै मिस ही थापी नीं दै ।

विमोचन-कर्ता, लेखक खातर आसीरवाद रा दो शब्द कह ही सकै है अर कार्यक्रम घणो व्यस्त बतार पाधरो ही खिसकै तो कुण पालै बींनै ? पण लेखक नै तो आपरा सगळा विशेषण भेळा करनै काळजै सूं कैवणो पड़ै कै सरकार अर समाज रै कामां सूं आपनै तो सास खावण नै ही फुरसत नीं, फेर अध-घंटो आपरी नींद रो काटर अठै दियो है ईंसूं वेसी साहित्यनिष्ठा और कांई हुसी, हूं ऊमर भर ही ईं अैसान नै नीं भूल सकूं अर फेर वडायां रा पुळ-– कांई ठा किता लांबा, किता ऊंचा, कांई ठिकाणो बांरो ?

कवि, लेखक, इयां भांड हुयोड़ा ओपै कांई ? पण भूख ऊपरकर फिरचां पछै कांई छोडै ? ‘कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना, सिर धुनि गिरा लाग पछिताना’—कूड़ री इयां प्रसंसा करचां सुरसती तो सिर धुणै ही, कूकै कृति ही कम कोनी । लेखक री शालीनता री आ सस्ती हत्या विमोचन रै उत्सव नै आंगळ ही ऊपर नीं उठण दै । आसार माड़ा है । कितो मूंघो पड़ै ओ विमोचन ? पण ‘जिसी थारी ढोलकी, बिसो म्हारो नाच’, दिखाऊ अर प्रचारू विमोचनां में जीवंत अर जुग-जुग जीवै जिसी पोथ्यां कठै ? नां बा बाढ रुकै अर नां अै सस्ता विमोचन ।

—बाबा सालमनाथ प्याऊ रै कनै,
गंगाशहर (बीकानेर)

□

बीं टैम : अबै

— मदन केव़ळिया —

बीं टैम—
जिनगी री कंटजोड़ में अळूझ्योड़ो
संव़ेदनावां सूं जुड़्योड़ो
बो कवितावां लिख्या करतो हो,
हिवड़ै री चहक नैं जरू भाषा दिया करतो हो,
क्यूंकै बो अेक वगत भूखो सोव़तो हो ।

अबै—
बो मुखर हुयग्यो है,
चहचंद मना रैयो है,
जिनात सूं वधर वातां कर रैयो है,
इन्कलाब रा सबद
फिलमी गीतां दांई उणरै
होठां तांई आय–जाय रैया है ।
उणरो जोम जळां जियां जळ-बळ हुय रैयो है,
अबै बो संवेदनावां सूं परै है
क्यूंकै बो अबै कमाव़ण लागग्यो है ।

▭

— पार्व़ती सदन, जोशीवाड़ो, बीकानेर

ऊनी गलीचां रो निर्यात-सम्राट् : वीकानेर

— किशनचंद बोथरा —

वीकानेर नै संसार में गलीचा वुणन खातर सब सूं चोखी ऊन रै उत्पादन रो विशिष्ट गौरव प्राप्त है। राजस्थान देश भर में उत्पादित ऊन रो चाळीस प्रतिशत भाग पैदा करणआळो अेकमात्र प्रदेश है। भारत में आ सबसूं वडी ऊन-मंडी है। आपांरै देश में अठै ही सगळा सूं मोटो ऊन रो बहुयोजी उदद्योग-समूह है। पण आ दुर्भाग्य री वात है कै ओ गलीचां रै उत्पादन अर उणांनै निर्यात करण में आपरो थोड़ो-सो पार्ट भी अदा करण में वुरी तरै असफळ रैयो है। भारत रो कुल गलीचा-निर्यात वरस में डेढ करोड़ रुपिया मोल सूं वेसी है। निस्संदेह, निर्यात हुयोड़ा गलीचा हाथ सूं वुण्योड़ा है, मसीनां सूं वण्योड़ा नहीं। मसीन-निर्मित गलीचा वुणन रो काम हाल में ही विकसित हुयो है। भारत में मसीनां सूं वण्योड़ै गलीचां रो निर्यात रै मामलै में, संसार भर में इणां रै उत्पाद नै देखतां जिका मान अर निर्मित धागां नै काम में लेयर भांत-भांत रै डिजाइनां (वणत) अर किसमां, जिकी उन्नत प्राविधियां रै सागै वदळती रैवै, भविष्य निराशा-जनक है। ओ ही नहीं, ऊन अर ऊन री वण्योड़ी चीजां रै कुल निर्यात रो सब सूं मोटो भाग गलीचां रै हिसै में आवै है और उणांसूं खाली दुर्लभ मुद्रा री ही देश नै प्राप्ति हुवै है जदकै वनियाइन अर मौजां जिसी ऊन री दूजी चीजां मात्र पाश्चात्य साम्यवादी देशां में खासकर सोवियत रूस में निर्यात करीजै है जिणसूं देश नै दुर्लभ मुद्रा मिलै कोनी। इण पर गलीचां रो निर्यात, ठीक ऊन रै चुणाव सूं लेयर गलीचां रै धागै री वुणाई, रंगाई, गलीचां रो निर्माण, परिसज्जन अर अंत में निर्यात करणो, अेक श्रमसाध्य काम है। इण कारण ओ उत्पाद इसो है जिकै में सगळां सूं वेसी श्रमिक-नियोजन करणो पड़ै।

इण तरै रा मनोरम उत्पादां रै कारण स्वभावत: आ आशा करी जावै है कै वो देश, प्रदेश या प्रदेश रो भाग जिको उण कचै माल रो उत्पादन करै अर जिकै नै देश भर में सबसूं वडै ऊनी गलीचै वुणन रै धागै रै निर्माणवाळै उदद्योग-समूह रै हुवण रो गौरव प्राप्त है, उणरै आखरी उत्पाद नै वणावण अर निर्यात करणै में सबसूं अगाड़ी रैवै। पण आ देखतां तरस आवै कै इण दयनीय स्थिति रै कारण ओ बुरी तरै घणोई लारै रैयग्यो है। इणरै विपरीत सबसूं मोटो अचंबो ओ है कै वाराणसी कनै भदोही जिसै अेक नगण्य स्थान रो देश रै सबसूं प्रमुख गलीचा-निर्माण अर निर्यात करणआळै केंद्र रै रूप में अचाणचक आविर्भाव हुयग्यो है। इण जागां नां तो ऊन मिलै अर नां ही इणरो गलीचा-निर्माण रो पूर्व-इतिहास या पृष्ठभूमि है। बेशक मिर्जापुर अर आसपास रै

स्थान में मामूली-सी छोटी शरूआत हुयी ही पण बा कोई महताऊ बात नीं ही, अर उणरी आगै चालर कोई खास प्रगति को हुयी नी। अेक जमानो हो जद भदोही रा गलीचा घणा घटिया दरजै रा मानीजता हा। वै निकमा गलीचां सूं चोखा कोनी हा, जदकै जयपुर, ग्वालियर, आगरा, अमृतसर, अर कश्मीर रा गलीचा ऊंचै दरजै रा मानीजता हा। ग्रंथि-अनुसार अर्थात् प्रति वर्गइंच में आवणआळी ग्रंथियां अर्थात् गांठां रै अनुसार अर डिजाइन मुजब अर गुणां रै अनुसार उपर्युक्त कटिबंधां रै गलीचां रो आपरो न्यारो ही स्वरूप हो और भदोही रै वासतै तो जयपुर, आगरा, ग्वालियर कोटि बाबत सोचणो भी अेक सपनो सो ही हो। कश्मीर कोटि रै गलीचां रै उत्पादन रो तो कोई सवाल ही कोनी। पण ईश्वर नै धन्यवाद, अर धन्यवाद है भदोही–मिर्जापुर कटिबंधआळा कारीगरां रै उत्साह, अनुकूलन अर शिल्पकळा नै, कै अबै इण कटिबंध में बण्योड़ा गलीचा वास्तव में सिरै किसम रा मान्या जावै है। वै कश्मीरी गलीचां सूं भी चोखा समझ्या जावै है। प्रति वर्गइंच ३२४ अर ४०० गांठआळा कश्मीरी गलीचा लगैटगै १६००) रु० अर १८००) रु० प्रति वर्गमीटर जहाज तांई निष्प्रभार कीमत पर निर्यात करीजै है जदकै आछी किस्म रो गलीचो, जिकैमें २५० गांठां प्रति वर्गइंच हुवै, प्रति मीटर २०००) रु० (जहाज तांई निष्प्रभार) कीमत पर निर्यात करचो जावै है। कीमत में इतो भारी फरक क्यूं ? इयां क्यूं हुवै ? बात खाली आ है कै गलीचै री गुणवत्ता में आधारभूत फरक है, कैय सकां हां कै ओ उणमें व्यापक कारीगरी रै कारण है।

अंतर्देशीय गलीचा बजार में भदोही–मिर्जापुर गलीचा कटिबंध आपरो घणो ही प्रख्यात स्थान हाल ही में बणा लियो है, इतो प्रख्यात कै हाथ सूं बुण्योड़ा गलीचां रै खातर भदोही जावणो अर आपरै पसंद रै उत्पाद वासतै बठै रै किणी अेक निर्यातक सूं सोदो करणो जरूरी है। भारत में ओ अेकमात्र कटिबंध है अर इयां कैयो जावै तो और ई ठीक, कै संसार में ओ अेकलो इसो जेबी अर्थात् छोटो क्षेत्र है जठै ठीक १००) रु० प्रति वर्गमीटर सूं लेयर २५००) रु० प्रति वर्गमीटर री कीमत रा अर्थात् सस्तै सूं सस्ता अर महंगा गलीचा बणै है। इण तरै सूं ओ कम आमदनीआळा लोगां री जरूरत पूरी करै है। इतो बेसी जादूभरचो प्रभाव करणियै इण गलीचा निर्यात करणआळै कटिबंध रै इण तरै री सिद्धि–प्राप्ति रो रहस्य आसानी सूं मालम करचो जा सकै है। मात्र दो दशक पैली इण सागी कटिबंध या गलीचा बणावणआळा अर निर्यातकां नै इणरी सुराग तक को ही नी कै अेक दिन ओ कटिबंध हाथ सूं बुण्या गलीचां रै निर्यात रै मामलै में नां केवल देश रो नेतृत्व करसी पण हास सूं बण्योड़ा गलीचां खातर अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण रो कारण बण जासी। उण वगत रा बण्योड़ा गलीचा घणी कोझी ऊन सूं हाथ सूं कात्योड़ै धागै सूं कम ग्रंथिआळा हुया करता। इणमें गांठचां प्रति वर्गइंच २०–२५ तांई हुवती। थोड़ा–सा गलीचा ही मसीनां सूं कात्योड़ै आछी ऊन रै धागां सूं बणाया जावता। उण वगत बीकानेरी ऊन रै प्रवेश रो युग सरू हुयो। धीरै–धीरै बीकानेरी ऊन रा मिलां में कत्योड़ा महीन धागां दूसरा हाथ अर मिल सूं

कत्योड़ा ऊनी धागां रो स्थान लेय लियो। इणसूं गलीचां में ग्रंथि अर गुणवत्ता में नाटकीय परिवर्तन हुयो। सैकड़ां बरसां सूं ईरानी गलीचा संसार भर में सबसूं वढिया मानीजता आया है अर उणनै आपरै अठै राखणो अेक गौरव री बात मानीजती ही। गलीचा-उत्पादन में किणी भांत री सिद्धि री उपलब्धि रै खातर ईरानी डिजाइन अर ईरानी गुणवत्ता रै चयन सूं वधर और चोखी पसंद को हु सकै नी।

शरुक-मीर डिजाइन रै ईरानी गलीचां रै उत्पादन री खासी चोखी शरुआत करीजी ही। नाना भांत री गुणवत्ता अर विस्तृत ग्रंथि परास (range) री लगभग सगळी चुण्योडी ईरानी डिजाइनां में गलीचां रै उत्पादन री गति अर निर्यात में वेगी ही तेजी आवण लागगी। पण किसी ऊन सूं? चोखै गलीचां रो खास आधार ऊन है। सगळी री सगळी ऊन वीकानेर री ही। वीकानेर में ऊनी कताई उदचोग भी सागै ई तेजी सूं पनप्यो। आ बात आछी तरै सूं स्पष्ट ही कै भारत में ईरानी डिजाइन अर ईरानी किसम रै गलीचां रो उत्पादन जणै ही दूसरां रै मुकाबलै सिरै हुय सकै जदकै उणांरो आधार वीकानेरी ऊन हुवै। इण कारण वीकानेर में ऊनी गलीचां रै धागां री कताई-उदचोग में, भदोही कटिबंध में वढिया किसम रै गलीचा वणावण में धीरै-धीरै आगै वधणै रै साथै ही गति आयगी।

तथ्य ओ है कै अबार वीकानेर में धागां री कताई-इकाइयां पचास सूं कम कोनी। अै सगळी भदोही री मांग नै पूरी करण खातर आपरी साज-सज्जा में वधोतरी करै है। भदोही भी फेरूं वीकानेर रै गलीचां रै धागै माथै निर्भर है। वीकानेर में ऊनी उदचोग रै इण विलक्षण विकास नै देखर राजस्थान रै दूसरै भागां रै उदचोगपतियां रै मन में उण भागां में ओ सागी उदचोग सरू करण सारू आगै आवण री इंछा जागी। राजस्थान में ऊन रा केई छोटा सीमित स्थळ व्यावर अर जोधपुर जिसै भाग में है। इणां स्थळां में ऊन वीकानेरी ऊन सूं घणी घटिया दरजै री हुवता थकां ई राजस्थान में वीकानेर रै अलावा दूजी सगळी जागां वापरीजण लागगी। वीकानेरी ऊन रै विना इणांरी ऊन में घणो टिकाऊपणो को हो नी। वीकानेर री सगळी कताई-खिमता खाली सगळै भदोई-मिर्जापुर कटिवंध री मांग पूरी करण नै ई नीं, पण दूजा सगळा ऊनी गलीचा उत्पादक कटिवंधां ज्यूं– जयपुर- आगरा-ग्वालियर कटिबंध, अमृतसर-कश्मीर कटिवंध अर दक्षिण भारत रै अेलूरु कटिवंध री मांग भी पूरणै में पूरी तरै लागगी।

देश में गलीचा-ऊन अर धागै रै विपणन दोनां में वीकानेर रो नेतृत्व रैयो है, आ धारणा राखर केई जणा संतोष कर लेवै है, पण साचै प्रेक्षक नै आ मालम हुयां घणो झटको लागसी कै उदचोग लगावणआळा आकांक्षी लोगां में कोई भी गलीचां रै निर्माण अर निर्यात करण खातर मोकै रो फायदो उठावण सारू आगै को आयो नीं, जदकै खाली उणरी ऊन सूं ही देश रै दूजै भाग भदोही रा उदचोगाकांक्षी व्यवसायी लोगां इणी दिशा में तेजी सूं प्रगति कर ली है। इणरो मतलब ओ है कै वीकानेर रै उदचोगपतियां में

उत्साह अर लगन री धापर कमी है। अठै रै किणी भी व्यवसायी री सक्रियता व्यापार तांई सीमित है। धागां री कताई भी घणकरी काम रै आधार पर करावणी, व्यापार रो भाग अर खंड वणगी है। इण खातर इण वात में तो प्रगति रो कीं भी हवालो देवणो ठीक कोनी। गलीचा उत्पादन पुरोभाग में दूजी केई संभावनावां हुय सकै है। क्यूं कै सगळै ऊन-व्यापार रो अर सारै कताई-उदचोग रो ऊंचो उठणो भदोही कटिवंध खातर हुयो है। अर गलीचां रै उत्पादन अर निर्यात खातर अठै अवस्थापना रूपी सहूलतां पैलां सूं मौजूद है, इण खातर इण कटिवंध में गलीचा उदचोग री सरूआत अठै अर वीकानेर या इणरै लागता सीमित क्षेत्रां में भावी विकास रै खातर मारग वणावण में आछी भूमिका निभा सकै ही। पण इण कानी खाली मूक दर्शक वण्यो रैवणो कदैई किणी नै भी ऊपर उठण खातर मददगार कोनी हुय सकै।

वीकानेर या उणरै आसपास गलीचां रै उत्पादन रो विकास नहीं हुवण खातर सगळो दोस स्थानीय उदचोग-आकांक्षी लोगां रै लजाळू स्वभाव नै ही कोनी देय सकां, अपितु राजस्थान सरकार भी इण खातर वरावर रूप में जिमेवार है। अवस्थापनाआळी सहूलतां जुटावण री तरफ कीं काम कोनी करीज्यो। किणी आधार रै विना किणी विशेष उदचोग री प्रगति सदा ई अेक समस्या ई सावत हुवै है। खाली गलीचा-ऊन अर गलीचां रै धागै री खासै परिमाण में उपलब्धि अपणै आप ई अवस्थापना कोनी वण सकै। सरकार री तरफ सूं अेक पूरै जी-जमाऊ जांच-पड़ताल रै प्रयत्न री जरूरत सगळै वातावरण रै सुधार अर पृष्ठभूमि रै विकास खातर महसूस हुवै है। गलीचां रै निर्माण वासतै प्रशिक्षण देवण सारू ग्रामीण शिक्षा में आधारभूत परिवर्तन लावण वासतै सरकार रो ध्यान घणी वार आकर्षित करयो गयो हो। ओ वणकरो मध्यमवर्गीय शिक्षा तांई रैयो है। किणी भी मापदंड सूं ओ कैयो जा सकै है कै गांवां में अबारआळी शिक्षा किणी भी भांत रो रोजगार देवण वासतै या किणी विषय रो कोई ज्ञान करावण में कोई हिसो नीं लियो है। आ उपयोगी मतलव साधण में पूरी तरै असफळ रैयी है। इणरै विपरीत राज रै कोष माथै आ अेक भारी वोझ है। इण कारण गलीचा शिल्प-प्रशिक्षण री दिशा में क्यूं नीं इण देहाती शिक्षा नै पूरी तरै केंद्रित कर दी जावै। छठी सूं आठवीं कक्षा तांई रा विदचार्थियां नै गलीचां रा मैप वणावणै, गलीचां री डिजाइन त्यार करणै, गलीचां रा ग्राफ पढणै, किनारा कतरणै, गलीचां री धुलाई अर अंत में उणांरी परिसज्जा री प्राथमिक शिक्षा देवण री दिशा में पूरी तरै लगा दिया जावै जिणसूं विदचार्थी आपरी शिक्षा री समाप्ति पछै निर्विघ्न रूप सूं गलीचा वणावण रै व्यवसाय में लाग जावै। आ उणांरी अतिरिक्त आमदनी हुय सकै है जिका कृषिकार्या-भिमुख है। उण लोगां रै वासतै, जिकां कनै कोई जमीन नहीं है, आ शिक्षा आय रो चोखो जरियो वण सकै है जे परिवार रो अेक सदस्य ओ प्रशिक्षण लेयर परवार रै दूसरै सदस्यां नै आपरै हेठै काम में लगा सकै। वो गलीचै नै अंतिम रूप देवण खातर हरेक नै स्वतंत्र रूप सूं न्यारो-न्यारो काम भोळाय सकै है।

वगत सफळता रो सत्व है। अबै साचाणीज उचित वगत आयग्यो है जद गलीचा-उत्पादन रै विकास में आगै आयर कीं-न-कीं करणो चाहीजै। नहीं तो, बो दिन दूर कोनी जद देश रै दूसरा सगळा भागां में, विशेषकर उत्तरप्रदेश री सीमा सूं लाग्योड़ा प्रदेशां में, ओ पूरी तरै रोजगार देवणआळो अर विदेशी मुद्रा कमावणआळो उदचोग ऊंचो उठैला अर खाली जागा नै भर देवैला। कीं ई हुवै, चाहै कितो ही चोखो भविष्य क्यूं नीं हुवै, किणी खास उदचोग रै विकास खातर वगत री कोई सीमा हुया करै है। इण कारण सरकार नै इण प्रायोजना नै सगळां सूं वेसी प्राथमिकता देवणी चाहीजै। सागै ई वीकानेर-निवासियां नै भी लारै नहीं रैवणो चाहीजै। उणांनै इण कैवत पर ध्यान देवणो चाहीजै— 'जद तांई सूरज चमक रैयो है, जळदी-जळदी काम कर लेवणो चाहीजै' अर आपरो सिक्को जमा लेवणो चाहीजै। 'उत्तिष्ठ जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत'।

—पार्टनर, वीकानेर वुलेन मिल्ज,
इंडस्ट्रियल अेरिया, वीकानेर

घर री ओपमा

मोटा घर, गयां न लागइ कर। वित्तना डोकर, घणा धाननो भर। चिहुं खूणे वासइ अगर, सेज फूलनी पगर। मोटा डागळा, तिहां जड़्या प्रवाळा। मोटी साळा, सोना रूपानी टकसाळा। मोटा किवाड़, तिहां केलिना झाड़। जीमइ प्राहुणानी ओळ, घूमइ विलोवणा झकझोळ, सूहव नारी करइ रंगरोळ। साधुनइ दीजै दान, घणा पकवान, उन्हा धान, रूड़ै वान, दया पाळै, दुखियाना दुख टाळइ। भिख्यारी नइ दीजइ अन्न, तोल न पाम्यो धन्न। जातां आवतां आदर करइ— अेहवा साहूकारना घर धन सहित छइ।

(श्री अगरचंद नाहटा संपादित 'सभा-शृंगार सूं')

वतन रै वासतै

— ब्रजनारायण पुरोहित —

वतन रै वासतै जीणो
वतन रै वासतै मरणो
वतन री जिंदगाणी बा
वतन रो मान घण करणो
जिणी माटी सूं तन वणियो
उणी माटी हुयो पोषण
इणीरो निरख सुभ रुतबो
मानवां रो करां तोषण
पवित भू जलमिया पूतां
वधायो मान माता रो
जवाहरलाल मोती-सा
महात्मा अमरपद वांरो
सिंघ आजाद-सा हुयग्या
भगतसिंघ सिंघ नेताजी
इसां ई अणगिणत नखतां
प्रकासी रोसनी ताजी
करचो बळिदान घण वीरां
काय हंस—हांस कर वारी
करी आजाद जननी नै
होयगी मात सुखकारी
हरसियो मात-मन हुळस्यो
तिरंगो गगन-विच विलस्यो
खुसी सूं झूम 'जन-गण-मन'
गावतां सदा मन हरस्यो
माता री सेवा करणै रो करड़ो नेम धरां
भारत री भल आजादी रो ऊजळ रूप करां

—हिंदी विभाग, डूंगर महाविदयालय
वीकानेर

गोकरण

— ओंकारश्री —

जीव् रो जीव् दुसमी ही नीं हुवै, संकट–साथी भी हुवै। अेक दूजै खातर जान देवै।

घणी टैम नीं हुयी। अेकरसी दो नामी अखाड़च्यां में वैर बंधग्यो। वात वधी। बामण–वाणियां रै होळीदड़ै माथै दोनूं आमा–सामा मच्या। देखतां–देखतां लाठा माथै लाठा तूटण लाग्या। गणेसियो अखाड़ची अचाणचक आखड़ पड़चो। वो उठतो उणसूं पैली चंदण धोवी रो वार चेतग्यो। खिणाखिण रा खेल। लोग देखता रैग्या कै गणेसियो मौत रै मूंढै ढूकतो उणसूं पैलां अेक गोधो आनन-फानन दोनां विचाळै आय ऊभो हुयो। गणेसियो वचग्यो। लोग कैवै है कै गोकरण री जान इयांई अेक वार उणरै हाथां वची ही।

विज्ञान आं जीव्-संवधां माथै हाल ऊंडी पैठ नीं पाय सक्यो है। गोकरण— साखियात नंदीसर। उणरी राठ-काठ रो गोधो हुयो-न-हुसी। वो पसूजूण में आयो। पण मिनखां सूं वेसी मोहबत-आळो, समझदार अर भोळो भंडारी।

लोग गोकरण नै आज भी माईतां री ओळ में चितारै, आदरै। घणा किस्सा इण जीव् रा। वो जीव् कांई हो, अपणै आप में पूरी अेक जीवंत जूण हो।

गोकरण दड़ूक रो सुकाळ–सुगंतरी। सेठ-साहूकार, मुनीम–मजूर, पिंडत-पुजारी, मारजा नै अहलकार, इणरी दड़ूक रा सुगन मनावता।

पाठक भायां! मानो नां मानो, थांरी मरजी। गोकरण जोतसी हो। वूढा–वडेरां सुणी वात साची कै गोकरण, प्रश्नआळै मिनख-लुगाई रो जवाव आपरी गावड़ हां- नां में हलार देवतो। गोकरण रा सुगन—साव् साचा, काळ-कसौटी खरा ऊतरचा।

टावरां में टावर। घणा खेला करतो। वो जूनी जाळ री छियां में वैठो जद मून- उगाळी सारतो, टावर आवता, उणरी थुई थळथळावता, उणरी आळ हलावता, उणरै सींगां नै मचकावता, उण माथै सवारी कसता। पण गोकरण टावर-टींगरां माथै कदैई रीस नीं करतो।

वार-तिवारां गोकरण रा ठाठ। अकड़ू जीव् नीं हो। हेत-भूखो। मनवार-काचो। कोई जजमान पींडो देवण सारू उणनै हेलावतो तो 'आव्-आव्-आव् रे गोकरण' री मानपूरी वाणी—हेलै-साथै होळै-होळै आपरी मस्त मचकवीं चाल सूं दाता रै दवारै ढूकतो। पींडो गटकायो अर खिसक्यो। गोकरण ल्याहड़ो तो हो ही कोनी। संतोसी सदा सुखी। गळी-गुवाड़ रो पोरायत। सूरजजी रो लाखीणो साखीणो सांड!

चेतै री चूळ चढ्यां घणा-घणा चितराम है गोकरण रा । बो दिन में रैस्ट फरमा-व़तो । रात री वात ही न्यारी । खायो-पीयो मदछक । जोध-जवानी चढ्यो गोधो गजबी हो गोकरण । रईसां, पिंडतां, ठाकरां अर नगर-ग्वाळां पाळी नसली गायां रो गोकरण--- ठावो़ कुळपति !

चांदणी रात । चौकां-चौकां गायां-टोघड़ां रा गेघट माचता जिकां दिनां । बै दिन धन-धीणै रा भरपूर । बै दिन सुखी जीवण सूं सैंपूर । तांबाळ माती देह रो गोकरण जाणै कद कठीनै सूं नीसरनै चुपचाप आय जमनड़ी, गंगली, गवरां, गोमती नै झूमर सिरखी रितुवंती दाठीक गायां री उडीक फळाव़ै । पण आव़ै आपरै ठरकै सूं । करड काठो । डाक आछो । मान राखर मान रखाव़तो । कदैई-कदास उणरो भोड भिड़तो तो पोकरण सूं ।

पोकरण जनता रो, नै गोकरण सेठां रो । दोनूं अेक-अेक रा गुरु । कदैई अेक हारै तो दूजो जीतै, पण थोड़ी टैम टळ्यां लोग थुथकारो घालता बां दोनूं भायलां नै । वैर तो मिनख पाळै पीढियां-दर-पीढ़ियां । गोकरण-पोकरण री लड़त तो उणांरै डीलां री कसरती संस्कृति रो अेक लोक—दरसावो़ हो ।

बै दिन अर अै दिन ! अबै कठै लीलो चारो नखाव़णिया दातार ? चौक्यां-चौक्यां अबै कठै पींडा देव़णआळी आदराऊ— पुण्याऊ हाक ? गोधा दोरा पळै । घर—घर रो सीर वधै । कोई वांटो-चूंटो परूसै, कोई सेठ लड़त-थाक्या जीवां नै धपटवीं खुराक रो जाचो जचाव़ै तो जीव़—जीव़ री जीव़जड़ी जमै ।

गोकरण तो पाछो आव़ण रो कोनी । रैयगी यादां । वैयगी वातां । जुग रै रेलै में अबै तो टी० वी० है घर—घर । गोकरण माथै डोकूमेंटरी सजती, जे आज बो जीव़ आपां विचै हुव़तो । पण अबै ? अबै— परदेसी सांडां रा राजवी-जुग । आज जमानो वरण-संकरी वेळा रो है ।

गोकरण— अेक ओळूं री ओळखाण । नगर-संस्कृति रो अैनाण । जीव़-जीव़ंतर सनेव़ सीध रो अेक सीधो-सादो रिस्तो । गोकरण— गोधन री कुळपीठ । गवाड़ रो गीरबो । मिनखां रो गरब । टाबरां रो माईत । वहू-वुवा़रियां री दड़ूकती आसीस ।

गोकरण म्हारै धोरीमूंढै ऊभो है । उणरी दड़ूक ऊभी है । डील गयो है । ऊभ रो डोळ जीव़ै है । जीव़ नै जीव़णो पड़ै । जीव़ में जीव़ घाल्यां जीव़-जीव़ रा भेद खुलै । जीव़ ही ब्रह्म । ब्रह्मरूप— गोकरण । गोकरण री खुरां-खूंदी धरती अठै ही है । जिकी हव़ेल्यां री भींत्यां सूं बीं खसाखसी करी, बै हाल री घड़ी ऊभी है ।

जितै लोग गायां अर लुगायां रो मान राखसी— संस्कृति फळसी । गोकरण इणी संस्कृति रो अेक ऊजळो नांव़ ।

—१०, आदर्श कालोनी, वीकानेर–३३४००१

□

जमना

— बुलाकीसिंह मोहिल —

कबूतरबाज तो बीकानेर में मैं घणा ई देख्या पण सूवा म्हाराज जिसो कबूतरबाज देखण में नहीं आयो। कणैई-कणैई बै खुद तो भूखा रैय जावता पण आपरै कबूतरां नै भूखा को राखता नी। दिनूगै-सिंझ्या दोनूं टैम कबूतरां न चुगावता अर बांरी साळ-संभाळ करता। नांव तो बांरो मधुसूदन हो पण बूढी दादी लाड रो नांव सूवो राख दियो। इस्कूल में बै म्हारै साथै दो वरसां तांई पढया हा। बांरो मितराचारो हूं कदैई नीं भूलूं।

सूवा म्हाराज इस्कूल में आवता तो आपरै कबूतरां री चिंत्या-फिकर कर बोकरता। बीं दिन कीं घणा दुखी हा। मैं पूछ्यो— सूवा म्हाराज ! आज कांई बात है ? कबूतर चुगार कोनी आया कांई ?

'अरे भायला ! कांई कैवूं तनै ?'— सूवा म्हाराज कैयो— 'आज म्हारो कागदी मारीजग्यो। उडणआळा कबूतर तो आपां कनै घणाई है पण बीं जिसो अेक ई कोनी। दिनूगै आठ वजी सूं लेयर सिंझ्या रा अंधारै पड़्यां तांई उडर हेठै उतरतो। बीकानेर रै सगळा कबूतरबाजां री बीं माथै आंख ही। शिववाड़ी रै मेळै में, तीज रै मेळै में, रामसा पीर रै मेळै में म्हे घणाई कबूतरबाज आप-आपरा कबूतर उडावता पण म्हारै कबूतरां रो मुकाबलो केई सूं ई कोनी हुवतो। हूं वगेची पूगतो जिकैसूं पैलां म्हारो कागदी बठै त्यार मिलतो। म्हारै जच्योड़ी ही कै अबकै आपणा नेहरूजी बीकानेर पधारसी जद बांरै कर-कमलां सूं कागदी नै उडवासूं। पण कांई करूं 'नर री चींती नां हुवै, हर चींतै सो होय'। आज बापड़ै नै सिकरा जीमग्या। भगवान सिकरो नहीं वणावतो तो किसी कमी पड़ती ही। म्हारा वीसूं कबूतर सिकरां रा सिकार हुयग्या। आज............'

मारजा हेलो करयो— 'अरे सूवा, थारै हरदम कबूतरां री वात्यां ई रैवै क्या ? पढाई में थारो मन लागै कोनी ? सिंध्या गायत्री रा दो आखर सीख लेसी तो सुख पासी। बामण रो बेटो है, भण्यां विना कोई नीं पूछैला। जा, परमट री खांड तो लेय आ। भीड़ घणी हुवै है, तोल- जोख रो ख्याल राखी भलो !'

सूवा म्हाराज जावती वेळा चाबी जनोई सूं खोलर मनै देयग्या। कैयो— तूं कबूतरां नै खोली, जितै हूं मारजा रै घरै खांड पुगायर, घिरतो दाणा लेयर सीधो वगेची पूग जासूं।

इस्कूल सूं छुटी हुयां पछै हूं वगेची पूग्यो । वठै जायर मैं कबूतर खोल्या । वठै अेक काबख ही जिकीरै बारै खणां में बारै जोड़ी कबूतर हा । काबख रै कनैई अेक छोटो-सोक दरबो हो जिकै में पनरै–वीस कबूतर हा । कबूतर वहोत फूठरा हा । सूवा म्हाराज सगळां रा नांव धर राख्या हा । किणीरो कागदी, कोई करेलो, कोई सवज, कोई टीकड़ो, कोई लालड़ियो पाठो । पण सगळां रा तो मनै नांव ई याद कोनी । छोटै सैक कचै आंगणै रै विचै पाणी रो अेक कूंडो भरयोड़ो हो जिकै रै बीच में अेक भाठो धरयोड़ो हो । अेक कबूतर पाणी पी नै उणरै माथै घूमर घालतो गटर गूं गटर गूं करतो हो । बींरै पगां में नेवरचां घाल्योड़ी ही । बींरै कनै दूसरो कबूतर बैठो चूंच सूं घुदो देवतो हो ।

हूं कबूतरां रा खेल देखतो हो, जितै तो सूवा म्हाराज अेक गमछै रै पलै में दाणां री गांठड़ी लेयर आयग्या । दाणा नाखतां ई कबूतर अेक जागा घेरो वणायर चुगण लागग्या । म्हे दोनूं अेक पाटै माथै बैठग्या ।

'सूवा म्हाराज, कबूतर तो थांरै घणा ई है'— मैं कैयो– 'क्यों कागदी री चिंता करो हो !'

'अरे भायला, वो म्हारी जमना रै हाथ री सैनाणी हो ।'— सूवा म्हाराज कैयो—' उणनै धोळो कबूतर वहोत आछो लागतो हो ।'

'कुण ही जमना, सूवा म्हाराज ?'— मैं पूछचो । 'जमना म्हारी पाड़ोसण ही ।' सूवा म्हाराज कैयो– 'डागळा म्हां दोनां रा बराबर हा । अठीनै सूं वठीनै जावण में अेक छोटीसीक भींत, कोई गज-अेक री, आडी ही । रोजीनै तो म्हे कोनी मिलता, पण कणैई-कणैई डागळै माथै मिल जावता ।'

'अेक दिन आखा तीज रो हूं किनो उडावतो हो, पण लटाई झालणआळो कोई नीं हो । इतै में तो जमना डागळै माथै आयगी ।'

'हूं झालूं कांई लटाई ?' जमना कैयो अर मुळकी । बींरै गालां में दो छोटा-छोटा खाडा–सा पड़ग्या ।

मैं कैयो— 'झाल भलांई, पण थारै कंवळै हाथां में छाला पड़ जावैला भलो !'

'इती कंवळी हूं कोनी ।' कैयर बीं लटाई झालली अर हसण लागगी । बींरी दूध सी धोळी वतीसी मनै घणी आछी लागी । मैं बींरै सामो जोयोर का जमना माथो नीचै कर लियो अर चुप रैयगी । 'वो ई काटचा है ।' च्यारां कानी सुणीजतो हो । किना उडावण रो मजो बीं दिन जिसो कदैई नीं आयो । सिझ्या पड़ी म्हां दोनां आखा तीज रै चंदरमा रा दरसण करचा । मैं कैयो— देख जमना, थारी ठोडी री गोळाई अर इण तीज रै चंदरमा री गोळाई, अेक जिसी है । राव वीकैजी म्हाराज इण चंदरमा रा दरसण करनै वीकानेर री थापणा आज रै ई दिन करी ही । मैं आज तीज रो चंदरमा देखर अेक मनो-कामना करी है ।

जमना तिरछी निजर सूं म्हारै कानी इयां देख्यो जाणै बा म्हारै मन री वात समझगी ही। बींरै हाथ मांय सूं लटाई छूटर पड़गी। जमना कैयो—'सिंझ्या पड़गी, हूं अबै जावूं हूं।' बस, इतो कैयर बा तो झटदेणी गयी परी। हूं ई नीचै आयग्यो। पण म्हारो मन कीं भारी-भारी हो।

दूसरै दिन दिनूगै म्हे दोनूं फेर किना उडावण नै डागळै चढग्या। अेक कोयल सूं म्हारा पेच खूब वधग्या।

जमना कैयो— 'देख मधु, सिकरो बापड़ै कबूतर नै मारै है।'

मैं ऊपरनै सामो जोयो। देखर मनै ई दया आयगी। मैं किनै नै तो बठैई तोड़र छोड दियो। फेर ताळचां वजायी, हाको करयो, अेक खाली पीपै नै वजायर खड़का करचा। कबूतर सिकरै रै पंजां सूं छूटर म्हां दोनां रै बीच में आयर पड़ग्यो। लोही सूं तरातर हुयोड़ो। मैं बींनै उठार देख्यो। चोट घणी तो नीं आयी, पण डावै पख माथै इंचीक रो घाव पड़ग्यो हो। जमना तो देखतां ई घबरायगी। मैं बींरै घाव में गीली बींठ्यां भर दी।

'जमना, बुद्ध भगवान हंस नै बचायो ज्यूं तैं आज कबूतर नै वचाय लियो।' मैं कैयो।

बीं दिन कबूतर री मलम–पटी में किना तो उडाया ई कोनी। जमना अर हूं दोनूं आमण–दूमणा सा हुयग्या।

कबूतर देखण रै मिस जमना म्हारै घरै रोजीनै आवती ही? इण मिस म्हे रोजीनै मिल लेवता। पांच–सात दिनां में कबूतर सावळ हुयग्यो। बो धोळो कबूतर जमना नै घणो आछो लागतो। बींरो ई नांव कागदी हो। जमना रो सोख देखर हूं च्यार जोड़ी कबूतर फेर लेय आयो। कागदी रै पगां में चांदी री नेवरचां घाल दी, जिकी छम–छम वाजती, बो चालतो जणै।

म्हारै भाग में जमना रो मिलणो इतो ई लिख्योड़ो हो। अेक दिन जमना उदास सी म्हारै अठै आयी। कैयो--'मधु, हूं तो आज भाईजी (जमना रा पिता) साथै कळकत्तै जावूं हूं।'

हूं जाणै अकास सूं नीचै पड़ग्यो। कैयो--'हैं? कूड़ी।' म्हारी छाती जोर-जोर सूं धड़कण लागगी।

'नहीं मधु, साचाणी।' जमना कैयो नै बींरी आंख्यां गीली हुयगी अर बोली गळगळी पड़गी। मैं जमना रा आंसू पूंछ दिया अर कैयो--'जमना, रो मत। तनै रोवती देखूं जणै म्हारो ई हिवड़ो भरीज जावै। तनै याद हुसी म्हारी आखा तीज री मनो-

कामना ? आज तो जाणै सगळी सुपनै री सी माया हुयगी ।'

जमना धीरज धर नै बोली—'मधुसूदन ? इतो दुख मत कर । म्हारो मन तो सदा ई थारै कनै रैसी, ओ सरीर जरूर कळकत्तै रैसी । थारो सभाव........'आगै जमना सूं बोलीज्यो कोनी । आंख्यां में समदर सो उमट आयो । मैं वींनै गळै लगायर धीरज बंधायो ! पूछचो—'हणै भाइजी कळकत्तै कियां जावै है ? काम तो वै अठै ऊन मंढी में दलाली रो करै है नी ।'

'अरे, कळकत्तै सूं सेठ चंपालालजी आयोड़ा है ।' जमना कैयो—'वै आपरी मील में भाईजी नै पांच सौ रुपिया महीनै रै रुजगार माथै राखसी । भाईजी रा बालगोठिया है । आज रो मोरत कढायोड़ो है, इण खातर...........।'

'जमना !' —भाईजी जमना नै हेलो करचो । जमना जावती-जावती कैयगी- 'कबूतरां नै सोरा राखी सूवा, म्हारी कोई भूल--चूक हुवै तो माफ कर देयी ।'

सूवा म्हाराज बात में इसा लीन हुया कै सिंझ्या पड़ण री त्यारी हुयगी । कैयो— 'चालो भायला, घरै चालां । कबूतरां नै मांय घालां । आं कबूतरां जिसी भोळी ही म्हारा जमना ।'

म्हे दोनूं सिंझ्या पड़चां आप--आप रै घरै पूग्या ।

जस्सोळाई तळाई रै कनै, बीकानेर

□

आसी सावण मास, बिरखा रुत आसी भळै ।
साईणां रो साथ, भळै न आसी वींझरा ।।

वींझो पूछै सोरठी, प्रीत किता मण होय ।
लागतड़ी लाखां मणां, तूटी टांक न होय ।।

जीणमाता रो गीत : अेक परिचय

— लक्ष्मी कमल —

बहन और भाई रो नेह-भीनो संबंध प्रेम रै व्यापक क्षेत्र में आपरो अनूठो स्थान राखै है। भाई- भाई रै प्रेम में जठै संमिलित शक्ति रो स्वारथ हुवै है वठै ई प्रेमी-प्रेमिका रै प्रेम में, परस्पर स्वार्पण री भावना हुवता थकां भी उणरी तह में कठैई-न-कठैई वासना अर शरीर-संबंध री झीणी रेख जरूर हुवै है। और मैत्री-संबंध तो वणै ई आमोद-प्रमोद री इंछा-पूर्ति सारू है। सेव्य-भाव रो स्नेह भी स्वामी री शक्ति-स्वीकृति रो सैनाण है। पण बहन और भाई री जकी स्नेह-सगाई पूरी तरै निस्वार्थता री नींव माथै टिक्या करै है वा हर सूरत में अद्वितीय अर अभिनंदनीय है। बहन जठै मांगळिक परबां अर उछबां माथै आपरै भाई रै भविष्य री शत-शत मंगळ-कामनावां करै है वठै ई भाई भी आपरी लाडली बहन री सुख-सुविधावां सारू साधनां रा अंबार लगावण में सदा ई तत्पर रैयर आपरै जीवण नै कृतकृत्य मानै है। बहन चावै कठै ई हुवो, उणरी हमेसा आ चावना रैवै है कै उणरो भाई सगळी भांत सूं सुखी हुवै। भाई भी आपरी बहन री खुसी रै वासतै किणी भी संकट रो सामनो करण नै सहर्ष त्यार रैवै। अचंवै री वात आ है कै हाल तांई बहन अर भाई रै इण सहज स्नेह-संबंध नै किणी महाकवि आपरै काव्य में उतारण री चेस्टा को करी नी। हां, लोकमानस सूं निकळचोड़ा इण विषय रा केई स्नेह-उद्‌गार लोकसाहित्य री अनुपम थाती जरूर वणग्या है। लोकजीवण में सैकड़ूं इसा गीत है जिणांमें बहन रै हिरदै री निरीहता, अटळ विश्वास अर मंगळ-कामनावां रो सजीव चित्रण हुयो है।

इणी तरै रै अेक गीत 'जीणमाता' राजस्थानी लोकसाहित्य नै गौरवान्वित करचो है। इण गीत री गरिमा माथै रीझर पं० अक्षयचंद्र शर्मा आपरै निबंध (वरदा : वर्ष २ अंक १, लोकसाहित्य विशेषांक– पूर्वार्ध) में अठै तांई लिख्यो है— 'इण गीत में बहन अर भाई रै निश्छळ प्रेम री जिसी सरस अर सबळ अभिव्यक्ति हुयी है, बिसी किणी दूजै साहित्य में सहज रूप सूं मिल जावै, इसी को लागै नी। संसार रो साहित्य विपुल, अथाह अर विस्तृत है, उणरै संबंध में अधिकार-सागै कैवणो मुसकल है। फेर भी आ वात पूरै साहस सूं कैयी जा सकै है कै भारतीय साहित्य में बहन अर भाई दोनां रै प्रेम-संबंध नै वतावणआळो आपरै ढंग रो ओ अेक ई गीत है।' स्व० श्री नरोत्तमदास स्वामी रै शब्दां में 'जीण-माता रो गीत करुण रस री अेक उत्कृष्ट रचना है जिणनै

किणी भी भाषा रै श्रेष्ठ गीतां रै मुकाबलै में राख्यो जा सकै है।' गीत विस्तार में वहोत वडो है। पिलाणी रा सुप्रसिद्ध लोकगीत-संग्राहक श्री गणपति स्वामी वडी मेहनत सूं पूरो गीत सुणर मांडचो है, जिणरो सरू रो अर महत्त्वपूर्ण अंश 'राजस्थान-भारती' (भाग १, अंक १) तथा 'मरु-भारती' (वर्ष १०, अंक २) में छप्यो है। आगै उणी प्रकाशित अंशां रै आधार माथै इण गीत रो संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करचो जावै है। सगळो ही गीत वडो भावपूर्ण है अर उत्सुक पाठकां नै इणनै मूळ रूप में जरूर पढणो चाहीजै। गीत रो सार इण भांत है—

'घंघ' नांव रै राजपूत, बीकानेर राज्य रै चूरू सहर सूं आठ मील दूर 'घांघू' नांव रो अेक छोटो-सोक गांव वसायो हो। उणरी पत्नी वहोत फूठरी ही। उणरै दो टावर हुया— अेक बेटो अर दूजी बेटी। बेटै रो नांव राख्यो हर्ष और बेटी रो जीण (जीवणी, जीवण)। दुरभाग सूं योग्य दंपति री योग्य संतान नै बालपणै में ई मां-बाप रै लाड सूं वंचित हुवणो पड़चो। अनाथ बहन-भाई धीरै-धीरै वडा हुया। घर नै घर वणावण वासतै भाई अेक गृहिणी ई ले आयो हो। वहन नै ई भाभी आछी लागी। पण अेक दिन री अेक छोटी-सीक घटना वो तूफान मचायो कै उणसूं उणांरै जीवण में अेक जबरदस्त मोड़ आयग्यो।

नणद अर भाभी, दासी मनभरी नै सागै लेयर सरोवर माथै पाणी भरण नै गयां। घड़ा भर लिया। भाभी नणद नै कैयो— मनै घड़ो उंचवा दै, पछै मनभरी तनै उंचवा देसी। नणद कैयो— पैलां मनै उंचवा दै, फेर मनभरी तनै उंचवा देसी। भाभी वडी ही, वडी हुवण रै जोर सूं बोली— नहीं, पैलां मनै उंचवावणो पड़सी। नणद जिद पकड़ ली। उणरी जिद सूं भाभी नै झाळ आयगी। उण लात मारनै नणद रो घड़ो फोड़ नाख्यो अर लागी उणनै गाळचां देवण नै। और गाळ-गाळ में उणरै चरित्र माथै ई चोट कर बैठी। इणी बात सूं तीनां रो जीवण तीन-तेरह हुयग्यो। गुमानण जीण आपरै चरित्र रो लांछण सह कोनी सकी। उण उणीज वगत सूरज भगवान री साक्षी में सौगन ली अर बठै ही सो कीं छोडर आडावळै पहाड़ कानी चाल पड़ी— तपस्या करण नै अर संसार रै सामनै आपरै चरित्र नै निष्कळंक साबित करण नै। आंधी री तरै सूं-सूं करती जीण नाठी जावै ही।

पतो लाग्यां हर्ष नै दुख हुयो। बेचारो सागी पगां वहन नै मनावण नै उणरै लारै दौड़चो। जीण हाल दो-च्यार कोस चालर गांव री कांकड़ तांई पूगी हुवैला कै हर्ष उण कनै जा पूग्यो अर उणनै पाछी हालण खातर कैयो। हर्ष रै घणी ई लिलड़चां गायां पछै ई जीण तो घरै आवण खातर को मानी नी। जणै हर्ष ई, आपरै राजपाट अर राणी नै छोडर, बहन सागै बठै सूं ई टुर वहीर हुयो। दोनूं पहाड़ माथै पूग्या। बठै आमनै-सामनै री दो चोटचां माथै दोनूं जणा तपस्या करण नै बैठग्या— अेक-दूजै नै पीठ देयर।

अठै गीत रै मर्मस्पर्शी उद्धरणां समेत उणरो भावात्मक परिचय दियो जावै है। गीत रो खास विषय है जीण रो घरै जावण खातर मना करणो और हर्ष रो उणनै मनावणो। गीत री सरूआत कथा रै इणी स्थळ सूं हुवै है जठै भाई रै घरै चालण सारू हाथाजोड़ी करचां भाभी रै व्यंग्य-बाणां सूं वींधीज्योड़ी बहन बुसक्यां रै सागै आपरी आंतरचां री पीड भाई नै बतावै है। बहन अर भाई रो ओ स्वाभाविक, पण हृदय-द्रावक संलाप अर भावां रो उतार-चढाव गीत री कळात्मकता रा श्रेठ उदाहरण है।

आंसुवां री झड़ी रै बिचाळै ई वाणी मुखर है। हृदय री हूक जीण आं शब्दां में दरसावै है—

हरसा वीर म्हारा रे! दर तो धांघू में रे जलम्या दो जणा
हरस वडो अर छोटी जीण।
जामण का रे जाया! अपणी माता कै रे जलम्या दो जणा।
हरसा बीर म्हारा रे! मां-बाबल खोस्या म्हारा राम।
जामण का रे जाया! जलमी को जायो भावज रे खोसियो।

हर्ष भैया! मां—बाप नै तो भगवान खोस लिया अर मां रै जायै नै खोस लियो भावज। अबै म्हारो इण संसार में कुण रैयो है? म्हारी हालत तो आ है— आभै पटकी अर धरती झाली कोनी! आज जे म्हारी मां इण संसार में हुवती तो म्हारी कांई आ हालत हुवती? मां रै विना आज म्हारै नैणां रो नीर कुण पूंछै, कुण म्हारै दाझतै काळजै माथै हाथ फेरै, कुण म्हारै सिर माथै हाथ फेरनै बुचकारै? और तो और, म्हारा वीरा! मां रै विना आज म्हारै मन री बात ई कोई पूछणआळो कोनी! आज म्हारै वीखरचा केसां नै कुण बावै? पीहर रो नातो तो मां रै सागै ई मिट जावै है—

कुण बूझै मा विन मन की बात
ओदर का रे साथी! कुण रे सुंवारै विखरचा केसड़ा?
जीं दिन मरगी म्हारी माय,
जामण का रे जाया! सीर पीवर रो रे बीं दिन उठ गयो।

म्हारा भाई! मां री मनै घणी ई याद आवै है, आंख्यां डबडबावै है। धीरज बांधण में कोनी आवै है। हृदय रै समुंदर में लाटां उठै है। और मां ही क्यूं, बापू (पिता) ही जीवता हुवता तो कांई म्हारी आ हालत हुवती? बै म्हारो किसो—किसोक लाड करता हा? किणी गढपति रै अठै बै म्हारो व्यांव करता अर खूब-सारो दायजो सागै देवता।

भावावेश सूं अेकर मुक्त हुयर जीण हालात रो ज्ञान हुवतां ई पाछी तिलमिला उठै अर लागै व्यंग्य-बाणां री विरखा करण नै—

हर्ष भैया! तैं भी म्हारो आछो मान राख्यो! मनै आछी चूनड़ी ओढायी!

ठीक ई कैया करै है— मूळ सूं ब्याज घणो चोखो लागै—बाप सूं बेटो घणो प्यारो हुवै है, मां सूं वेसी सासू आछी लागै अर बहन री जागां पत्नी रो घणो चाव हुवै—

थे भल राख्यो म्हारो मान, आछी ओढायी रे बोरंग चूनड़ी !
रुपियां सूं प्यारो लागै ब्याज, बाबल सूं प्यारो रे लागै डीकरो।
मायड़ सूं प्यारी लागै सास, भैनड़ सूं प्यारी रे घर री असतरी।

पण देख, हूं थारै सूं घर रो हिसो-पांती को मांगती ही नी। थारै मन सूं जे एक चूनड़ी ओढा देवतो तो हूं उणनै कोड सूं ओढ लेवती।

अठीनै विचारै हर्ष री तो एक ही रटण ही—

जीण मेरी बाई ए ! मुड़ मुड़, तूं घर नै पाछी चाल ।
मेरी मां की ए जायी ! हरसो तो ऊभो करै ए मनावणा ।

पण हठीली 'बाई' मानण नै त्यार ई को हुवै नी। भाई रै इतो गिड़गिड़ायां ई उणरो तो टको-सो जवाब है—

म्हारै लारै तूं मत ना आव ।

हर्ष भी उणनै मनावण में कोई पाछ को राखै नी। बो उणरै वासतै तेतीस तरकारयां और बतीस भोजन— ऊजळा चावळ, हरिया मूंगां री दाळ, आछो घी, जाडै दूध री खीर जिसा आछा पदार्थ, रतनां-जड़ी चौकी, पालर पाणी री झारी— सो कीं जुटावण रो वचन देवतो थको कैवै है—

बैनड़-भाई जीमां आपां साथ,
बिच-बिच बदळां ए बाला गासिया ।

और खावण-पीवण री ई क्यूं, बो उणरै पैरण वासतै सुंदर वस्त्राभूषण रो भी पूरो प्रबंध करण नै त्यार है— असी कळयां रो घाघरो, हीरां-जड़ी राखड़ी, मोती-जड़्यो नौसर हार, झणझण बाजता बिछिया— सो कीं उण सारू बणावण-घड़ावण नै त्यार।

पण जीण तो रज मात्र ई को डिगै नी। उणरो निश्चय अटळ ! प्रकृति रा चावै सगळा नियम बदळ जावै, सिखरां चढयोड़ो सूरज चावै पाछो मुड़ जावै, जमलोक गयोड़ा जीव पाछा आ जावै, बादळ री बूंदां पाछी ऊंची जावै परी, समुंदर सूं नदियां रो नीर भलांई पहाडां कानी जावै परो, पीपळ रै भलां ई आंबा लागण लाग जावै, पण जीण तो अबै कोई हालां पाछी मुड़ण नै त्यार कोनी—

आकां रै लागै रै मतीर, फोगां कै रे लागै चावै काकड़ी
खेजड़ियां लागै चावै बोर, झाड़यां कै रे लागै चावै सांगरी
पीपळ रै लागै चावै आम, आमां कै रे लागै चावै पीपळी

फिरज्या कुदरत का साचल नेम, सिखर आयोड़ो रे सूरज मुड़ चलै
समै भी गयोड़ो मुड़ जाय, जम-पुर गयोड़ा रे भंवरा मुड़ चलै
बादळ री बूंदां पाछी मुड़ चलै, समदर सूं नदियां पाछी जाय
जामण का रे जाया ! जीवण आयोड़ी रे पाछी नां मुड़ै

अबै तो हर्ष नै हताश हुवणो ई हो ! इती रीसाणी तो जीण कदेई को हुयी ही नी। आज इसी कांई बात हुयगी ? उण बैन नै पूछचो—

कै थांनै काढी भावज गाळ,
कै थांनै दीना अे भावज ओळभा ?

उत्तर में जीण कैवै है— इयां तो गाळ अर ओळभा तो भाई ! भाभी रोजीनै ई देवै है। आ नूंई बात ईं सुणै नी ! मैं अर भाभी, मनभरी दासी अर सात सहेल्यां रै सागै सरोवर माथै जळ भरण नै गयां ही। भाभी घड़ो अर मैं म्हारो स्वर्ण-कळश भर लियो हो। भाभी घड़ो ऊंचती वेळा मनै कैयो कै पैली तूं मनै घड़ो उंचवा दै, थारो कळसो मनभरी दासी उंचवा देसी। मैं ई हसतां-हसतां कैयो— नहीं, पैलां तूं मनै म्हारो कळसो उंचवा दै, पछै मनभरी दासी तनै घड़ो उंचवा देसी। म्हारो ओ कैवणो हुयो नै भाभी उछळर म्हारै कळसै रै ठोकर मारी अर म्हारै चरित्र रै लांछण लगायो। साचाणीज, भाई ! उण वगत म्हारै तो तन-मन में लाय लागगी ही अर आंख्यां में नदियां उमड़गी ही। आत्मघात करणो तो आछो को लाग्यो नी क्यूंकै उणसूं कुळ नै कळंक लागतो, पण जीवणो तो और ई दोरो हुयग्यो— भाभी जीवती नै ई बाळै ही !

और जद म्हारा भाई ! मैं बठै ई, सरोवर री पाळ माथै, सूरज भगवान री साख में सौगन खायी कै अबै वन-खंड-पर्वतां में ई जायर बससूं अर भाभी रै चढायै इण कळंक नै उतारसूं—

सोगन मैं खायी रे सरवर पाळ, आडो तो लीनो सूरज देव।
जामण का रे जाया ! भावज को चाढचो रे कळंक उतारसूं।
जाय वसूंली वन-खंड-डूंगरां, हर रै चरणां रो धरसूं ध्यान।
जामण का रे जाया ! जीतैजी रैसूं रे जग में ऊजळी।

हर्ष उणरै रैवण वासतै न्यारै मकान री व्यवस्था करण री बात कैवै है, पण सो फालतू नीवड़ै। वा मानै ही कोनी। उणनै इतो पछतावो जरूर है— म्हे दोनूं बहन-भाई अेक ई उदर में रैया हा, अेक ही पालणै हींडचा हा, सागै ई जीमता-जूठता हा, उणांनै अबै परायै घर री बेटी आयर इण तरै न्यारा-न्यारा कर दिया—

अेकै ओदर में दोनूं लोटिया, अेकै मायड़ रो चूंघ्यो दूध
अेकै पालणियै रे दोनूं झूलिया, अेकै आंगण में दानूं खेलिया

अेकै वाटकियै पीयो दूध, अेकै थाळकियै रे सागै जीमिया
बैनड़-भाई रो वाल्हो नेव, पर-घर की जायी रे आयर तोड़ियो

बहन रा मरम-छूवणा वचनां सूं अर उणरै गैरै निसकारां सूं हर्ष पिघळग्यो । उण छेकड़ली कोसीस करी । बोल्यो— तो हूं ई पाछो को जावूं नी, हूं भी थारै सागै ई चालसूं—

जीण म्हारी बाई अे ! इतणी निसासी अे बैनड़ क्यूं हुयी ?
हरसो तो चालै थारै साथ ।
जामण की अे जायी ! चाल वसैलो अे वन-खंड डूंगरां ।

जीण रो हृदय कीं पिघळग्यो । बा बोली— भैया ! तू म्हारै सागै मत चाल । देख, थारै विना कुण तो राजपाट संभाळसी, अर कुण प्रजा री रक्षा करसी ? बिचारी भाभी ई थारै विना विलखी हुय जासी । इण खातर पाछो जा परो, भाई ! पाछो जा परो—

मुड़ मुड़ तूं पाछो घर नै जाय,
भावज विलखैली रे कुळ में अेकली ।

पण भाई उथळो देवै है—
भावज थारी जासी अे अपणी माय कै,
रैसी वा भावजड़चां रै मांय ।
जामण की अे जायी ! भायां कै सहारै अे ऊमर काटसी ।

बहन नै चिंता हुवै कै इयां तो बाप रै वंश रो ही लोप हुय जासी, पुरखां नै जळांजळी देवणियो ई कोई को रैवै नी । भाई उणरी इण आशंका नै भी निर्मूळ बतायर टाळ देवै है कै आपणो वंश तो बहन ! इयां ई अमर हुय जासी । जीण हर्ष आगै वन री वणी ई असुविधावां री, विपत्तियां री चर्चा करै, पण बो खाली इणीज शर्त माथै पाछो मुड़ण नै त्यार है कै पैलां जीण घर कानी चालै । उण भी तो आखर असली राजपूताणी रा हांचल चूंघ्या है, बो आपरी सोदरा बहन नै इयां वीहड़ वन में अेकली छोडर पाछो कियां जा सकै है ?—

जीण मेरी बाई अे ! हरसो छै असली रजपूत,
जामण की अे जायी ! बैनड़ नै इकली छोडर नां मुड़ै ।

और अेकाअेक उणरी स्मृति अतीत रै अंतराळ में जाय पूगै । मरती वेळा उणरी मां कितै लाड सूं उणनै जीण री भोळावण देवतां उणरी सार-संभाळ राखण रो कैयो हो । उणरी मां कैयो हो— म्हारा लाल ! म्हारा प्राण जीण में अटक्योड़ा है । म्हारै पछै उणरी चिंता कुण करसी ? बा किणनै 'मां' कैयर वतळासी ? किणरै सागै तो बा रूठसी, अर रूठचां कुण उणनै मनासी ? तीज-त्यूंवारां विचारी अेकली ई खूणै में बैठी रोवती रैसी—

मरती तो थिरती अे जामण यूं कह्यो, अटक्यो छै गाडर मांही जीव
ओदर का रे लोटचा ! जीवण की रे चिंत्या कुण करै ?
किणनै कहैली बाई माय, किणसूं रूसैगी रे जीमण रूसणा
कुण तो करैलो बाई रा कोड, कुण रै करैलो बाई रा मनावणा

हर्ष री रूंवाटी ऊभी हुयगी ही। वीं जीण रै विसै री सगळी चिंतावां मेटण रो मां नै वचन दियो हो—

मत ना मेरी माता अे ! मत ना कर बाई हंदो सोच
मेरी राता (अे) देई ! रूसी बाई रा करूं अे मनावणा
मतना कर बाई केरो सोच, वार-त्यूंवारां ओढाऊं बाई नै चूनड़ी

—मां ! जीण रो जावक ई सोच नां कर, उणरै रूठचां हूं उणनै मनासूं अर वार-त्यूंवार हूं उणनै चूनड़ी ओढासूं ।

भरोसो हुयां मां उणनै आपरी वात म.थै दिढ रैणव सारू फरूं सावचेत करयो हो—

हरसा समरथ मोभी रे ! बाई री संभळावण दीनी सूंप
ओदर का रे लोटचा ! बाई रै सिर पर छाया रे राखियो
जे तूं राखैलो पेटै पाप, दरगा में दावण-गिरिया रे मैं वणूं ।

मां री तरै बाबल नै भी तो आपरै अंतकाळ री वगत आ ई चिंता खावै ही—म्हारा लाल ! म्हारै लारै अेक भोळी चिड़कली है। हूं उणनै रोजीनै घणी मान-मनवार सूं म्हारै सागै बैठायर जीमाया करतो हो। मनै लागै है, अवै वा जीमण री वगत खूणै में ऊभी-ऊभी रोया करसी—

जीण मेरी बाई अे ! मरतां तो थिरतां बावल यूं कैयो
अेक घणेरो मन में सोच
मेरा मोभी रे बेटा ! लारै तो छोड़ी रे भोळी चिड़कली
हेलां तो देय जिमातो साथ, सांझ-संवेरी रे लेतो वारणा
होवैली सांझ-संवेरी रोज, भोजन री वेळां रे ऊभी रोयसी

उणनै आछी तरै याद आयो कै उण बाबल नै ई भरोसो दियो हो कै वो जीण बहन नै पूरो स्नेह देवैला अर उण माथै किणी और रो आंतक को आवण दै नी। जे उणरी भाभी कीं गड़बड़ करसी तो वो उणनै पीहर भेज देवैला ।

घणा करुणाभरचा है अै स्मृति-अंश ! आज उणनै आपरै मां-बाप री संकावां साकार हुवती निजर आयी। उणरो हिड़दो भरीजग्यो— अरे, म्हारै जीवतां जीण बहन अेकली फोड़ा पावै । आ को हुय सकै नी। उणरो निश्चय दिढ हुयग्यो, वो बहन नै

को छोडै नी । उण कैयो— जीण ! तूं ही वता, तनै छोडर अठै सूं जावूं परो ता मरयां पछै मां-बावल नै जायर कांई मुंह देखाळसूं, थारै बाबत उणांनै कांई कहसूं ? अबै ओ राजपाट म्हारै भावै तो कोडी रो ई कोनी । थारी भावज ई भलांई पीहर में विलख बोकरो । मौत नै टाळर थारै सूं म्हारो विछोह अवै कोई कोनी कर सकै—

जाऊंलो एक दिन दरगा मांय, मां-बावल बूझै ए थारी वारता
मुखड़ो दिखाऊं क्यूंकर जाय, कांई वताऊं ए मायर-बाप नै
पाथर ज्यूं छोडूं वाल्हो राज, भावज थारी छोडूं ए पीवर झूरती
जीवतड़ो विछड़ूं थांसूं नांय, मौत विछोवो ए वैनड़ ! घालसी

दोनूं वहन-भाई आप-आपरै संकळपां माथै अडिग रैया । वहन रो पालड़ो भारी रैयो । और छेकड़ दोनूं हरि सूं हेत लगावण नै सीकर रै गोरवैं जायर पहाड़ री दो चोटियां माथै विपरीत दिशावां कानी मुंह करनै तप-साधना में लागग्या । दोनां रो प्रेम अमर हुयग्यो । उणांरै स्थान नै आज जणो-जणो धोक देवै है ।

सैकड़ूं वरसां री आ घटना आज ई सीकर रै कनली पहाड़ी रै 'जीणमाता' रै मिंदर में जावणआळा श्रद्धाळु यात्रियां री आंख्यां आगै उतर आवै है । दूजी पहाड़ी 'हर्ष री पहाड़ी' वजै है, उण माथै हर्षनाथ रो मिंदर है ।

इणसूं आगै गीत में जीणमाता रै आश्चर्यजनक परचां रो अर उणां रै प्रति जन-मानस री अर्पित श्रद्धा रो हवालो है जिणनै लेख-विस्तार रै भयसूं अठै देवणो संभव कोनी ।

गीत अत्यंत करुणापूर्ण है । इणनै सुणर कठोर सूं कठोर हिड़दो ई पिघळ्यां विना को रैवै नी । हरेक भाई अर वहन रै मन में, उणनै सुणर हर्ष अर जीण रै स्नेह रो आदर्श अपणावण री प्रवळ इंछा जागै है । □

प्रिंसिपल
श्रीकृष्णसत्संग बालिका महाविद्यालय
सीकर (राजस्थान)

एक अडिग लक्ष्यवान सूं वेसी भव्य दृश्य इण संसार में कोई भी नहीं है.

—अज्ञात.

❀

जीवण एक तरुवर है. उणरी शाखावां है— त्याग, धैर्य, कर्त्तव्य अर साधना; पुष्प है अणगिणत सत्कृत्य; और फळ है— केवळ प्रेम.

— लक्ष्मी कमल.

विश्वंभरा

(त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

संपादक

डा० मनोहर शर्मा **डा० दिवाकर शर्मा**

वार्षिक मूल्य — बीस रुपये

संपर्क

हिंदी विश्वभारती, नागरी भंडार

बीकानेर (राज०) ३३४००१

व र दा

(त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

संपादक

डा० मनोहर शर्मा **डा० उदयवीर शर्मा**

वार्षिक मूल्य — बीस रुपये

संपर्क

राजस्थान साहित्य समिति

बिसाऊ (राज०) ३३१०२७

राजस्थली

(राजस्थानी भाषा साहित्य री तिमाही)

संपादक

श्याम महर्षि

सहायक

चेतन स्वामी

सहयोग : साल दीठ पंद्रह रुपिया

संपर्क

संपादक राजस्थली, श्रीडूंगरगढ़ (चूरू) राजस्थान

With Best
Compliments Of

K. BULAKI CHAND PHOOL CHAND
BANTHIA CHARITABLE TRUST

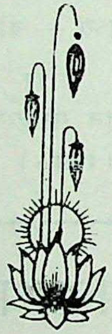

52/16, SHAKKAR PATTI
KANPUR-208001

PHONE { 66134
60466

Telegraphic Address :
'NIT NAFA'

पुस्तक-समीक्षा

मायड़ रो हेलो

'अबै मैं म्हारै जीवण री आंथण में निमळै पड़तै कंठ सूं म्हारा जामणजाया वीरां नै ओ सबळो हेलो पाड़्यो है ।'— श्री कन्हैयालाल सेठिया री इण उक्ति में विरोधाभास रा दरसण हुवै — 'निमळै' पड़तै कंठ सूं 'सबळो' हेलो— कियां ? सेठियाजी रै कंठां में जरूर निबळाई आयी हुसी, पण ओ हेलो कंठा सूं नईं, लेखणी सूं पाड़्यो है जिकी रो निखार अबार सगळी संभव ऊंचायां तांई पूंच्योड़ो है ।

राजस्थानी बाबत कुतर्क करणिया अेक सवाल फैंकै— मेवाड़ी, हाडोती, ढूंढाड़ी, मेवाती, मारवाड़ी या माळवी में राजस्थानी किणनै मानां ? सामान्य लिखार भी इण सवाल में अळूझ जावै । सेठियाजी इणरो दो टूक उथळो दियो है—

'सगळां सूं रळ बणी जकी, बा भाषा राजस्थानी ।'

भारत में सिंध नांव रो कोई प्रांत कोनी, पण सिंधी नै मान्यता है, उर्दू नै मान्यता इणी खातर है कै इणनै बोलणिया-समझणिया मोकळा है, अफसोस री वात आ है कै राजस्थान नांव रो प्रांत हुवता थकां अर च्यार किरोड़ बोलणिया हुवता थकां राजस्थानी नै हाल प्रांतीय स्तर माथै ई मानता मिली कोनी । कवि री दृष्टि में राजस्थानी भाषा बिना राजस्थान प्रांत निष्प्राण है, अर इण में प्राण फूंकण सारू कवि लिछमण रूपी साहित्यसेवी रो आवाहन करयो है । (राजस्थान)

राजस्थानी री साहित्यिक परंपरा तेरह सौ बरसां सूं भी जूनी हुवता थकां आज इतर प्रांतां में बसणिया मोकळा राजस्थानी आपरी भाषा त्यागर दूज्यां रै मोहजाळ में पड़ग्या ! बांनै चेतन करण सारू कवि कैवै है—

कोनी लोतर जायोड़ां में
जद के हुवै उपाव ?

'आठ कोड़ गूंगा' में कवि रै हिवड़ै री खेद पराकाष्ठा में पूंचगी—

मायड़ भाषा राजस्थानी
कळपै, वीखो भोगै,
हाळण बणगी निज रै घर में
दूजा थाळ अरोगै !

कवि 'चेतो', 'जूझो' आदि शब्दां सूं संखनाद करै है—

उठो, ओळखो आपो थांरो
घणमोला मोटचारो !

आखरी चेतावणी रै रूप में कवि कैवै है—

सरबस जावै, सांभळो,
थांरा लांवा हाथ ।

राजस्थानी भाषा-भाषी ओजूं भी जे आपरी भाषा री मान्यता सारू प्रयत्न करै, तो बै पूरा सिमरथवान है अर बांरै खातर ओ काम दोरो कोनी ।

'परतख पीड़' में कवि कैवै है कै उणरी कविता वाग्विलास कोनी, आ

कविता मांडी रगत सूं
कही साच दो टूक ।

डी वेलेरा अेकर कैयो— आजादी या मातृभाषा मांयसूं अेक चीज चुणनी हुवै तो हूं मातृभाषा नै चुणूं । जिण लोकराज में सगळी भाषावां नै आपरो ओपतो आसण मिल्योड़ो है उणमें राजस्थानी जे टुकर-टुकर दूज्यां सामी जोवती रैवै तो सेठियाजी उण स्थिति नै बरदास नईं कर सकै । वै कैवै है—

नहीं मानता दो तो टांगो
लोकराज नै खूंटी ।

आजादी पछै जद रियासतां रो अेकीकरण हुयो तो माड़ै प्रतिनिधित्व रै कारण राजस्थानी उपेक्षित रैयगी अर राजस्थानी भाषा देश रै संविधान री आठवीं सूची में सामल करीजी कोनी । कवि कैवै है—

सुणो वगत रो हेलो मिनखां !
मोटी भूल सिकारो,
फेर आठवीं सूची में थे
सावळ करो सुधारो ।

'हिंदी' कविता में कवि स्पष्ट करै है कै जिकी हिंदी राजस्थानी रा बोबा चूंघर पनपी है उणसूं म्हांरो विरोध किसो ! वा तो म्हांरी बैन है अर उणरै विगसाव सारू जमनालालजी बजाज, हनुमानप्रसादजी पोद्दार, सेठ गोविंददासजी अर डा० राममनोहर लोहिया आपरी घणमोली सेवा हिंदी री भेट करी । अै सगळा राजस्थानी सपूत ई हा ।

इण पोथी में कवि रो उद्देश्य कविता रो चमत्कार कोनी, राजस्थानी री वकालत है, जिणमें कवि नै सांगोपांग सफळता मिली है । पेज बतीस है अर मोल दस रुपिया है,

पण पोथी री छपाई, आवरण अर कागद री मनोरमता देखतां मोल घणो लागै कोनी। छपाई री केई भूलां जरूर है, जिकी इती छोटी पोथी में नईं रैवणी चाहीजती ही।

कवि — कन्हैयालाल सेठिया
प्रकाशक — राजस्थानी साहित्य परिषद,
११, आर० अेन० मुकर्जी रोड़, कलकत्ता-१
मोल — दस रुपिया
पृष्ठ — बतीस

— श्रीलाल नथमलजी जोशी

जामरण-जाया

ग्रंथ पढण सूं
ग्रंथि नीं कटै
वात रा वायरा सूं
वादरा नीं फटै। (ग्रंथ)

कोरी वात में नहीं, काम में विसवास राखणिया डा० नरेंद्र भानावत राजस्थानी भाषा अर साहित्य री श्रीवृद्धि सारू जिको अभिनंदनीय सेवा-कार्य करचो है बो राजस्थान अर राजस्थानी रै इतिहास में आपरो बेजोड़ स्थान राखै है।

इयां तो आधुनिक राजस्थानी साहित्य हाल थड़ी ही करण लाग्यो है, दूजी केई प्रांतीय भाषावां रै साहित्य री दोड़ में बो घणो लारै है— आ वात खारी तो लाग सकै है, पण है खरी। पण दूजै कानी, साहित्य-सर्जकां रो उत्साह अर होसलो देखतां आ भी दीखै है कै वेगो ई आपणो ओ साहित्य भी आपरी न्यारी–न्यारी विधावां में सफळता रै शिखरां नै जा पूगसी क्यूं कै इणरी लारली साहित्य-संपदा अर इणरो शब्दभंडार अथांग अर अनुपम है। राजस्थानी नूंवी कविता रै क्षेत्र में भी बहोत कम साहित्य छप्यो है। डा० भानावत रो ओ नूंवो कविता-संग्रह इण कमी नै पूरी करण रो अेक सुंदर अर सक्षम प्रयास है।

संग्रह में इकताळीस नूंवी कवितावां है। उणांरी पैचाण कवि आपरी 'म्हारी दीठ' में करायी है, अर 'परख' करी है राजकीय महाविदयालय, अजमेर रै हिंदी विभाग रा वरिष्ठ प्राध्यापक डा. भंवरलाल जोशी।

जीवण रा विविध आयामां नै छूवता थकां प्रातिभ कवि नै थोड़ै शब्दां में घणी वात कैवण री जबरी क्षमता हासल है। तीनूं शब्द-शक्तियां माथै उणांरो सांगोपांग अधिकार है। उणांरी निराळी अभिव्यंजना-शैली रा दो-अेक नमूना ई अठै दिया जा सकै है। इण कविता में कवि आज रै आम आदमी री मानसिकता नै अेक सार्थक आकृति देवण में कोई कसर को छोडी नी—

कवि 'चेतो', 'जूझो' आदि शब्दां सूं संखनाद करै है—

उठो, ओळखो आपो थांरो
घणमोला मोटयारो !

आखरी चेतावणी रै रूप में कवि कैवै है—

सरबस जावै, सांभळो,
थांरा लांबा हाथ ।

राजस्थानी भाषा-भाषी ओजूं भी जे आपरी भाषा री मान्यता सारू प्रयत्न करै, तो वै पूरा सिमरथवान है अर बांरै खातर ओ काम दोरो कोनी ।

'परतख पीड़' में कवि कैवै है कै उणरी कविता वाग्विलास कोनी, आ

कविता मांडी रगत सूं
कही साच दो टूक ।

डी वेलेरा अेकर कैयो— आजादी या मातृभाषा मांयसूं अेक चीज चुणनी हुवै तो हूं मातृभाषा नै चुणूं । जिण लोकराज में सगळी भाषावां नै आपरो ओपतो आसण मिल्योड़ो है उणमें राजस्थानी जे टुकर-टुकर दूज्यां सामी जोवती रैवै तो सेठियाजी उण स्थिति नै बरदास नईं कर सकै । वै कैवै है—

नहीं मानता दो तो टांगो
लोकराज नै खूंटी ।

आजादी पछै जद रियासतां रो अेकीकरण हुयो तो माड़ै प्रतिनिधित्व रै कारण राजस्थानी उपेक्षित रैयगी अर राजस्थानी भाषा देश रै संविधान री आठवीं सूची में सामल करीजी कोनी । कवि कैवै है—

सुणो वगत रो हेलो मिनखां !
मोटी भूल सिकारो,
फेर आठवीं सूची में थे
सावळ करो सुधारो ।

'हिंदी' कविता में कवि स्पष्ट करै है कै जिकी हिंदी राजस्थानी रा बोबा चूंघर पनपी है उणसूं म्हांरो विरोध किसो ! बा तो म्हांरी बैन है अर उणरै विगसाव सारू जमनालालजी बजाज, हनुमानप्रसादजी पोद्दार, सेठ गोविंददासजी अर डा० राममनोहर लोहिया आपरी घणमोली सेवा हिंदी री भेट करी । अै सगळा राजस्थानी सपूत ई हा ।

इण पोथी में कवि रो उद्देश्य कविता रो चमत्कार कोनी, राजस्थानी री वकालत है, जिणमें कवि नै सांगोपांग सफळता मिली है । पेज बतीस है अर मोल दस रुपिया है,

पण पोथी री छपाई, आव्‌रण अर कागद री मनोरमता देखतां मोल घणो लागै कोनी। छपाई री केई भूलां जरूर है, जिकी इती छोटी पोथी में नईं रैव्‌णी चाहीजती ही।

कवि् — कन्हैयालाल सेठिया
प्रकाशक — राजस्थानी साहित्य परिषद,
११, आर० एन० मुकर्जी रोड़, कलकत्ता-१
मोल — दस रुपिया
पृष्ठ — बतीस

— श्रीलाल नथमलजी जोशी

जागरण-जाया

ग्रंथ पढण सूं
ग्रंथि नीं कटै
बात रा बायरा सूं
बादरा नीं फटै। (ग्रंथ)

कोरी बात में नहीं, काम में बिसव्‌ास राखणिया डा० नरेंद्र भानाव्‌त राजस्थानी भाषा अर साहित्य री श्रीवृद्धि सारू जिको अभिनंदनीय सेव्‌ा-कार्य करयो है बो राजस्थान अर राजस्थानी रै इतिहास में आपरो बेजोड़ स्थान राखै है।

इयां तो आधुनिक राजस्थानी साहित्य हाल थड़ी ही करण लाग्यो है, दूजी केई प्रांतीय भाषाव्‌ां रै साहित्य री दोड़ में बो घणो लारै है— आ बात खारी तो लाग सकै है, पण है खरी। पण दूजै कानी, साहित्य-सर्जकां रो उत्साह अर होसलो देखतां आ भी दीखै है कै वेगो ई आपणो ओ साहित्य भी आपरी न्यारी-न्यारी विधाव्‌ां में सफळता रै शिखरां नै जा पूगसी क्यूं कै इणरी लारली साहित्य-संपदा अर इणरो शब्दभंडार अथांग अर अनुपम है। राजस्थानी नूंव्‌ी कव्‌िता रै क्षेत्र में भी बहोत कम साहित्य छप्यो है। डा० भानाव्‌त रो ओ नूंव्‌ो कव्‌िता-संग्रह इण कमी नै पूरी करण रो अेक सुंदर अर सक्षम प्रयास है।

संग्रह में इकताळीस नूंव्‌ी कव्‌िताव्‌ां है। उणांरी पैचाण कवि् आपरी 'म्हारी दीठ' में करायी है, अर 'परख' करी है राजकीय महाविदयालय, अजमेर रै हिंदी विभाग रा वरिष्ठ प्राध्यापक डा. भंव्‌रलाल जोशी।

जीव्‌ण रा विवि्ध आयामां नै छूव्‌ता थकां प्रातिभ कवि् नै थोड़ै शब्दां में घणी बात कैव्‌ण री जबरी क्षमता हासल है। तीनूं शब्द-शक्तियां माथै उणांरो सांगोपांग अधिकार है। उणांरी निराळी अभिव्यंजना-शैली रा दो-अेक नमूना ई अठै दिया जा सकै है। इण कवि्ता में कवि् आज रै आम आदमी री मानसिकता नै अेक सार्थक आकृति देव्‌ण में कोई कसर को छोडी नी—

आज रो मिनख,
मापै थान-ई-थान
फाड़ै गज-ई नीं.
वींरो
नजरियो
खिण में अडावळ
खिण में कांकरो। (नजरियो)

हेत, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य जिसा शब्दां नै जुगां सूं लोग न्यारा-न्यारा रूपां में, न्यारी-न्यारी परिभाषावां में बांधणनै खस्या है, पण—

हेत री गौ
खूंटै सूं बंधर
कोनी रैवै।
बा चारा नाखणियां ईज नै
दूध
कोनी देवै।
वींनै
कूंट-कूंट
वाछड़ा दीसै। (हेत)

इण साधारण शब्दावळी में 'हेत' री सार्वजनीनता, सार्वदेशीयता, सार्वभौमिकता अर सर्वाधिगमता री जिकी असाधारण अभिव्यक्ति उतरी है बा भणन री ई नहीं, गुणन री भी चीज है।

इसी उपयोगी अर मनोरम कृति सारू इणरा कवि बधाई अर धन्यवाद रा पात्र है अर उमेद है कै बै इणी भांत सृजन-रत रैयर मां मरु-वाणी नै नित नूंवा कृति-हार पैरासी।

कवि — डा० नरेंद्र भानावत
प्रकाशक — सिद्धश्री प्रकाशन, सी—२३५ अे, दयानंद मार्ग, तिलकनगर, जयपुर
मोल — पनरै रुपिया
पृष्ठ — चौरासी

— कमला वर्मा
चोपड़ा हायर सेकेंडरी स्कूल रै कनै,
बीकानेर

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान समाचार

१. शनिवार दिनांक ३१ दिसंबर १९८३ ई० नैं संस्थान रो पैलो सालाना उछव अर स्वर्गीय श्री नरोत्तमदास स्वामी रो असीवों जयंती समारोह श्री चंद्रदान चारण री अध्यक्षता में स्थानीय आनंद निकेतन में मनायो गयो। उण अवसर माथै प्रकाशित 'वंदना' शीर्षक स्मारिका रो विमोचन करता थकां बीकानेर रा भूतपूर्व महाराजा डा० करणीसिंह कैयो कै भारतीय भाषावां में राजस्थानी रो घणो ऊंचो स्थान है। इणरै समृद्ध साहित्य अर बोलणआळां रै आंकड़ां नैं देखता हुयां राजस्थानी नैं भारतीय संविधान री आठवीं सूची में जळदी सूं जळदी सामिल करणी चाहीजै। अध्यक्ष श्री चंद्रदान चारण आपरै भाषण में स्वर्गीय नरोत्तमदास स्वामी रै व्यक्तित्व री महानता दरसायी।

रविवार दिनांक १ जनवरी १९८४ ई० नैं अेक संगोष्ठी हुयी जिणमें पीठमंत्री श्री दीनदयाल ओझा 'स्वर्गीय नरोत्तमदास स्वामी : व्यक्तित्व अर कृतित्व' विषय माथै पत्रवाचन करचो। गोष्ठी री अध्यक्षता डा० मनोहर शर्मा करी। गोष्ठी में दूजा साहित्य-रसिकां रै सागै-सागै डा० दिवाकर शर्मा, श्री सनतकुमार स्वामी, श्री रामप्रसाद सहल अर श्री कृष्णशंकर पारीक भी भाग लियो। उणीज दिन दुपारै संस्थान री साधारण सभा री बैठक हुयी जिणमें केई प्रस्ताव पास करीज्या। रात में श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी री अध्यक्षता में अेक कवि-गोष्ठी रो आयोजन हुयो जिणमें श्री धनंजय वर्मा, श्री अब्दुल वहीद 'कमल', कप्तान मोतीसिंह, श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी, डा० आनंदसिंह आदि कवियां आपरी मनोरम रचनावां रो पाठ करचो।

सोमवार दिनांक २ जनवरी नैं श्री जितेंद्रकुमार जैन री अध्यक्षता में स्व० अगरचन्द नाहटा रो स्मृति-दिवस मनायो गयो। इण अवसर माथै श्री सत्यनारायण पारीक, श्रीमती भगवती स्वामी, डा० मनोहर शर्मा, डा० दिवाकर शर्मा, श्री हजारीमल बांठिया, श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी वगैरै श्री नाहटाजी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै आपरा विचार प्रगट करचा।

२. दिनांक ९ अपरैल १९८४ ई० नैं डा० सत्यनारायण स्वामी व्यवस्थामंत्री पद सूं आपरो त्यागपत्र पेश करचो जिको स्वीकारीज्यो अर उणां री जागां श्री बैजनाथ पारीक चुणीज्या।

३. दिनांक ९ अपरैल, १९८४ ई० नैं प्रबंध समिति रो अधिवेशन हुयो जिणमें साधारण सभा नैं आ अनुशंसा करीजी कै डा० छगन मोहता नैं संस्थान रा मानद सदस्य बणाया जावै। दिनांक ९ अपरैल नैं ही साधारण सभा रै अधिवेशन में आ अनुशंसा

स्वीकारीजी अर कार्यक्रम रा दूसरा काम निपटार अधिवेशन रै अंत में पीठाधिपति द्वारा प्रस्तुत संस्थान रै संस्थापक सदस्य अर भूतपूर्व पीठाध्यक्ष श्री मुरळीधर व्यास रै निधन पर शोक-प्रस्ताव पारित हुयो नै उपस्थित सदस्यां खड़ा हुयर दो मिनट तांई मौन राखर आपरी श्रद्धांजळी दिवंगत आतमा नै अर्पित करी।

४. दिनांक ३ मई १९८४ ई० नै आखाबीज रै दिन संस्थान बीकानेर-दिवस मनायो। इणरी अध्यक्षता श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी करी। श्री सत्यनारायण पारीक इण अवसर माथै विशेष अतिथि हा। इण मौकै माथै उपस्थित महानुभावां में श्री सनत्कुमार स्वामी आपरो पत्रवाचन करयो। उणां बीकानेर रै इतिहास री केई अनिर्णीत बातां रो जिकर करयो अर अै मुदा उठाया— (क) बीकानेर री स्थापना आखाबीज नै करीजी इणरो लेख अैतिहासिक अभिलेखां अर शिलालेखां में कोनी मिलै। (ख) बीकाजी री जन्मतिथि कांई है? (ग) बीकाजी जोधपुर सूं कद चाल्या? इण बाबत इतिहासकार अेकमत कोनी। ओ बरस वि० सं० १५२२ है या १५२७ अथवा इणां रै बीच कोई अेक? (घ) 'जय जंगलधर बादशाह' पदवी रो अैतिहासिक आधार कांई है? (ङ) बीकाजी जोधाजी रा टीकाई पुत्र हा कांई? पत्रवाचन रै पछै श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी, श्री सत्यनारायण पारीक, श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी अर श्री पुरुषोत्तमलाल पारीक वगैरै आपरा विचार प्रगट करया। ओ निश्चय करयो कै श्री सनत्कुमार स्वामी जिका मुदा उठाया है उणां पर विद्वान् लोग विचार करनै आगली आखाबीज माथै आपरा निष्कर्ष उण अवसर पर हुवणआळी परिषद में राखै।

५. दिनांक १२ जून १९८४ ई० नै संस्थान री प्रबंध समिति री बैठक पीठाध्यक्ष डा० गिरिजाशंकर शर्मा री अध्यक्षता में हुयी। उणमें 'राजस्थानी गंगा' में प्रकाशित हुवणआळा विज्ञापनां री दरां तय करीजी जिकी इण भांत है—

(१) चौथो आवरण पृष्ठ— ७५०) रु०
(२) तीसरो आवरण पृष्ठ— ५००) रु०
(३) साधारण पूरो पृष्ठ— ३००) रु०
(४) साधारण आधो पृष्ठ— १५०) रु०
(५) साधारण चौथाई पृष्ठ— ८०) रु०

पत्रिका रो आकार २०"×२६"/८ तय करयो गयो अर ओ निश्चय करीज्यो कै 'अवतरण' री तीन सौ प्रतियां छपवायी जावै।

६. दिनांक ५ जुलाई १९८४ ई० नै पीठाधिपति राजस्थानी रै ख्यातनामा कवि स्व० श्री गिरधारीसिंह पड़िहार रै जन्मदिवस माथै उणांरी समाधि पर पुष्पार्चन करयो अर कवि नै आपरी श्रद्धांजळी अर्पित करी।

७. दिनांक १३ अगस्त १९८४ ई० नै स्वर्गीय श्री नरोत्तमदास स्वामी री तीसरी बरसी रो आयोजन करयो गयो जिण अवसर माथै प्रमुख उपस्थित महानुभावां उणांनै भावभीना शब्दां में आपरी श्रद्धांजळी अर्पित करी। — पीठमंत्री

संपादकीय

१. जद दिनांक ४-४-१९७४ ई० नै राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान री विधिवत संस्थापना हुयी तो संस्थान में जिका विभाग राख्या गया उणांमें अेक प्रमुख विभाग हो मुखपत्रिका-विभाग। उण विभाग रा संयोजक डा० नरेंद्र भानावत अर सह-संयोजक डा० सत्यनारायण स्वामी चुणीज्या। इण संस्थान रा प्राण-प्रतिष्ठाता अर आपणी राजस्थानी गंगा' रा भगीरथ उण वगत रा पीठाधिपति स्व० श्री नरोत्तमदास स्वामी हा। उणांरी ज्ञानपीठ संस्थान सूं अेक त्रैमासिक मुखपत्रिका निकाळण री हार्दिक कामना ही। उणनै मूर्त रूप देवण सारू उणां जी-तोड़ कोसीस करी। बीकानेर रै जिलाधीश अेवं जिला-दंडनायक रै कार्यालय रै मारफत उणांरै निर्देश सूं संस्थान रा तत्कालीन प्रधान-मंत्री (पीठमंत्री) निवर्तमान कप्तान मोतीसिंह भारत रै समाचारपत्रां रै पंजीयक रै दफतर सूं व्यक्तिगत रूप सूं कोसीस करनै पत्रिका रै 'राजस्थानी गंगा' नांव री स्वीकृति प्राप्त करी। केई कारणां सूं वगतसर पत्रिका-प्रकाशन रै खातर जिला-दंडनायक रै दफतर में डिक्लेरेशन दाखल को करीज्यो नी।

बाद में संस्थान रै पीठाधिपति स्वामीजी रै अस्वस्थ हुय जावण सूं उणां पत्रिका-प्रकाशन रो विचार छोड दियो अर पोथ्यां रै प्रकाशन माथै जोर देवण रो निसचै करचो। इणरो कारण ओ हो कै बै पत्रिका नै बहोत ही सुंदर ढंग सूं संपादित करनै प्रकाशित करणी चावता हा। रचनावां में बै भाषा री अेकरूपता रा कायल अर हामी हा नै उणांरो राजस्थानी री स्वीकृत वर्तनी अर जोड़णी रै मुजब हुवणो अनिवार्य मानता हा। उणांरो मापदंड घणो ऊंचो हो। स्वास्थ्य ई उणांरो कोई खास आछो नहीं हो, अर उणांरो शरीर इण मुसकल काम नै, जिणमें मोकळी मेहनत री जरूरत ही, करण री इजाजत को देवतो नी। छेकड़ मुखपत्रिका रै प्रकाशन री लालसा मन में ई लेयर बै अणंत पथ रा पथिक हुयग्या।

पुनर्गठित राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान इणनै आपरो फरज मानर उण स्वर्गीय आत्मा री कामना-पूर्ति खातर 'राजस्थानी गंगा' रै प्रकाशन रो संकळप लियो अर मुखपत्रिका अर समन्वय विभाग रै वर्तमान संयोजक डा० सत्यनारायण स्वामी (पुस्तका-ध्यक्ष, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) नै निर्देश दियो कै बै 'राजस्थानी गंगा' रै संपादन खातर हर-संभव कोसीस करै। उणांनै स्वामीजी रै निर्देशन में इण तरै रो काम करण रो चोखो अनुभव है। राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अबै राजस्थानी

भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी) री मुखपत्रिका 'जागती जोत' रै पैलड़ा दो अंकां रा बै संपादक रैय चुक्या है जद श्री नरोत्तमदास स्वामी उणरा प्रधान संपादक हा ।

आपरै गुरुभाई डा० नरेंद्र भानावत (अेसोशिअेट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) री प्रधानता में डा० सत्यनारायण स्वामी इण काम में जुटग्या अर कोसीस करनै राजस्थानी रै नामी लेखकां सूं उणांरी रचनावां भेळी करी । फळसरूप सुधी पाठकां रै सामै 'राजस्थानी गंगा' रो ओ श्रीगणेश 'अवतरण' नांव सूं आज राजस्थानी रा समर्थ समुद्धारक अेवं अग्रगण्य अर विचक्षण विद्वान् स्व० नरोत्तमदास स्वामी री इक्यासीवीं जयंती (२ जनवरी १९८५ ई०) माथै प्रस्तुत करचो जावै है । ओ किसोक बण पड़चो है आ तो विद्वानां सूं समीक्षात्मक संमतियां प्राप्त हुयां ई मालम पड़सी; हां, हूं आ जरूर कैय सकूं हूं कै दोनां संपादकां इणनै सर्वांग सुंदर वणावण में आपरी तरफ सूं कोई कसर को छोडी नी ।

—पुरुषोत्तमदास स्वामी

२. 'राजस्थानी गंगा' रा पाठक बीकानेर रा प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता स्व० श्री नाथूराम खड़गावत रै नांव सूं भली भांत परिचित हुसी । राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान री वडेरी 'राजस्थानी साहित्य-पीठ' रै तत्वावधान में उगणीसवैं सईकै रै चौथै दशक में श्री गुणप्रकाशक सज्जनालय री छत माथै प्रायकर साहित्य-गोष्ठियां हुया करती ही जिणां में उपस्थित महानुभाव आप-आपरी नूंई राजस्थानी रचना सुणाया करता । स्वर्गीय खड़गावतजी री इसी ई अेक दुर्लभ रचना इण 'अवतरण' में प्रकाशित हुयी है ।

रचनावां तो और ई घणी आछी-आछी आयी है पण अनेकानेक कारणां सूं चावता थकां भी केई प्रमुख लेखकां री रचनावां इण 'अवतरण' में आवण सूं वंचगी, जिणांरा नांव है— स्व० श्री अगरचंद नाहटा, आ० बदरीप्रसाद साकरिया, श्री खेताराम खत्री, डा० ब्रजमोहन जावळिया, डा० दिवाकर शर्मा, श्री कृष्णशंकर पारीक, श्री रामनिवास शर्मा अर श्रीमती उर्मिला शर्मा । 'राजस्थानी गंगा' में आगली बार इसी रचनावां नै देवण री पूरी चेस्टा रैसी ।

'राजस्थानी गंगा' रै इण 'अवतरण' नै त्यार करण में स्वर्गीय गुरुदेव स्वामीजी री पावन आत्मा री प्रच्छन्न प्रेरणा म्हांनै पळ-प्रतिपळ मिलती रैयी है । इण प्रयास सूं उण पूतात्मा नै जरूर शांति मिलसी, इसो भरोसो है । दूजै, कृती रचनाकारां रो सहयोग भी भरपूर वरस्यो है, अर इण सारू इणरै सगळा लेखकां रो आभार मानणो म्हांरो पैलो फरज है । पण वात अठै ई पूरी कोनी हुवै है । रचनावां नै उपलब्ध करावण में, चित्र वणावण में, चित्र उपलब्ध करावण में, रचनावां नै सजावण में अर और-और वातां में जिका लोगां म्हांनै आपरो घणमोलो सहयोग दियो है उण सारू उणांरा खाली नांव गिणायां ई पार को पड़ै नी, उणांरो हृदय सूं आभार ई मानां हां, अर आस राखां हां कै आगै भी उणांरो ओ सहयोग म्हांनै इणी अनुग्रह अर सौहार्द रै सागै बराबर

मिलतो रैसी । अै महानुभाव है—डा० मनोहर शर्मा, श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी, प्रा० पंकज गोस्वामी, स्वर्गीय श्री सूर्यकरण पारीक रा सुपुत्र श्री कृष्णशंकर पारीक, स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह तंवर री सुपुत्री श्रीमती सुशीलकंवरी, संगीत भारती रा प्रिंसिपल डा० मुरारी शर्मा अर सांखला प्रिंटर्स रा कुशळ संचालक भाई श्री दीपचंद सांखला ।

संस्थान रा पीठाधिपति श्रीयुत पुरुषोत्तमदास स्वामी रो आभार किण शब्दां में दरसावां ? बै तो 'ज्ञानपीठ' अर 'राजस्थानी गंगा' री जीवण-जड़ी है ! ईश्वर सूं कामना करां हां के श्रद्धेय स्वामीजी नै वणी लांबी ऊमर नै सांतरो स्वास्थ्य प्राप्त हुवै जिणसूं वै मां राजस्थान-भारती री मनचायी सेवा कर सकै ।

आप सगळा 'राजस्थानी गंगा रा रसिया' पाठकां सारू कृतज्ञता जतावणी कियां भूलां जिकां सरू सूं लेयर ठेट तांई इणरो रसास्वादन करनै म्हांरो उत्साह वधायो है । आपरी आंतरिक संमतियां री प्रबळ प्रतीक्षा रैसी ।

और अंत में इतो ही—

> धावतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
> हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ।।

—नरेंद्र भानावत
सत्यनारायण स्वामी

विशेष ध्यातव्य

१. 'राजस्थानी गंगा' रै आगामी 'प्रवाह,' 'धारा' अर 'लहर' में राजस्थानी री विविध विधावां पर रचनावां रै अतिरिक्त स्व० नरोत्तमदासजी स्वामी रो अेक हाल तांई अप्रकाशित ग्रंथ आप सुधी पाठकां रै संमुख राख्यो जावण रो प्रयास करघो जासी ।

२. कोई जरूरी कोनी कै संपादक रा विचार आपरै विचारां सूं मेळ खावै ही । संपादक-मंडळ रै निर्णय मुजब आपरी छपणजोग सामग्री 'राजस्थानी गंगा' में पूरी चेस्टा रै सागै छपसी ।

संपादक

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, वीकानेर

रो दि० ३१ दिसंबर १९८३ नै प्रकाशित

पहलड़ो प्रकाशन

वंदना (स्मारिका)

प्रमुख आकर्षण

१. राजस्थानी त्रिमूर्ति : अेक समरण— मोहिल, पारीक अेवं स्वामी

२. राजस्थानी कलमधणी— श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी

३. धरती माता रो जलम अेवं काळगणना— श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी

संमति

तीनूं संपादक डा० मनोहर शर्मा, श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी अर डा० सत्यनारायण स्वामी विशेष वधाई रा पात्र है क्यूंकै संस्थान रा तीनूं उद्देश्य (१) राजस्थानी भाषा में अनुसंधान (२) नवीन साहित्य रो निर्माण (३) संवैधानिक मान्यता, म्हारै 'नैणसी' सूं सांगोपांग मेळ खावै। स्मारिका डबल क्राउन, अेक–आठ आकार में, घणी मोटी, सोवणी अर अेकदम शुद्ध छप्योड़ी है जिणमें स्व० नरोत्तमदासजी स्वामी री फोटू अर उणांरी कविता 'मौत नहीं जीवण रो अवसाण' अैतिहासिक महत्व री है तथा दूजा लिखारा डा० मनोहर शर्मा, श्रीलालजी जोशी, नानूरामजी संस्कर्ता, डा० सत्यनारायण स्वामी, पुरुषोत्तमदासजी स्वामी, डा० लक्ष्मी कमल, श्री दीनदयाल ओझा अेवं डा० गिरिजाशंकर शर्मा री विद्वत्तापूर्ण रचनावां संग्रहीत है। मोल ५) रु० अत्यंत न्यून है।

—अंबू शर्मा, संपादक 'नैणसी'
१, काशीमित्र घाट स्ट्रीट, कलकत्ता–३

संपर्क

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान

वसुधा, अमरसिंहपुरा, २४ गजनेर रोड, वीकानेर

आपरी प्रति मंगावण सारू आज ही लिखो।

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, बीकानेर री

प्रथम प्रकाशन

वंदना (स्मारिका), १९८४

संमतियां

१. श्री कन्हैयालाल सेठिया, सेठिया ट्रेडिंग कंपनी, मैंगो लेन, कलकत्ता—

'वंदना' री पड़त मिली। पढर हरख हुयो। 'राजस्थानी त्रिमूर्ति' निबंध घणो दाय आयो।

२. श्री मोहनलाल चोखाणी, २१, वाराणसीघोष स्ट्रीट, कलकत्ता—

इण छोटै सै पत्र में मोकळी ज्ञानवर्धक वातां मनै मिली जिणांसूं चित में संतोष हुयो।

राजस्थानी भाषा रा छिप्योड़ा अनमोल मोती, आप उण धरती रा सपूतां नै सामनै लावण रो जो प्रयास कर रैया हो उणरी जिती सराहना करी जावै, थोड़ी है।

३. डा० महेंद्र भानावत, ३५२ श्रीकृष्णपुरा, उदयपुर—

'वंदना' सूं राजस्थानी ज्ञानपीठ री स्थापना री जाणकारी अर कामकाज री रूप-रेखा रो पतो लाग्यो। आप सगळां नै म्हारी अंत: सूं वधाई कै आप राजस्थानी भाषा रै मारफत ओ सगळो बीड़ो उठायो। जिकै काम ढोल पिटायां नीं करया जा सक्या, आप छानामाना रैयर करोला।

४. श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, सिंघरावट, सीकर—

स्मारिका 'वंदना' मिली। इण सांतरै प्रकाशन सारू सगळा साथियां नै वधाई।

५. श्री अन्नाराम सुदामा, गंगाशहर, बीकानेर—

'वंदना' स्मारिका मिली। वडी दाय आयी। श्रद्धेय स्वामीजी री आकांक्षावां नै जीती- जागती राखण खातर जिको प्रारूप आप लोगां त्यार करचो है बो सरावण जोग है।

६. श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' सालै री होळी, बीकानेर—

'वंदना' मिली। आ स्मारिका घणी ई भणनै जोग है। आ ही स्वामीजी रै प्रति साची श्रद्धांजळी लागै। विसवास करूं हूं कै आगै भी थे सांतरा प्रकाशन काढसो।

७. डा० दिवाकर शर्मा, संपादक 'विश्वंभरा', हिंदी विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, बीकानेर—

'वंदना' अेक उपयोगी तथा सराहनीय प्रयास है। संपूर्ण स्मारिका राजस्थानी भाषा में है, जो इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इसमें अनेक पुराने साहित्य- साधकों का गुण- कीर्तन किया गया है, जो बड़ा प्रेरणादायक है।